अमित खान-हिंदी पल्प फिक्शन का बेहद मशहूर और सबसे युवा चेहरा
hindustantimes

गॉडफादर

का पहला तेजरफ्तार उपन्यास

बवंडर

एक रेप पीड़िता की लोमहर्षक दास्तान
गजब क्लाइमेक्स

BEST SELLER

अमित खान

की लौह लेखनी का
शानदार नमूना



हिन्दी उपन्यासों के

बेताज बादशाह

अमित खान

की लोह-लेखनी

का चमत्कार

गॉडफादर

सीरीज का पहला उपन्यास

बवंडर

वो रेप पीड़िता थी, जो गोवा अंडरवर्ल्ड के 3 बड़े दादाओं की हवस का शिकार बन गयी । उसके बाद गॉडफादर ने उन तीनों दादाओं को जिस बेरहमी से सज़ा दी, वह सबक था इंसानी समाज के लिये । उनके मर्डर चौंका देने वाले थे । गोवा अंडरवर्ल्ड के बादशाह 'गॉडफादर' की ऐसी गज़ब मर्डर प्लानिंग्स, जो आपको रोमांच से भर देंगी ।

इस उपन्यास का अंत पहले न पढ़ें और उपन्यास पढ़ने के बाद किसी और को भी इसके अंत से अवगत न करायें ।

अमित खान की लौह लेखनी का शानदार नमूना ।

एक रेप पीड़िता की लोमहर्षक दास्तान ।

बुककैफे
पब्लिकेशन

बवंडर

बाबू नाईक, शंकरराव और बैंजो ।

वे तीन दोस्त थे। तीनों गोवा अंडरवर्ल्ड के बड़े दादा। तीनों अव्वल दर्जे के हरामी। तीनों ऐसे अय्याश कि किसी भी जवान, ख़ूबसूरत लड़की को देखते ही लार घुटनों-घुटनों तक टपकने लगती थी।

लेकिन तमाम बदमाशियों, तमाम हरामपंतियों के बावजूद एक अच्छी बात भी थी उन तीनों में- वह जो खाते, आपस में मिल-बाँटकर खाते। वह तमाम गोवा के लिए गुंडे थे, दादा थे, परन्तु दोस्ती के नाम पर एक- बिल्कुल बंद और मजबूत मुट्ठी की तरह।

बाबू नाईक, वह लगभग पैंतीस-छत्तीस वर्ष का सांड जैसे जिस्म का मालिक था। रंग एकदम स्याह और तपा हुआ था। कान बड़े-बड़े। सिर बिल्कुल गंजा। बाबू नाईक का गोवा में फेनी (गोवा की 400 साल से प्रसिद्ध पारम्परिक शराब) का बहुत बड़ा कारोबार था। दर्जनों की तादाद में पारम्परिक शराब के बड़े-बड़े ठीये थे। शराब की भट्टियाँ थीं। दूसरे शहरों में भी फेनी की सप्लाई का व्यापक बंदोबस्त था। बख्तावर सिंह के बाद अगर गोवा में फेनी (पारम्परिक शराब) का किसी का सबसे बड़ा कारोबार था, तो वह था- बाबू नाईक, सिर्फ और सिर्फ बाबू नाईक। इसके अलावा बाबू नाईक की गोवा अंडरवर्ल्ड में भी अच्छी -खासी घुसपैठ थी। अंडरवर्ल्ड के बड़े-बड़े दादा बाबू नाईक को सलाम ठोकते थे।

शंकरराव, वो भी बाबू नाईक से किसी हालत में कम न था।

शंकरराव की उम्र बत्तीस साल थी। वह कद में बाबू नाईक से थोड़ा लम्बा था। अलबत्ता उसका शरीर धनुष की तरह तना हुआ और पतला था। बाल हिप्पियों की

तरह बड़े-बड़े थे । शंकरराव का जिस्मफरोशी का बहुत बड़ा कारोबार था और इस मौज-मस्ती वाले गोवा में उसके लगभग डेढ़ सौ ब्रोथेल (वेश्यागृह) थे । हर फेमस बीच के नज़दीक उसके ब्रोथेल थे । एक-एक वेश्यागृह में दस-दस वेश्यायें थीं । यानी तकरीबन डेढ़ हजार वेश्यायें शंकरराव के वास्ते काम करती थीं और उनकी डेली की इनकम इतनी ज्यादा थी कि बड़े-बड़े मिल मालिकों को भी शायद प्रतिदिन उतनी आमदनी न हो । इसके अलावा शंकरराव गोवा में चोरी-छिपे ड्रग्स का कारोबार भी करता था । क्योंकि बख्तावर सिंह जब से गोवा अंडरवर्ल्ड का बेताज बादशाह बना था, तबसे उसने गोवा में ड्रग्स के कारोबार पर प्रतिबन्ध लगा दिया था । अब जहाँ जो नशीले पदार्थ बिकते, चोरी-छिपे बिकते और भारी कीमतों पर बिकते । इसलिए शंकरराव को ड्रग्स के उस कारोबार में भी मोटा मुनाफा हो रहा था ।

बैंजो, यह था उस खतरनाक बदमाश मंडली का तीसरा कप्तान । बैंजो तीनों में सबसे कम उम्र का था । उसकी उम्र सत्ताइस-अट्ठाइस साल थी । परन्तु देखने में ऐसा लगता था, जैसे वो अट्ठारह-उन्नीस साल का स्कूल का कोई छोकरा हो । उसके कम उम्र का लगने की ख़ास वजह यह थी कि उसके अभी-तक दाढ़ी मूछें नहीं आयी थीं । बैंजो वेस्टर्न म्यूजिक का दीवाना था और हमेशा बड़ी कलरफुल गोवानी स्टाइल की जिन्स-टीशर्ट पहने रहता था ।

बैंजों एक बहुत खतरनाक चाकूबाज था और वह बेशुमार हत्याएं कर चुका था । आज गोवा अंडरवर्ल्ड में बैंजो के नाम की धाक थी । बड़े-बड़े दादा बैंजो के गुस्से और उसके चाकू से थर्राते थे । इसके अलावा बैंजो, बाबू

नाईक और शंकरराव के कारोबार में तीस-तीस परसेंट का पार्टनर भी था। इसी कारण आमदनी का भी बैंजो के पास एक बड़ा जरिया था।

□□□

तीनों दोस्त आज की तारीख में खुश थे।

उन तीनों की दोस्ती दस साल पुरानी थी।

दस साल पहले वे तीनों पहली बार गोवा के डोनापाला बीच पर मिले थे। बैंजो गोवा का ही रहने वाला था, जबकि बाबू नाईक और शंकरराव अलग-अलग शहरों से गोवा में अपनी किस्मत आजमाने आये थे।

लेकिन तब एक बात तीनों में समान थी, तीनों फक्कड़ थे। तीनों पाई-पाई को मोहताज। परन्तु अपनी किस्मत चमकाने के लिए तीनों ही कुछ भी करने को तैयार थे।

तीनों मिले। फिर दोस्त बने। उसके बाद उन्होंने मेहनत, लगन और दिमाग के बलबूते पर बड़े-बड़े दांव खेले तथा देखते-ही-देखते पहले लखपति और फिर करोड़पति बन गए।

बेशुमार दौलत आने के साथ-साथ उनकी अय्याशियों में भी बढ़ोत्तरी हुई।

अब तक वह तीनों एक साथ मिलकर कितनी लड़कियों को खराब कर चुके थे, इसका हिसाब उन तीनों में से किसी के पास न था।

परन्तु आज तक कोई भी लड़की उनके खिलाफ चूं तक न कर सकी।

चूं करती भी कैसे, क्योंकि वे तीनों लड़की को खराब करने के बाद उसे इस काबिल ही नहीं छोड़ते थे कि वह चूं करे। तुरंत उसका पार्सल बुक कर देते थे।

तीनों ने नियम बना रखा था- गवाह मत छोड़ो ।

गवाह कैसा भी हो, उसका मरना जरूरी है ।

और अपने इसी नियम की बदौलत आज तक कभी कोई उनके खिलाफ चूं तक न कर सका । यहाँ तक कि गोवा में पिछले दस वर्षों में उन्होंने बेपनाह काण्ड कर डाले थे, लेकिन आज तक एक भी रिपोर्ट गोवा में किसी पुलिस स्टेशन में उनके खिलाफ दर्ज नहीं हुई ।

ऐसे थे वे तीनों ।

अंडरवर्ल्ड के बड़े दादा भी और अट्ठारह-उन्नीस साल की लड़कियों को देखकर लार टपकाने वाले अय्याश भी ।

□□□

शाम का वक्त था । बैंजो अपने दफ्तर में बैठा था और बोर हो रहा था ।

बाबू नाईक एक घंटे पहले ही दफ्तर से जा चुका था । वो बैंजो से कहकर गया था कि वह महीने भर की 'कलेक्शन' का हिसाब-किताब देखे तथा पेमेंट संभाले ।

दरअसल आज महीने की दस तारीख थी । दस तारीख को उन लोगों के गोवा में जितने भी शराब के ठीये थे, वहां पर हर जगह से पेमेंट आती थी ।

चार को तमाम ठीयों से पेमेंट आ चुकी थी ।

इस समय उनका चीफ अकाउंटेंट और कैशियर रोशनलाल नोटों के बड़े-बड़े बंडल बना रहा था और साथ ही एक रजिस्टर में लिखता जा रहा था कि किस ठीये से कितनी धनराशि प्राप्त हुई ।

पूरी रकम का टोटल करके रोशनलाल देख चुका था । हिसाब-किताब बिल्कुल ठीक था ।

"मालूम है साहब ।" रोशनलाल सफाई देते हुए बोला- "दरअसल आज पेमेंट वसूली का काम चार बजे तक चला जबकि पहले तीन बजे ही निपट जाता था । इसलिए थोड़ी देर हो रही है ।"

"कितनी देर और लगेगी ?"

"बस दस मिनट और साहब ! अभी सारा रोकड़ा लेकर आपके पास आता हूं ।"

"ठीक है । हाथ जरा जल्दी-जल्दी चलाओ । मुझे कहीं जाना भी है ।"

"ओके साहब !"

"और शराब की एक क्रेट मेरी कार में रखवा दी थी ?"

"जी साहब ! वह तो स्टाफ की छुट्टी होने से पहले ही मैंने रखवा दी थी । रघु से बोल दिया था ।"

बैंजो ने रिसीवर रख दिया ।

उसने टाइम पास करने के लिए सिगरेट सुलगा ली थी और अब वह कुर्सी पर आगे-पीछे झूलने लगा था । कभी-कभी उसकी दृष्टि केबिन में लगे शीशे की तरफ भी चली जाती थी, जिसमें से रोशनलाल साफ-साफ दिखाई देता था ।

वह पुन: पहले की तरह ही बड़ी जल्दी-जल्दी काम समाप्त करने में जुटा था ।

तभी एक घटना घटी । बैंजो के देखते ही देखते दफ्तर का मुख्य द्वार खुला और फिर एक लड़की ने अंदर कदम रखा ।

बैंजो तुरंत सिगरेट पीना भूल गया । आगे-पीछे झूलती उसकी कुर्सी को जैसे तुरंत ब्रेक लग गए ।

लड़की की उम्र मुश्किल से अट्ठारह साल थी । उसका कद खूब ऊंचा था और नाक-नक्श तीखे तथा साफ-सुथरे थे । इस समय वो सजी हुई भी खूब थी और चलती हुई यूं लग रही थी, जैसे कोई शाहजादी चल रही थी ।

लड़की रोशनलाल की टेबल के सामने आकर खड़ी हो गई ।

"त...तुम ?" रोशनलाल भी उसे देखते ही जोर से चौंका- "तुम यहाँ क्या करने आई हो ?"

लड़की का नाम अंजली था और वह रोशनलाल की बेटी थी ।

"मैं अपनी सहेली की बर्थ डे पार्टी में से आ रही हूं ।" अंजली बोली ।

"तो क्या हुआ, तुम्हें सीधे घर जाना चाहिए था । यहां आने का क्या मतलब है ?"

"आप भूल रहे हैं डैडी !" अंजली बोली- "आपने ही सुबह मुझसे बोला था कि पार्टी से लौटते समय यहां आकर आपसे घर की चाबी लेते जाऊं, क्योंकि आज दस तारीख है और आपको दफ्तर से लौटने में देर होगी । वैसे भी पार्टी से सीधे घर कैसे जा सकती हूं, घर पर तो ताला पड़ा है ।"

रोशनलाल ने अपना सिर पकड़ लिया ।

क्या हो गया था उसे ?

क्या हो गया था उसकी अक्ल को ?

तभी रोशनलाल की दृष्टि केबिन की तरफ उठी । बैंजो केबिन के शीशे में से उसकी बेटी को देख रहा था । लेकिन रोशनलाल की दृष्टि जैसे ही उससे टकराई, वह तुरंत हकबकाकर दूसरी ओर देखने लगा और सिगरेट के लंबे-लंबे काश लेने लगा ।

रोशनलाल ने फौरन अपनी जैकेट घर की चाबी निकाली तथा अंजली की तरफ बढ़ाई- "ले, चाबी ले और जल्दी जा यहाँ से।"

"आप तो मुझे भगा रहे हैं डैडी!"

"हां, भगा ही रहा हूं।" रोशनलाल झुंझलाया- "क्योंकि तुझे यहां बुलाकर मैंने बहुत बड़ी गलती की है।"

"ऐसी भी क्या बात हो गई?"

"तू नहीं समझेगी, तू जा।"

"आपका काम कितनी देर में खत्म हो जाएगा?" अंजली ने पूछा।

"बस दस मिनट में खत्म होने वाला है।"

"तो फिर मैं भी यहीं बैठ जाती हूं।" अंजली बोली- "दस मिनट बाद मैं भी आपके साथ स्कूटर पर ही चलूंगी। इससे मैं भी परेशानी से बच जाऊंगी।"

"ना, तू अभी जा। रोशनलाल कभी अंजली को तो कभी केबिन के शीशे की तरफ देख रहा था- "मुझे रास्ते में कुछ जरूरी काम है। मैं रुकता हुआ जाऊंगा और अब कोई सवाल नहीं, कोई बहस नहीं। बस, तू जा।"

अंजली ने बड़ी हैरानी से अपने पिता की तरफ देखा तथा फिर चेहरे पर ढेर सारे अचरज के भाव लिए दफ्तर से बाहर निकल गयी।

उसके जाते ही रोशनलाल ने यूं संतोष की सांस ली, जैसे कोई खतरा आते-आते टल गया था। फिर वो पुन: पहले की तरह ही जल्दी-जल्दी काम निपटाने में मशगूल हो गया।

□□□

लेकिन रोशनलाल को जिस बात का खतरा था, उस खतरे की घंटी बज चुकी थी ।

केबिन में बैठे बैंजो की आँखों के गिर्द कभी अंजली की टांगें घूम रही थीं, कभी कमर तो कभी सुन्दर सलोना मुखड़ा । वो बैठा-बैठा रोशनलाल को कोस रहा था कि वह बुड्ढा उस वक्त वहां क्यों था । काश, तब वो वहां अकेला होता, बैंजो ने सोचा । तब तो वो उस चमकदार मछली को एकदम से दबोचता और फिर फिट करके ही छोड़ता ।

बैंजो उसके हसीन ख्यालों में ही खोया हुआ था कि तभी रोशनलाल केबिन का दरवाजा खोलकर अंदर आ गया ।

वह अपने हाथों में नोटों के बड़े-बड़े बंडलों से भरी एक संदूक जैसी पेटी उठाये था । रोशनलाल ने वह पेटी टेबल पर रखी तो बैंजो का ध्यान भंग हुआ ।

"काम हो गया ?" बैंजो बोला ।

"हाँ साहब !" रोशनलाल की गर्दन दायें-बायें हिली- "सारा काम हो गया ।"

"कुल कितने की कलेक्शन हुई आज ?"

"छप्पन लाख चौहत्तर हजार रुपये की कलेक्शन हुई साहब ! यह सारे हिसाब की लिस्ट है ।" रोशनलाल ने पेटी में से एक लिस्ट निकालकर बैंजो के सामने रखी-"इसमें तमाम ठीयों के नाम लिखे हैं और यह भी लिखा है कि किस ठीये से कितना-कितना पैसा कलेक्ट हुआ ।

बैंजो ने लिस्ट पर एक सरसरी-सी दृष्टि डाली । इस वक्त उसे फ़ौरन कहीं जाने की जल्दी हो रही थी ।

"यह कितने बण्डल हैं ?" फिर बैंजो ने नोटों की तरफ इशारा किया ।

“सत्तावन बण्डल हैं साहब । छप्पन बण्डल एक-एक लाख के । और एक छोटा बण्डल चौहत्तर हजार का ।”

“बैंजो ने नोटों के बंडलों से भरी वो पेटी टेबल पर ही पलट ली । फिर वो बण्डल गिनने लगा ।”

सत्तावन बण्डल ही थे ।

बण्डल गिनने के बाद बैंजो ने केबिन की दीवार में फीट लोहे के एक बड़ी कॉम्बीनेशन नम्बर वाली सेफ खोली और सारे बण्डल जल्दी-जल्दी भूसे की तरह उस सेफ में भर दिए ।

“आज एक ठीये से कलेक्शन नहीं हो सकी साहब !”

“किस ठीये से ?” बैंजो सेफ बन्द करता हुआ चौंका ।

“चास्कर वाले ठीये से । चास्कर का फोन आया था साहब ! वह बोला था कि वो पेमेंट कल देगा ।”

“देट बास्टर्ड ! तुमने झाड़ा नहीं साले को ?” बैंजो गुर्रा पड़ा- “डांट नहीं पिलाई ? उसे बताया नहीं कि कलेक्शन की तारीख दस है ?”

“मैंने सब-कुछ कहा साहब ! खूब गरम भी हुआ, लेकिन चास्कर इस बात पर अड़ रहा था कि पेमेंट कल आएगी ।”

“ठीक है । जब यह चास्कर का बच्चा कल आए तो उसे बाबू नाईक के पास भेजना । वो उसके नट-बोल्ट टाइट करेगा ।”

“ओके साहब ! मैं ऐसा ही करूंगा अब मैं जाऊं ?”

“हां, जाओ ।” उसी पल बैंजो के दिमाग में एकाएक तेजी से कुछ कौंधा- “सुनो रोशनलाल !”

दरवाजे की तरफ पलटते रोशनलाल के कदम ठीठक गये- “क्या हुआ साहब ?”

हरगिज भी नहीं । समाज के भेदियों की गंदी नजर लगने का खतरा रहता है ।”

“ज..जैसे ही कोई अच्छा लड़का मिलेगा, मैं अंजली की शादी कर दूंगा । अब मैं जाऊं साहब ! मुझे घर जाने को देर हो रही है ।”

“हाँ, जाओ । मुझे भी फ़ौरन कहीं पहुँचना है ।”

बैंजो से इजाजत मिलते ही रोशनलाल बड़ी तेजी से केबिन का दरवाजा खोलकर बाहर निकल गया ।

बैंजो भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकला ।

□□□

थोड़ी ही देर बाद बैंजो की कार पणजी के सबब की तरफ उड़ी चली जा रही थी । ओलिवर सीन का मशहूर साँग “डेविल इन ब्लू जीन्स” उसकी कार के स्टीरियो पर एकदम हाई वॉल्यूम पर बज रहा था ।

डोनापाला चर्च से होते हुए उसकी कार ने लेफ्ट टर्न लिया और जल्द ही वो गोवा के मशहूर ‘डोनापाला बीच’ पर जा पहुँचा ।

डोनापाला बीच पर एक बड़ा खूबसूरत बंगला था । उस बंगले के मालिक वह तीनों थे, बाबू नाईक भी, शंकरराव भी और बैंजो भी । दरअसल तीनों ने वह बंगला अपनी दोस्ती की यादगार के तौर पर लिया था । क्योंकि कभी उसी डोनापाला बीच पर वह तीनों पहली मर्तबा मिले थे ।

उन तीनों को जब भी अपनी दोस्ती का जश्न मनाना होता, तो उसी बंगले पर इकट्ठे होते ।

आज दस तारीख थी और उन तीनों के बीच फिक्स हुआ था कि वह आज रात फिर उसी बंगले पर मिलेंगे ।

खून एकाएक रोशनलाल की कनपटी पर बुरी तरह ठोकर मारने लगा । गुस्से से उसकी मुट्ठियाँ भिंच गयीं । जितने वाहियात ढंग से बैंजो ने यह बात कही थी, अगर उसकी जगह किसी और ने कही होती तो अब तक रोशनलाल उसके चार-पांच झापड़ कसकर जमा भी चुका होता ।

"अ..अंजली मेरी बेटी नहीं है ।" रोशनलाल बामुश्किल अपने गुस्से पर काबू पाता हुआ बोला- "वो कमला के पहले पति से है । जब मेरी कमला से शादी हुई, तब वो पांच साल की थी ।"

"यानी अंजली तुम्हारी सौतेली बेटी है ।"

"रिश्ते में जरूर वो सौतेली बेटी है ।" रोशनलाल तल्ख़ स्वर में बोला- "परन्तु वास्तविकता यह है कि मैं उसे अपनी सगी बेटी की तरह प्यार करता हूँ, क्योंकि अंजली ही मेरे जीने का एकलौता मकसद है । उसी के लिए मैं दिन-रात यहाँ मेहनत करता हूँ ।"

"एक बात कहूं रोशनलाल ।" बैंजो मेज के पीछे से निकलकर रोशनलाल के नजदीक आ खड़ा हुआ- "तुम्हारी बेटी है सुन्दर । हीरा है हीरा ।"

रोशनलाल का शरीर क्रोध से कंपकंपाने लगा । उसने अपनी नजरें झुका लीं, ताकि बैंजो उसकी आँखों में पैदा हुई ज्वाला न देख सके ।

"उसकी शादी वगैरह का भी सोचा है या नहीं ?" बैंजो किसी बड़े बुजुर्ग की तरह बोला- "जब लड़की जवान हो जाए, तो उसे ज्यादा दिन घर में नहीं बिठाना चाहिए । खासतौर से जब लड़की अंजली जैसी ख़ूबसूरत हो, तब तो

इसीलिये बैंजो को जल्द-से-जल्द यहाँ पहुँचने की पड़ी हुई थी। उसने अपनी कार को तूफ़ान एक्सप्रेस बनाया हुआ था।

लेकिन उन तमाम हंगामों के बावजूद बैंजो, अंजली को भूल नहीं पा रहा था।

वह बार-बार उसकी आँखों के गिर्द मंडराने लगती।

बैंजो उस वक्त उसे जितना अपने दिमाग से निकालने की कोशिश कर रहा था, अंजली उतना ही उसके दिल-दिमाग पर हावी होती जा आ रही थी।

□□□

शीघ्र ही बैंजो बंगले पर पहुँच गया।

तब तक वहां बाबू नाईक ही आया था। लेकिन बैंजो की कार जैसे ही बंगले की मारकी के नीचे आकर रुकी, तभी शंकरराव की कार भी बंगले में दाखिल हुई।

कारों की आवाज सुनते ही बाबू नाईक खुशी से प्रफुल्लित होकर बोला- "तुम दोनों का इन्तजार करते-करते तो मेरी पुड़िया बन्ध गयी सालों। एक घंटे से मैं पागलों की तरह तुम दोनों का इंतज़ार कर रहा हूँ।"

"यह तो अच्छी बात है नाईक !" शंकरराव भी कार से बाहर निकलता हुआ खुशी-खुशी बोला- "कि हम तीनों आज भी एक-दूसरे का इन्तजार करते हैं। हमारी दोस्ती में आज भी वही गरमी और जोश है, जो दस साल पहले था।"

"हाँ, यह बात तो है शंकरराव !" बाबू नाईक आँखों में चमक भरकर बोला- "हमारी दोस्ती की पुड़िया को आज तक कभी किसी की नजर न लगी।"

"कोई बात तो जरूर हुई है ।" बाबू नाईक ने बैंजो के गर्दन में बांह डाल दी- "वरना यूं पटाखे की लड़ी की तरह फड़-फड़ करके तो नहीं हँसता तू ! बता, क्या बात हुई है ? यारों से दगा करेगा, तो साले सीधा नरक की आग में जलेगा ।"

बैंजो ने अपनी हंसी पर थोड़ा कंट्रोल किया- "कोई बात नहीं हुई, तुम दोनों ख्वामखाह बहस कर रहे हो ।"

"झूठ बोलता है साले !" शंकरराव चिल्लाया- "अभी दो जूते लगा दूं ?"

"मैं एकदम सच बोल रहा हूं, मेरी बात का यकीन करो ।"

"मैं तेरी नस-नस से वाकिफ हूं बेटा बैंजो !" बाबू नाईक ने अपनी गर्दन हिलाई- "बहुत हरामी चीज है तू साले, यारों से छिप-छिपकर बड़े-बड़े कारनामें कर डालता है और यारों के कान के पास पत्ता भी नहीं खड़कने देता । ठीक है, मत बता, तेरी मर्जी ।" तभी बाबू नाईक को कुछ याद आया- "मैंने तेरे को शराब का कैरेट लाने को बोला था, वह तो ले आया है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि वो बीच रास्ते में ही किसी को पिला आया हो ।"

"नहीं, वह तो मैं ले आया हूं ।"

"किधर है ?"

"बाहर कार में रखा है ।"

"वहां रखा क्या दूध दे रहा है ?" बाबू नाईक फुंफकार कर बोला- "अबे हम यहां मौज-मेले के लिए आए हैं और मौज-मेले का सामान ही तू बाहर छोड़ आया ? चल, जल्दी लेकर आ ।"

"अभी लाता हूं ।" बैंजो तुरन्त वापस बाहर कार की तरफ दौड़ पड़ा ।

उसके पीछे-पीछे ही शंकरराव भी लपका ।

"तू कहां जा रहा है भाई ?" बाबू नाईक, शंकरराव से बोला ।

"मैंने आज रात के खाने का बहुत बढ़िया इंतजाम किया है ।" शंकरराव बोला- "ऐसा खाना, जो पहले कभी नहीं खाया होगा । पहले कभी चखा भी नहीं होगा । उंगलियाँ चाटते रह जाओगे । खान बाहर डिब्बे में रखा है । मैं अभी डिब्बे निकालकर लाता हूं ।"

शंकरराव दौड़ता चला गया ।

शीघ्र ही बैंजो और शंकरराव की वापसी हुई ।

बैंजो अपने हाथ में एक बहुत बढ़िया वाली इंग्लिश शराब "शिवाज रीगल" का पूरा क्रेट उठाए था, जबकि शंकरराव के हाथ में दो बड़े-बड़े हॉट-पॉट थे, जिनमें उस रात का डिनर बन्द था ।

सबसे पहले वह तीनों खाने पर टूटे ।

प्रोन करी लाजवाब थी । बैंजो की फैवरेट फिश करी और बिरयानी भी शंकरराव लाया था । तंदूरी लॉबस्टर और फ्राई फिश उन्होंने शराब के साथ खाने के लिये बचाकर रखे ।

वह खाना एक-दूसरे से यूं छीनते-झपटते हुए खा रहे थे, जैसे उन्होंने सुबह से कुछ न खाया हो ।

अगर गोवा का कोई आदमी उस वक्त उन तीनों की बच्चों जैसी हरकतें देखता, तो उसे किसी भी हालत में विश्वास नहीं आता कि यह तीनों अण्डरवर्ल्ड के वही दादा

हैं, जिनके नाम-मात्र से ही आज अण्डरवर्ल्ड के छोटे-मोटे गुण्डे थर्रा उठते हैं ।

□□□

वह शाम सबसे ज्यादा रोशनलाल पर भारी गुजरी थी ।

वह गुस्से में भुनभुनाता हुआ घर पहुंचा था । उस वक्त भी उसकी आंखें आग उगल रही थीं । उसका दिल चाह रहा था कि वह न जाने क्या कर डाले ।

घर पहुंचते ही उसने अपनी जैकेट उतारकर चारपाई पर फेंकी और फिर धम्म से कुर्सी पर बैठ गया ।

"क्या बात है ?" अंजली, रोशनलाल के थोड़ा करीब पहुंचकर बोली- "आज आपका मूड क्यों खराब है ?"

"तुझे वहां नहीं जाना चाहिए था ।" रोशनलाल गुस्से में किसी बम की तरह फटा- "तू वहां क्यों गयी ?"

"लेकिन अगर में दफ्तर नहीं जाती पापा !" अंजली बेहद विनम्र स्वर में बोली- "तो मुझे चाबी कैसे मिलती ? ताला कैसे खुलता ? मैं घर में कैसे आती ?"

"तू पड़ोस में सिंहा साहब के यहां बैठकर भी तो मेरा इतंजार कर सकती थी ।" रोशनलाल का पारा बुरी तरह हाई था- "मैंने थोड़ी देर से आने के लिए ही तो बोला था । यह तो नहीं कहा था कि मैं रात के बारह या दो बजे आऊंगा ।"

"मेरी यह समझ नहीं आ रहा ।" अंजली की आंखों में बेपनाह हैरानी थी- "कि अगर मैं दफ्तर चाबी लेने चली गई तो कौन सी आफत आ गई ?"

"आफत ही आ गई ।" रोशनलाल झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया- "तू नहीं समझेगी अभी यह बात

"आज जो हुआ, सो हुआ बेटी ।" रोशनलाल ने स्नेहपूर्वक अंजली के कंधे पर हाथ रखा- "लेकिन फिर कभी उस दफ्तर में मत जाना । कभी मेरे मुंह से भी निकल जाए, तब भी नहीं । तू तो जानती है कि मेरा दिमाग अब ठीक से काम नहीं करता । शायद बुढ़ा होता जा रहा हूं इसलिए ।"

"आप बेफिक्र रहें पापा ! अंजली के स्वर में भरपूर आश्वासन था- "आगे कभी ऐसी गलती नहीं होगी ।" रोशनलाल ने एकदम कसकर अंजली को अपने सीने से लगा लिया, उसकी आंखों में खुशी के आंसू छलछला आए- "तू सचमुच ही एक अच्छी बेटी है अंजली, बहुत अच्छी ।"

□□□

खाना खाने के बाद उन तीनो के बीच पीने का दौर चला ।

वह फुल मस्ती में थे और एक-दूसरे को पैग बना-बनाकर दे रहे थे ।

"कैसे मजे के दिन आ गये हैं ।" बाबू नाईक नशे में झूमता हुआ बोला- "कभी यही डोनापाला बीच था, लेकिन हम लोगों के पास सिर छिपाने के लिए चार ईंटों का एक कमरा भी नहीं था । छप्पर भी नहीं था और आज बंगला है, पांच करोड़ का बंगला । कभी पीने को देसी की एक थैली नसीब नहीं होती थी और आज इंग्लिश पी रहे हैं । पी क्या रहे हैं, डुबकी लगा रहे हैं ।"

"यह सब नसीब का खेल है नाईक !" शंकरराव बोला- "ऊपर वाला जब देता है, छप्पर फाड़कर देता है । बड़े-बूढों की यह मिसाल हम तीनों पर एकदम खरी साबित हुई ।"

"हाँ, यह बात तो है ।"

"बस एक ही काम में हम तीनों मार खाते जा रहे हैं ।" शंकरराव ने शराब के दो तगड़े घूँट भरे और फिर ठंडी आह लेकर बोला ।

"किस काम में ?" बाबू नाईक और बैंजो के नेत्र फैले ।

"जब हम तीनों कंगले थे, तब रोजाना कैसी बढ़िया-बढ़िया मछली फांसते थे ।" शंकरराव आँखों में वासना की चमक भरकर बोला- "रोजाना एक-से-एक मछली की पुड़िया बांधते । मछली भी बिल्कुल ताजा । एकदम फ्रेश माल । अनटच । अनछिदी ।"

दरअसल 'मछली' उन तीनों का एक बड़ा प्राइवेट किस्म का 'कोडवर्ड' थी । 'मछली' वह अपनी ही गुप्त जबान में लड़की को बोलते थे ।

"हाँ यार !" बाबू नाईक ने अपने होठों पर जबान फिराते हुए बड़े हसरत भरे अंदाज में अपने गंजे सिर पर हाथ फेरा- "यह बता तो है । मछलियाँ तो आज भी बहुत मिलती हैं । लेकिन सब की सब बासी । कुम्हलाई हुईं । पहले से ही खूब खेली-कूदी । ऐसी डेढ़ हजार मछलियों की एक पूरी फ़ौज तो तेरे हे नीचे काम करती है शंकरराव !"

"नाम मत ले उसका ।" शंकरलाल ने यूं बुरा सा मुंह बनाया, जैसे कुनैन की गोली घुल गयी हो- "वह भी साली कोई मछली हैं, हर किसी की गोद में जाकर बैठ जाती हैं । एकदम फ्रेश और घरेलू लड़की की बात ही अलग होती है नाईक ।"

उन दोनों की बातें सुनते-सुनते एकाएक बैंजो की आँखों के गिर्द अंजली का चेहरा मंडराने लगा ।

"बहुत दिन हो गये ।" शंकरराव ने गहरी सांस ली- "लेकिन कोई नायाब मछली चखने को नहीं मिली । अगर कोई ऐसी मछली हत्थे चढ़ जाए, तो वाह-वाह हो जाये नाईक !"

बैंजो अब शराब पीना भूल चुका था ।

उसकी आँखों के गिर्द पूरी तरह अंजली घूम रही थी ।

"क्या बात है भाई !" बाबू नाईक ने बैंजो को पकड़कर झंझोड़ा- "तेरी कैसी पुड़िया बंध गयी ? तू कैसे शराब नहीं पी रहा ।"

"म..मैं एक मछली का पता बता सकता हूँ ।" तुरंत बैंजो के मुंह से शब्द निकले ।

"क..क्या ?" बाबू नाईक और शंकरराव भी हड़बड़ा उठे- "क्या बोला तू ?"

वह दोनों भी शराब पीना भूल गये ।

"मैं एक मछली का पता बता सकता हूँ ।" बैंजों ने अपने शब्द रिपीट किये- "बिल्कुल वैसी मछली, जैसी मछली की तुम दोनों को तलाश है, जैसी मछली की मुझे तलाश है ।"

"क...कैसी मछली की तलाश है हमें ?"

"जो घरेलू मछली हो । एकदम फ्रेश हो । अनटच हो । अनछिदी हो ।"

"हाँ !" शंकरराव की गर्दन जल्दी-जल्दी हिलने लगी- "बिल्कुल ऐसी ही मछली चाहिए हमें ।"

"एक और सुपर बात भी है उस मछली में ।" बैंजों बोला ।

"क्या ?"

"अच्छा ही हुआ ।" बाबू नाईक बोला- "जो उस वक्त उसका बाप वहां नहीं था ।

"इसे अपनी ही पड़ी है ।" बैंजो झुंझलाया- "अगर उस मछली को देखा होता तो तेरी जबान इस समय कतर-कतर न चल रही होती । तब तो तेरी आंखें फटी-की-फटी रह जातीं और उसे भूखे कुत्ते की तरह लार टपकाते हुए देखता ।"

"मछली क्या सचमुच इतनी ही शानदार है ?" शंकरराव की आंखों में पुनः जिज्ञासा जागी- "जितनी तू बयान कर रहा है ?"

"वो मेरे बयान से भी कहीं ज्यादा शानदार है शंकरराव ! देखेगा तो तबीयत हरी हो जाएगी । फिर तुझे कुछ नजर नहीं आएगा । फिर या तो तुझे मछली नजर आएगी या फिर यह नजर आएगा कि उसकी पुड़िया किस तरह बंधे ।"

"नाईक !" शंकरराव ने अपनी होंठों पर जबान फिराते हुए बाबू नाईक की तरफ देखा ।

"हां !"

"अगर वो मछली सचमुच इतनी ही शानदार है नाईक !" शंकरराव बोला- "तब तो मैं समझता हूं कि हमें उसकी पुड़िया बांधने का कोई इंतजाम सोचना ही चाहिए । वैसे भी ऐसे फ्रेश माल पर हाथ साफ किए बहुत दिन हो गए ।"

"लेकिन वो रोशनलाल की बेटी है शंकरराव !"

"चूल्हे में गया रोशनलाल !" शंकरराव ने दांत पीसे- "अरे मछली जरूरी है या रोशनलाल जरूरी है ? सही बोलता है अपना बैंजो । रोशनलाल हमें दस मिल जाएंगे, सौ मिल जाएंगे । लेकिन पुड़िया बांधने को वैसी मछली

"क...कौन रोशनलाल ?" बाबू नाईक ने पूछा- "अपना चीफ अकाउंटेंट ?"

"हां, वही ।"

बाबू नाईक ने इस तरह कसैला-सा मुंह बनाया, जैसे उसका जायका खराब हो गया हो । कांच का गिलास उठाकर वो ढेर सारी शराब एक ही घूंट में गटागट पीटा चला गया ।

शंकरराव ने भी बाबू नाईक की तरह ही निरुत्साहित होकर शराब पीनी शुरू कर दी थी ।

□□□

"क्या हो गया ?" बैंजो बोला- "रोशनलाल का नाम सुनकर तुम दोनों के चेहरों के बल्ब क्यों फ्यूज हो गए ?"

"अबे वो रोशनलाल है ।" बाबू नाईक बोला- "अपना आदमी, अपना अकाउंटेंट ।"

"तो क्या हुआ अगर वो अपना आदमी है ।" बैंजो की आंखों के गिर्द बार-बार अंजली घूम रही थी- "उस जैसे अकाउंटेंट हमें गोवा में दस मिल जाएंगे, सौ मिल जाएंगे । लेकिन वो मछली पूरे गोवा में दूसरी नहीं मिलेगी । वह वन पीस है । वह चल रही थी तो यूं लग रहा था जैसे कोई कयामत चल रही हो । ढेर सारे कपड़े पहने थी, लेकिन फिर भी वो जबरदस्त सेक्सी नजर आ रही थी । मैंने जिंदगी में उस जैसी मछली नहीं देखी नाईक । मेरा तो उसे देखते ही दिल करने लगा था कि मैं उसकी पुड़िया बांध दूं । अगर उस समय उसका बाप रोशनलाल वहां न होता तो मैं गारंटी से कहता हूं कि मैं उसकी पुड़िया बांध देता । दफ्तर में ही उसके ऊपर कई फेरे लगाता ।"

नहीं मिलेगी नाईक । फिर रोशनलाल को क्या पता लगेगा कि उसकी बेटी की पुड़िया हम तीनों ने बांधी है । आज तक कभी किसी को हमारे कारनामों की खबर हुई है, जो उसको होगी ?"

"ही इज राइट ।" शंकरराव को अपने फेवर में आते देख बैंजो खुश हुआ- "उस रोशनलाल के तो फरिश्तों को भी पता नहीं चलेगा कि कौन उसकी बेटी का तिया-पांचा कर गया ।"

"लेकिन ये क्या जरूरी है ।" बाबू नाईक, शंकरराव से बोला- "कि मछली सचमुच उतनी ही शानदार है, जितना ये बैंजो बयान कर रहा है ?"

"मैं गारंटी लेता हूं ।" बैंजो जल्दी से बोला ।

"तू अपनी गारंटी अपने पास रख ।" बाबू नाईक ने उसकी तरफ आंखें तरेरी-"तू मछली को देखकर कैसा पागल होता है, यह मैं खूब जानता हूं । तुझे तो हर मछली सोफिया लोरेन नजर आती है या फिर मल्लिका ए विक्टोरिया ।"

"तो यह बात किस तरह फाइनल हो ।" शंकरराव बोला- "कि मछली वाकई शानदार है या नहीं ?"

"इसका सिर्फ एक ही तरीका है ।"

"क्या ?"

"हम दोनों रोशनलाल के घर जाएं और मछली को खुद अपनी आंखों से देखें । अगर मछली सचमुच वैसी ही जबरदस्त है, जैसा अपना बैंजो बयान कर रहा है तो उसकी पुड़िया बांधना पक्का, वरना कैंसिल । क्योंकि एक साधारण मछली के लिए हम अपने आदमी से गद्दारी नहीं

रोशनलाल रात वाली घटना अभी तक नहीं भुला पाया था । शायद इसीलिए उसके चेहरे पर इस समय भी थोड़े अवसाद के चिन्ह थे । उसने दर्पण के सामने खड़े होकर अपने बाल संवारे और फिर जैकेट पहनकर उसके बटन लगाने लगा ।

यही वो पल था, जब जोर से कॉलबेल बजी ।

रोशनलाल ने समझा कि शायद मैले कपड़े लेने के लिए धोबी आया है, क्योंकि इतनी सुबह-सुबह वही आता था । वह अपनी जैकेट के बटन लगाता हुआ ही दरवाजे की तरफ बढ़ा और उसने बड़े निर्विकार ढंग से दरवाजा खोल दिया ।

अगले ही पल रोशनलाल को यूं तेज झटका लगा, जैसे एक साथ हजारों बिच्छुओं ने उनके ऊपर हमला किया हो ।

सामने बाबू नाईक और शंकरराव खड़े मुस्कुरा रहे थे ।

“अ...आप ?” रोशनलाल की जबान को जैसे लकवा मार गया- “स...साहब आप... ।”

“हमें देखकर हैरान क्यों हो रहे हो रोशनलाल ?” बाबू नाईक शहद जैसी मीठी जुबान में बोला- “अरे भाई हम दोनों तुम्हारे घर के सामने से गुजर रहे थे । सोचा क्यों न आज तुम्हारे यहां भी एक-एक कप चाय पीते चलें ।”

“क्यों नहीं साहब ?” रोशनलाल फ़ौरन बोला- “बिल्कुल । घर है आपका । आइए, अंदर आइए ।”

बाबू नाईक और शंकरराव ने दांत चमकाते हुए अंदर कदम रखा ।

लेकिन उनकी चौंकन्नी आंखें फौरन ही इधर-उधर ‘मछली’ को तलाशने लगी थीं, जो उन्हें कहीं न दिखाई दी ।

"बैठिये साहब !" रोशनलाल खुशी का प्रदर्शन करते हुए बोला- "यह मेरा सौभाग्य है, जो आपके कदम मेरी इस छोटी सी कुटिया पर पड़े ।"

दोनों यमदूत बाहर वाले कमरे में पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए ।

"मैं तुम्हारी मेहनत और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हूं रोशनलाल !" बाबू नाईक इत्मीनान से कुर्सी पर बैठने के बाद बोला- "इसीलिए मैंने आज एक फैसला किया है ।"

"कैसा फैसला साहब ?"

"इस महीने से तुम्हारा दो हज़ार रुपये का इंक्रीमेंट कर दिया है । अब तुम्हें दो हज़ार रुपये ज्यादा तनख्वाह मिलेगी ।"

रोशनलाल खिसियाने ढंग से हंसा- "मैं किस काबिल हूं साहब ! सब आपकी मेहरबानियों का फल है । आप लोग बैठिए । मैं अभी एक मिनट में हाजिर होता हूं ।"

रोशनलाल तुरंत लपकता-लपकता अंदर की तरफ बढ़ गया ।

□□□

उन दोनों यमदूतों को देखते ही रोशनलाल का दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगा था ।

वह बुरी तरह घबरा उठा था । उसके चेहरे पर डर तथा हैरानी के भाव उभर आए, जिन्हें वो बड़ी मुश्किल से छिपा पा रहा था ।

बाहर से आने वाली आवाजों को सुनकर अंजली भी बाहर की तरफ बढ़ी, लेकिन शुक्र था कि रोशनलाल ने उसे किचन के दरवाजे पर ही पकड़ लिया ।

"वापस अंदर चलो ।" रोशनलाल फुसफुसाते स्वर में बोला । उसके चेहरे पर इस समय खौफ साफ-साफ दिखाई दे रहा था- "अंदर चलो ।"

"लेकिन बात क्या है ?" अंजली के चेहरे पर भी हैरानी के भाव उभरे- "कौन आया है ?"

"मेरे दफ्तर से ही दो यमदूत आए हैं ।" रोशनलाल बोला- "यह कभी किसी कर्मचारी के घर नहीं जाते । पता नहीं यहां क्यों आए हैं । जरूर कोई खास बात है ।"

यमदूतों का नाम सुनकर अंजली के शरीर में भी आतंक की लहर दौड़ गई ।

"बातें भी बहुत मीठी-मीठी कर रहे हैं ।" रोशनलाल पुनः बोला ।

"क्या उनमें वो यमदूत भी है ।" अंजली ने पूछा- "जो कल दफ्तर में था ?"

"नहीं, वो नहीं है, बाकी दोनों हैं । लेकिन ये भी उससे किसी हालत में कम नहीं । तू किचन से बाहर मत निकलना बेटी ।"

"ठीक है ।" अंजली ने तुरंत स्वीकृति में गर्दन हिलाई ।

"और जल्दी से मुझे कुछ चाय तथा नमकीन वगैरह दे, ताकि मैं उन्हें दफा करूं ।"

"चाय तो बनी हुई है, नमकीन मैं अभी निकालती हूं ।" कहने के साथ ही अंजली फुर्ती से किचन में ही बने कवर्ड की तरफ झपटी ।

दोनों यमदूतों के आते ही वहां हलचल-सी मच गई थी ।

□□□

आदमी हैं, बड़े आदमी हैं । मैं क्या हूं, धूल हूं आपके पैर की साहब ।"

"तेरी यही बातें मेरे को बढ़िया लगती हैं रोशनलाल !" बाबू नाईक ने एक-एक शब्द पर जोर दिया- "तू वफादार आदमी है । जानता है आदमी की इज्जत करना ।" धू

दोनों चाय सिप कर रहे थे लेकिन उनकी आंखें चौंकन्नी होकर इधर-उधर घूम रही थीं कि शायद मछली के दर्शन हो जाएँ ।

शायद अभी भी मछली अंदर से बाहर आ जाए ।

इसीलिए वह दोनों चाय भी आहिस्ता-आहिस्ता टाइम गुजारते हुए पी रहे थे । बीस मिनट हो गए । चाय भी कब तक साथ देती, वह भी खत्म हो गई । मछली के दर्शन नहीं हुए ।

"ठीक है भाई रोशनलाल !" बाबू नाईक निराशा से भरी गहरी सांस लेकर कुर्सी से उठा- "अब हम चलते हैं । याद रहेगी आज की यह सुबह ।"

रोशनलाल खीं-खीं करके हँसा- "आपको क्या याद रहेगी साहब ! याद तो मुझे रहेगी । आखिर इतने बड़े सेठ आदमी आज मेरी कुटिया पर पधारे ।"

"नहीं, हमें भी याद रहेगी ।"

मछली के दर्शन न होने की वजह से शंकरराव कुछ ज्यादा ही बेचैन था । वह अपने शुष्क होठों पर जबान फिरा रहा था और अभी भी भूखों की तरह घर के दीवार-कोनों को देख रहा था ।

"क्या बात है रोशनलाल !" वह उठते-उठते बोल ही पड़ा- "तुम यहां अकेले रहते हो ?"

"ज...जी नहीं, मेरी बेटी भी मेरे साथ रहती है ।"

"दिखाई नहीं दी वो कहीं ।"

"द..दरअसल वो किचन में बिजी है । आप तो जानते ही हैं साहब, घर में सुबह-ही-सुबह कितना काम रहता है ।

शंकरराव दिल-ही-दिल में उसे मोटी-मोटी गालियां देता हुआ बाहर निकल गया ।

कुछ ऐसा ही हाल बाबू नाईक का था ।

□□□

"साला सचमुच बहुत हरामी बुड्ढा है ।" बाबू नाईक धम्म से अपनी कार की ड्राइविंग सीट पर बैठता हुआ फुंफकारा- "जरूर हमारी नियत पर शक हो गया है कंजर को । इसलिए 'मछली' को हमारे सामने नहीं आने दिया ।"

"नाईक ! मेरे को तो बहुत गुस्सा आ रहा था ।" शंकरराव ने दांत किटकिटाये-"मेरा तो दिल चाह रहा था कि मैं तभी अंदर घुसकर 'मछली' को ठोक दूं । वो लाल, काली, पीली कैसी भी हो, बस उसकी पुड़िया बांध दूं । उस हरामी बुड्ढे के सामने ही बांध दूं ।" बाबू नाईक ने कार को गियर में डाला और फिर क्लच दबाकर कार आगे बढ़ा दी- "सब्र रख । धीरज से नाईक ।"

"ख़ाक धीरज से काम लूं !" शंकरराव गुर्राया- "बुड्ढे ने सारा प्रोग्राम फेल कर दिया ।"

"कोई प्रोग्राम फेल नहीं हुआ ।" बाबू नाईक कार का स्टेयरिंग घूमाता हुआ बोला- "अगर वह बुड्ढा हरामी है तो मैं उससे भी बड़ा हारामी हूं ।"

"क...क्या मतलब ?" शंकरराव ने एकाएक हकबकाकर बाबू नाईक को देखा- "मैं उस मछली को

आज देख कर ही रहूंगा ।" बाबू नाईक दृढ़ स्वर में बोला- "जरूर मछली में कोई खास बात है शंकरराव, जो बुड्ढा उसे यूं परदे में छिपा रहा है ।"

"यह बात तो है ।" शंकरराव की गर्दन हिली- "लेकिन कैसे, अब तुम मछली को कैसे देखोगे ?"

"मैं अपना रुमाल कुर्सी के नीचे गिरा आया हूं शंकरराव ! अब हम पंद्रह मिनट बाद उस रुमाल को लेने दोबारा बुड्ढे के घर जाएंगे ।"

"अभी क्यों नहीं ?" शंकरराव तेजी से बोला- "अभी चलते हैं । कार मोड़ ।"

"पागल मत बन ।" बाबू नाईक झल्लाया- "अभी बुड्ढा घर पर होगा । अभी गए तो फिर प्लान चौपट हो जाएगा । थोड़ी देर में ही वो ऑफिस चला जाएगा । उसके ऑफिस जाने के बाद हम गए तो मछली के दर्शन होने निश्चित हैं ।"

"हां, बिल्कुल ठीक बात है नाईक ।" शंकरराव ने खुशी से उछलकर बाबू नाईक के गले में बांहें डाल दीं- "तूने साबित कर दिया कि तू बुड्ढे से भी हरामी है । बुड्ढा अगर सेर है, तो तू सवा सेर है ।"

शंकरराव की बात सुनकर बाबू नाईक खीं-खीं करके हंसा ।

□□□

कुछ देर वह दोनों कार में बैठे यूं ही तिसवाड़ी एरिया (गोवा की सड़कों) पर इधर-उधर घूमते रहे ।

ठीक पंद्रह मिनट बाद कार दोबारा रोशनलाल के घर के सामने रुकी ।

फिर वह दोनों कार से उतरकर जल्दी-जल्दी चलते हुए दरवाजे के नजदीक पहुंचे और कॉलबेल बजाई ।

शंकरराव तो मछली को देखने के लिए इतना व्याकुल था कि उसने दरवाजे की झिर्री पर अपनी आंख सटा दी और अंदर का दृश्य देखने की कोशिश करने लगा, परंतु वह कुछ भी स्पष्ट नहीं देख पा रहा था ।

तभी एकाएक धड़ाक से दरवाजा खुला तथा दरवाजे से चिपका शंकरराव आगे गिरते-गिरते बचा । बाबू नाईक ने उसे फौरन पकड़ा ।

दरवाजा मछली ने ही खोला था ।

मछली को देखते ही दोनों के दिल धड़कना भूल गए ।

आंखें 'बेपनाह हैरत' से फ़ैली की फ़ैली रह गयीं ।

शंकरराव तो उस पल को कोसने लगा कि बाबू नाईक ने उसे पकड़ा क्यों ? वह गिर क्यों नहीं गया ? वह गिरता तो सीधा मछली के ऊपर गिरता और वही उसे एकदम हड़बड़ाकर पकड़ती, संभालती ।

"ज..जी कहिए ।" अंजली उन दोनों को देखकर घबराई- "क...क्या बात है ?"

"दरअसल मेरा रुमाल यहां रह गया था ।" बाबू नाईक अपने गंजे सिर पर हाथ फेरता हुआ शैतानी ढंग से मुस्कुराया- "उसी को लेने आया था ।

"र..रुमाल ?"

"हाँ ! कुर्सी के आस-पास कहीं पड़ा होगा ।"

अंजली ने पलटकर देखा तो दरवाजे पर खड़े-खड़े ही उसे कुर्सी के नीचे पड़ा रुमाल दिखाई दे गया ।

वह एकदम तेजी से कुर्सी के पास गई और रुमाल उठाकर ले आयी ।

शंकरराव तो अभी भी हक्के-बक्के अंदाज में अंजली को देख रहा था। उसकी स्थिति ऐसी थी, जैसे उसके होश गुम हो गए हों।

"थैंक यू !" बाबू नाईक ने अंजली के हाथ से रुमाल ले लिया- "रोशनलाल शायद ऑफिस चला गया है ?"

"जी हां।"

"चल भाई शंकरराव !" बाबू नाईक ने उसे पकड़कर हिलाया तो वह नींद से जागा- "वापस चलते हैं। अपना काम हो गया है।"

अंजली ने उसी पल धड़ाक से दरवाजा बंद कर लिया।

□□□

बाबू नाईक और शंकरराव कार की सीट पर यूं जाकर बैठे थे, जैसे किसी ने उन्हें मूर्ति में बदल दिया हो।

शंकरराव की कुछ ज्यादा बुरी हालत थी। वह बार-बार अपने होठों पर जबान फिरा रहा था और पलट-पलटकर बंद दरवाजे को देख रहा था।

"अब उधर कुछ नहीं है।" बाबू नाईक ने जेब से शराब की बाटली निकाली और दो-तीन तगड़े-तगड़े घूँट पी गया- "मछली जा चुकी है। ले, तू भी कुछ घूँट लगा ले। होश आ जाएगा।"

शंकरराव ने बाबू नाईक के हाथ से बाटली झपट ली और फिर गटागट उसमें मौजूद सारी शराब पीता चला गया।

"अबे !" बाबू नाईक चिल्लाया- "अबे क्या कर रहा है ?"

"कोल्हापुर भेजता हूं । वहां शराब की कुछ पेमेंट अटकी पड़ी है । कोल्हापुर जाएगा तो फिर दो दिन से पहले वापस नहीं हो सकेगा ।"

"ठीक है ।" शंकरराव बोला- "जो करना है, जल्दी कर ।"

बाबू नाईक ने तेज रफ्तार से कार आगे बढ़ा दी । मछली देखकर उसकी तबीयत भी बाग-बाग हो गई थी ।

□□□

वे दोनों जब 'फाइनेंस कंपनी' वाले ऑफिस पहुंचे तो बैंजो केबिन में बैठा बड़ी बेसब्री से उन्हीं का इंतजार कर रहा था ।

रोशनलाल हमेशा की तरह अपनी कुर्सी पर बैठा था । उसके सामने दो-तीन रजिस्टर खुले हुए थे और वह हिसाब चेक करने में मग्न था ।

कितना बड़ा खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा है, इसका अहसास भी उस समय रोशनलाल को न था ।

बाबू नाईक और शंकरराव ने जैसे ही केबिन में कदम रखा, बैंजो एकदम उछल कर खड़ा हो गया ।

"कैसी लगी मछली ?" उसने छूटते ही पूछा ।

बाबू नाईक हकबकाकर वापस घूमा । केबिन का दरवाजा अभी भी खुला था । उसने जल्दी से दरवाजा बंद किया और फिर बैंजो पर बरस पड़ा- "तुम दोनों अपने साथ साथ मेरी भी पुड़िया बंधवाओगे । यह तक पता नहीं है कि दरवाजा खुला है और आवाज बाहर ऑफिस में जाएगी ।"

"अब तो दरवाजा बंद हो गया।" बैंजो रिजल्ट जानने के लिए हद से ज्यादा व्याकुल था- "अब तो बताओ कि कैसी लगी मछली ?"

"यह तुझे मछली के बारे में क्या बताएगा, मैं बताता हूं।" शंकरराव उत्साहपूर्वक आगे बढ़ा और उसने बैंजो को गले से लगा लिया- "मछली वाकई ऐसी ही है बैंजो, जैसी तू बोला। बिल्कुल हीरा है। बल्कि उससे भी बढ़िया। उससे भी शानदार।"

"यानी पुड़िया बंधेगी ?" बैंजो की आवाज खुशी से कांपी।

"बिल्कुल बंधेगी। हम तीनों मिलकर बांधेंगे।"

बैंजो खुशी से उछल पड़ा। यही शुक्र था कि वह खुशी से नाचने नहीं लगा था।

"अब तुम दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठ जाओ।" बाबू नाईक बोला- "मैं रोशनलाल को बुलाता हूं और उसे कोल्हापुर भेजने का ऑर्डर देता हूं।"

"कोल्हापुर ? बट व्हाय ?" बैंजो चौंका।

"मछली की पुड़िया बांधने के लिए जरूरी है कि रोशनलाल को एक दिन के लिए बाहर भेज दिया जाए ताकि रोशनलाल को शक न हो कि उसकी बेटी की पुड़िया किसने बांधी ?"

"ठीक है। भेज, भेज दे। वैसे भी बुड्ढा यहां रहकर क्या करेगा, कबाब में हड्डी ही बनेगा।" बैंजो जल्दी से एक कुर्सी पर बैठ गया।

□□□

बाबू नाईक के बुलावे पर रोशनलाल ने केबिन में कदम रखा ।

आज तीन महान मूर्तियां केबिन में एक साथ विराजमान थीं । ऐसा रोशनलाल ने पहले बहुत कम बार ही देखा था कि तीनों केबिन में एक साथ हों । अमूमन तो वहां बाबू नाईक और बैंजो ही बैठते थे क्योंकि शराब का कारोबार उन्हीं दोनों का था ।

लेकिन आज तीनों को एक साथ देखकर रोशनलाल का दिल धड़क रहा था । जरूर कुछ गड़बड़ है, जरूर कुछ घपला है । रोशनलाल ने जब केबिन में कदम रखा तो बैंजो एक मैगजीन पढ़ रहा था । शंकरराव टेलीफोन से उलझा हुआ था और उसे कोई नंबर नहीं मिल रहा था । सिर्फ बाबू नाईक ही खाली था ।

"आपने मुझे याद किया साहब ?" रोशनलाल आदरपूर्वक बोला ।

"हां रोशनलाल, आओ ।"

रोशनलाल, बाबू नाईक के सामने जाकर खुश हो गया ।

"हमारी कोल्हापुर में एक पार्टी है रोशनलाल !" बाबू नाईक बोला- "महाजन इंटरप्राइजेज के नाम से ।"

"जी साहब ! कुछ दिन पहले भी उनके यहां दो ट्रक शराब की पेटियां भेजी गई थीं ।"

"बैंजो अभी रजिस्टर देख रहा था । पता चला कि उन पर पांच लाख रुपये की वसूली बकाया है ।"

"जी हां ! मैंने इस संबंध में उन्हें एक लैटर भी लिखा है ।"

"लैटर वगैरह से कुछ नहीं होता रोशनलाल ! यह रोकड़े का मामला है । एक काम करो । अभी कोल्हापुर चले

जाओ और कल शाम तक रकम वसूली करके वापस लौटो ।"

"अ...अभी कोल्हापुर चला जाऊं ?" रोशनलाल की आवाज में एकाएक हैरानी पैदा हुई- "लेकिन मुझे कुछ जरूरी हिसाब-किताब निपटाना है साहब !"

"कोई बात नहीं । हिसाब-किताब कल के बाद हो जाएगा । मुझे दरअसल परसों ही किसी को बहुत मोटी पेमेंट करनी है, इसीलिए नोटों का जुगाड़ कर रहा हूं । जाओ, तुम जल्दी कोल्हापुर के लिए रवाना हो जाओ ।"

"म...मैं रघु को भेज दूं साहब ?"

"नहीं !" बाबू नाईक इस मर्तबा गुर्रा पड़ा- "रघु नहीं । रघु नया आदमी है । मैं उस पर पांच लाख रुपये का भरोसा नहीं कर सकता । तुम्हें जाने में कुछ परेशानी है ?"

"म...मुझे क्या परेशानी हो सकती है ?'

"तो फिर खामोशी से चले जाओ ।" बाबू नाईक कठोर स्वर में ही बोला-"बहस मत करो । इस समय मेरा दिमाग वैसे ही टेंशन में है ।"

रोशनलाल ने चुपचाप अपनी गर्दन दाएं-बाएं हिलाई और फिर केबिन से बाहर निकल गया ।

उसके जाते ही अंडरवर्ल्ड के वे तीनों दादा खुशी से उछल पड़े । फिर उन्होंने कसकर एक-दूसरे से हाथ मिलाया ।

"बुड्ढे की तो बंध गई पुड़िया ।" बाबू नाईक खीं-खीं करके हंसा- "अब मछली की बारी है ।"

□□□

रोशनलाल स्कूटर चलाता हुआ घर पहुंचा, परंतु वो सारे रास्ते चिंताग्रस्त रहा था ।

"नहीं !" अंजली ने कहा- "आप मेरी तरफ से बेफिक्र रहें ।"

"फिर भी मैं बराबर में सिन्हा साहब और उनकी बीवी से कह जाऊंगा कि वे पीछे तेरा ख्याल रखें ।"

"ठीक है ।"

एयरबैग तैयार करने की बात रोशनलाल ने उसमें टूथपेस्ट और टूथब्रश डाला । उसके बाद वो 'धनराज सिन्हा' के घर की तरफ बढ़ गया ।

□□□

धनराज सिन्हा गोवा की लोअर कोर्ट में सरकारी वकील था । एक काबिल वकील होने के बावजूद न सिर्फ धनवान बल्कि बहुत विनम्र भी था और उसकी बीवी भी उसी की तरह बहुत विनम्र और अच्छी आदत वाली थी ।

छः महीने पहले ही उन लोगों ने उनके पड़ोस में आकर रहना शुरू किया था, लेकिन अच्छे व्यवहार के कारण शीघ्र ही दोनों परिवारों के बीच काफी घनिष्ठता हो गई थी ।

रोशनलाल को मालूम था कि दो रोज से धनराज सिन्हा को बुखार है, इसीलिए वो अदालत नहीं जा रहा था ।

रोशनलाल ने जब धनराज सिन्हा के ड्राइंगरूम में कदम रखा तो वह सामने ही सोफे पर अधलेटा-सा बैठा कुछ कागज देख रहा था ।

"आइए रोशनलाल जी !" रोशनलाल को देखते ही धनराज सिन्हा ने उठने की कोशिश की ।

"नहीं, नहीं !" रोशनलाल फ़ौरन बोला- "आप लेटे रहिये । उठने से आपको तकलीफ होगी ।"

"तकलीफ कैसी रोशनलाल जी !" मना करने के बावजूद धनराज सिन्हा सोफे पर सीधा बैठ गया- "कोई अपने घर आता है तो खुशी होती है, बैठिए ।"

रोशनलाल एक सोफा चेयर पर बैठ गया ।

तभी धनराज सिन्हा की पत्नी भी ड्राइंगरूम में आ गई थी । उसने भी रोशनलाल को हाथ जोड़कर नमस्ते की ।

"अब आपकी तबीयत कैसी है ?" रोशनलाल ने धनराज सिन्हा से पूछा ।

"कल से तो कुछ बेहतर है । शायद कल अदालत जाऊं । दो दिन में ही बहुत सारा काम पेंडिंग हो गया है । क्लायंट परेशान घूम रहे हैं ।" बोलते बोलते धनराज सिन्हा चौंका- "लेकिन इस समय तो आपको ऑफिस होना चाहिए था रोशनलाल जी ! आप यहां कैसे ?"

"दरअसल एकाएक मुझे ऑफिस के काम से कोल्हापुर जाना पड़ रहा है ।" रोशनलाल बोला- "इसलिए आपके पास आया हूं कि आप पीछे अंजली का जरा ख्याल रखें । अकेली लड़की है, ऊपर से जवान भी । यूं तन्हा छोड़ते हुए दिल डरता है । इसीलिए सोचा कि आप से थोड़ी विनती करूं ।"

"विनती कैसी रोशनलाल जी ?" धनराज सिन्हा बोला- "अंजली जैसी आपकी बेटी है, वैसे ही हमारी है । आप बिल्कुल बेफिक्र होकर कोल्हापुर जाएँ ।"

"आपने आश्वासन दे दिया, मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया सिन्हा साहब । अब मैं जाने की इजाजत चाहूंगा ।" रोशनलाल सोफा चेयर से उठता हुआ बोला ।

"नहीं-नहीं !" धनराज सिन्हा की पत्नी शीघ्र बोली- "आप बैठिए भाई साहब ! मैं आपके लिए चाय बना कर लाती हूं ।"

"चाय अब मैं कोल्हापुर से आकर पिऊँगा भाभी ! इस समय कोल्हापुर जाने की जल्दी है क्योंकि कल शाम तक वापस भी लौटना है ।"

उसके बाद रोशनलाल वहां एक पल के लिए भी नहीं रुका ।

कुछ देर बाद ही वो छोटा एयरबैग लेकर कोल्हापुर जाने के लिए घर से निकल पड़ा था ।

परंतु उस दिन रोशनलाल का दिल जोर-जोर से धड़के जा रहा था ।

एक अजीब-सी घबराहट उसके दिलो-दिमाग पर हावी थी । न जाने क्यों, रोशनलाल को हर पल लग रहा था कि आज रात उसे अंजली को अकेले नहीं छोड़ना चाहिए, वरना जरूर कुछ होगा । जरूर कोई गड़बड़ होगी ।

रोशनलाल जितना उस घबराहट को दिल से निकालने की कोशिश कर रहा था, उतनी ही वो घबराहट बढ़ती जा रही थी ।

लेकिन मजबूर था रोशनलाल । आखिर तीन बड़े दादाओं का नौकर जो ठहरा । उसे न चाहते हुए भी कोल्हापुर जाना पड़ा ।

□□□

उसी रात लगभग बारह बजे एक मारुति वैन बड़ी खामोशी से रोशनलाल के घर के सामने आकर रुकी ।

फिर उसमें से एक-एक करके तीनों दादा बाहर निकले ।

"अब आल नाईट यहीं खड़े-खड़े बडबड करते रहोगे ?" बैंजो पुन: बेसब्र होता हुआ बोला- "या फिर अंदर चलकर करोगी भी कुछ ?"

"ठीक है, चलो ।"

तीनों दादा दरवाजे की तरफ बढ़ गए ।

□□□

अंजली इस समय घर में ही थी और अकेली थी ।

वह थोड़ी देर पहले ही धनराज सिन्हा के घर से लौटी थी । दरअसल रात के ग्यारह बजे तक उसने 'सिन्हा फैमिली' के साथ बैठकर टी.वी. पर प्रोग्राम देखे थे । फिर जब प्रोग्राम खत्म हो गए तो वह घर आने के लिए खड़ी हो गई । धनराज सिन्हा की पत्नी ने अंजली से कहा कि वो वहीं सो जाए लेकिन अंजली पहले भी कई बार अपने घर में अकेली सो चुकी थी, इसलिए उसे कोई डर न था । उसने धनराज की पत्नी का प्रस्ताव यह कहकर विनम्रता पूर्वक टाल दिया कि वह रात को अपना घर अकेला नहीं छोड़ना चाहती ।

इस समय अंजली बिस्तर पर लेटी थी और सोने की कोशिश कर रही थी ।

घर के सभी खिड़की-दरवाजे उसने कसकर बंद कर लिए थे । वह तीन कमरों का एक बड़ा फ्लैट था और अंजली इस समय सबसे अंदर वाले कमरे में लेटी थी ।

तभी अंजली बुरी तरह चौंकि । चौंकने की वजह थी, इतनी रात को एकाएक कॉलबेल का बजना ।

इस समय कौन आ गया ?

अंजली अभी वह बात सोच ही रही थी कि तभी कॉलबेल पुन: बजी । इस मर्तबा दो बार कॉलबेल बजाई गई ।

अंजली जल्दी से उठी और फिर चप्पल पहनकर दरवाजे की तरफ बढ़ी ।

उसने दरवाजे से झिर्री से बाहर झांककर देखने की कोशिश की कि कौन आया है ? परंतु बाहर इतना घुप्प अंधेरा था कि वह कुछ भी स्पष्ट न देख सकी ।

"कौन है ?" उसने थोड़े ऊंचे स्वर में पूछा ।

"मैं हूं, गली का वॉचमैन ।" बाहर से आवाज आई- "तुम्हारे कुछ मेहमान आए हैं । दरवाजा खोलो ।"

अंजली ने तुरंत दरवाजा खोल दिया ।

लेकिन दरवाजा खोलते ही उसे तेज झटका लगा । तीन में से दो दादाओं को तो वह दरवाजा खोलते ही पहचान गई, आखिर सुबह ही उन दोनों से मुलाकात हुई थी । बैंजो को देखकर भी उसे ये समझते देर न लगी कि वो उस दादा मंडली का तीसरा मेंबर है ।

□□□

"मेहमान कहां हैं ?" तीनों दादाओं को अपने सामने देखकर अंजली के बुरी तरह होश उड़ गए ।

"लो !" शंकरराव हंसा- "तीन-तीन मेहमान इसके सामने खड़े हैं और फिर भी पूछ रही है कि मेहमान कहाँ हैं । चल, हमें अंदर लेकर चल । आज रात हमें यहीं आराम करना है ।"

"ल..लेकिन पापा यहां नहीं हैं ।" अंजली के माथे पर ढेर सारे पसीने चुहचुहा आए थे ।

"तो क्या हुआ, जो रोशनलाल यहां नहीं है ।" शंकरराव बोला- "अच्छा ही है जो यहां नहीं है । चल, अंदर चल ।" शंकरराव ने अंजली को पीछे धकेला और फिर घर में

दाखिल हो गया । उसके पीछे-पीछे बाबू नाईक और बैंजो भी घर में घुस गए ।

बैंजो ने अंदर घुसते ही दरवाजा वापस बंद कर दिया और झट से सिटकनी चढ़ा दी थी ।

उन तीनों के हाव-भाव देखकर अंजली का बुरा हाल था ।

"द...देखिए मैं घर में अकेली हूं ।" अंजली भय से थरथर कांप रही थी- "आप लोग प्लीज यहां से चले जाइए ।"

उसकी बात सुनकर वे तीनों हंसे ।

"आप लोग बताते क्यों नहीं ?" अंजली बोली- "कि आप लोग क्यों आए हैं ?"

"ले !" बैंजो हंसा- "मछली पूछ रही है कि हम क्यों आए हैं यहां ?"

"अबे तो इसमें हंसने की क्या बात है ?" बाबू नाईक बोला- "बता दे कि इस की पुड़िया बांधने आए हैं ।"

"प..पुड़िया ।" अंजली सकपकाई- "पुड़िया क्या होता है ?"

"अब इसे यह भी बताना पड़ेगा ।" शंकरराव ने माथा पकड़ा- "कि पुड़िया क्या होता है ?"

"तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा ?" बाबू नाईक गुर्राया- "अरे यह तेरी डेढ़ हजार मछलियों की तरह थोड़े ही है शंकरराव, जो यह हर जबान समझेगी । घरेलू मछली है । ऊपर से पुड़िया बांधने का पहला-पहल चांस है, यह बेचारी क्या जाने की पुड़िया बांधना क्या होता है ? बैंजो तू इसे बता कि पुड़िया बांधना क्या होता है ?"

बताने में तो देर लगेगी नाईक ।" बैंजो अंजली को सिर से पांव तक घूर रहा था- "नई-नई मछली है, ऐसी होशियारी की बात कुछ देर बाद समझेगी ।"

"फिर ?"

"मैं इसकी पुड़िया बांधकर ही बता देता हूं ।" बैंजो व्यग्रतापूर्वक बोला- "कि पुड़िया कैसे बंधती है । काम भी हो जाएगा, मछली समझ भी जाएगी ।"

"ठीक है, जैसी तेरी मर्जी ।"

"रुक !" शंकरराव तेजी से आगे बढ़ा- "अगर पुड़िया ही बांधनी है तो पहले मैं बांधता हूं ।"

"पागल हुआ है ।" बैंजो ने उसे बीच में ही पकड़ लिया- "मछली बिल्कुल ताजी है । अनछिदी है । फिर तू बूढ़ा होने को आया । ऐसे में अगर तू मछली की पुड़िया बांधेगा तो टायर मंजिल तक पहुंचने से पहले ही पंचर हो जाएगा । इसलिए मुझे पुड़िया बांधने दे । तुम दोनों के लिए रास्ता साफ कर दूंगा ।"

"लेकिन.. ।"

"बेवकूफ मत बन ।" बाबू नाईक ने शंकरराव को डांटा- "ठीक कहता है अपना बैंजो । पहले उसे ही पुड़िया बांधने दे ।"

शंकरराव ठिठककर खड़ा हो गया, लेकिन उसके चेहरे पर नागवारी के चिन्ह थे । इस बीच अंजली भी उनकी बेहूदा बातों को काफी हद तक समझ चुकी थी और उनकी बातों को समझते ही उसके शरीर का रोआं-रोआं खड़ा हो गया । वह तुरंत वापस अंदर वाले कमरे की तरफ भागी ।

लेकिन बैंजो ने एकदम दौड़कर उसे दबोच लिया था ।

अंजली ने चिल्लाने के लिए हलक फाड़ा तो बैंजो की एक हथेली उसके मुंह पर कुकर के ढक्कन की तरह फिक्स हो गई ।

अब अंजली के मुंह से गूं-गूं की आवाजें निकलने लगीं और वो बुरी तरह अपने हाथ-पैर पटकने लगी ।

"नाईक ! शंकरराव !" बैंजो बुरी तरह चिल्लाया- "जल्दी से कोई कपड़ा लाओ ।"

फौरन बाबू नाईक एक कपड़ा उठा लाया, जिसे उसने अंजली के हलक तक ठूंस दिया ।

इस बीच शंकरराव भी कहीं से प्लास्टिक की एक डोरी उठा लाया था ।

"मैं मछली के हाथ बांधता हूं ।" शंकरराव बोला- "ताकि यह मुंह का कपड़ा न निकाल सके ।"

फिर वो अंजली के दोनों हाथ आगे करके डोरी से बांधने लगा ।

"अबे इडियट, मछली के हाथ पीछे बाँध ।" बैंजो गुर्राया- "अगर हाथ ही आगे पड़े रहेंगे, तो पुड़िया क्या खाक बंधेगी ?"

"ठीक है, ठीक है ।" शंकरराव ने उसकी तरफ आंखें तरेरीं- "कम बोल । अपने आप को बहुत बड़ा तीसमार खां समझने लगा है तू ।"

शंकरराव ने अंजली के हाथ पीछे करके बांध दिए ।

अंजली का अब बुरा हाल था । वह सिर्फ अपने पैर पटक सकती थी । पटक भी रही थी, लेकिन उससे क्या होना था ।

बैंजो ने उसे कसकर गोद में उठा लिया और खीं-खीं करके हंसता हुआ एक कमरे में घुस गया ।

नहीं छोड़ते । इसीलिए आज तक कभी नहीं फंसे । आज मछली की सबसे अंत में पुड़िया मैं बाधूंगा । इसीलिए उसका कत्ल भी मुझे ही करना होगा ।"

"ओह !" शंकरराव मुस्कुराया- "तो इस वास्ते मांग रहा है तू साइलेंसर वाली रिवाल्वर । अच्छी बात है, जो यह पुण्य का काम तू करे । ले, रिवाल्वर ले ।" शंकरराव ने रिवाल्वर निकालकर बाबू नाईक को दे दी ।

दस मिनट और उसी बेचैनी में गुजरे फिर कमरे का दरवाजा खुला और बैंजो हंसता-मुस्कुराता हुआ बाहर निकल आया । उसकी आंखों की भरपूर चमक बता रही थी कि वो पुड़िया बांधने में कामयाब हो गया है ।

बैंजो के निकलते ही शंकरराव अंदर घुस गया ।

□□□

पंद्रह मिनट बाद शंकरराव निकला, तो बाबू नाईक घुस गया ।

तभी वो घटना घटी, जिसने उन तीनों शैतानों की जिंदगी में वो बवंडर खड़ा किया कि वह त्राहि-त्राहि कर उठे ।

बाबू नाईक को अंजली के साथ कमरे में बंद हुए आधा घंटा होने को आ रहा था और वह अभी तक बाहर नहीं निकला था ।

"इस नाईक ने तो हद ही कर दी ।" बैंजो बोला- "यह तो पुड़िया बांधने में हम दोनों को भी मात दे रहा है ।"

"जरूर पट्ठे को मछली में कुछ ज्यादा जायका आ रहा होगा ।" शंकरराव मुस्कुराया- "इसीलिए चिपका हुआ होगा उससे ।"

"मुझे तो कुछ और बात लग रही है ।" बैंजो गंभीर था- "जरूर कुछ गड़बड़ है, वरना नाईक तो कभी इतना टाइम नहीं लगाता ।"

"और क्या बात हो सकती है ?"

वे दोनों अभी बातें ही कर रहे थे कि तभी एकाएक बख्तावरण में बाबू नाईक की कष्टप्रद चीख गूंजी और फिर जोर से चिल्लाहट उभरी- "बैंजो, शंकरराव ! जल्दी से मछली को पकड़ो, मछली भाग रही है ।"

बाबू नाईक के उन शब्दों को सुनते ही वह दोनों स्प्रिंग की तरह खड़े हो गए तथा दनदनाते हुए दरवाजा खोलकर उस कमरे में जा घुसे, जहाँ रासलीला का खेल चल रहा था । शुक्र था कि बाबू नाईक ने अंदर से दरवाजे की सिटकनी नहीं लगाई थी ।

अंदर घुसते ही उन्होंने देखा कि बाबू नाईक बुरी तरह हड़बड़ाया हुआ खड़ा है तथा जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रहा है ।

मछली कमरे में से नदारद थी ।

उस कमरे की सड़क की तरफ एक बड़ी-सी खिड़की खुली थी ।

"म...मछली भाग गई ।" बाबू नाईक उन दोनों को देखते ही आतंकित स्वर में चिल्लाया- "उस खिड़की में से भाग गई । उसे जल्दी से पकड़ो । वो किसी हालत में जिंदा नहीं बचनी चाहिए ।"

उस समय कोई भी सवाल करना बेवकूफी था । वे दोनों उसी खिड़की से दनादन बाहर सड़क पर कूदे और फिर एक-दूसरे से विपरीत दिशा में मछली को तलाशने के लिए सड़क पर भागे ।

“पता नहीं वह किस प्रकार पीछे बंधे अपने हाथ खोलने में कामयाब हो गई।” बाबू नाईक बोला- “फिर उसने मुझे अपने ऊपर से हटाकर एक तरफ कर दिया। मैंने समझा कि मछली पुड़िया बंधते-बंधते थक चुकी है, इसलिए ऐसा कर रही है। उसका ऐसा करना स्वाभाविक भी था, इसीलिए मैं पहले के समान आंखें बंद किए पड़ा रहा और अपनी पंचर हुई बॉडी को सामान्य अवस्था में लाने की कोशिश करता रहा। उसके बाद मैंने बड़ी सहूलियत से मछली की खोपड़ी में एक गोली उतार देनी थी। लेकिन मेरी आंखें तो तब खुलीं, जब मैंने फर्श पर उसके चलने की आहट सुनी। आँखें खुलते ही मुझे तेज झटका लगा।”

“क्यों ?” बैंजो चौंका- “झटका क्यों लगा ?”

“क्योंकि मछली ने बड़ी खामोशी से अपने सारे कपड़े पहन लिए थे। उसके हाथ खुले थे। उसने अपने मुंह में से सारा कपड़ा निकाल लिया था और वह बेहद खामोशी से खिड़की की तरफ बढ़ रही थी। मैं तुरंत रिवाल्वर निकालने के लिए अपनी पेंट की तरफ झपटा। मैं रिवाल्वर निकाल पाता, उससे पहले ही उसने घूमकर एक लात का प्रचंड प्रहार मेरे गुप्तांग पर किया। मेरे हलक से मर्मभेदी चीख निकल गयी। फिर मैंने मदद के लिए तुम लोगों को पुकारा, लेकिन इस बीच वो खिड़की खोलकर फरार हो चुकी थी।” बाबू नाईक ने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया, फिर परेशानी से डूबे स्वर में बोला- “और उसके बाद जो कुछ हुआ, वह तुम दोनों को भी मालूम है।”

बैंजो और शंकरराव के चेहरों पर सन्नाटा-सा छाता चला गया।

□□□

□□□

वे तीनों डोनापाला बीच वाले बंगले पर पहुंचे ।

“शिट ! आई डोंट अंडरस्टेंड !” बैंजो बंगले के विशाल ड्राइंगहॉल में इधर से उधर घूमता हुआ गुर्रा रहा था- “कि मछली भागी कैसे ? फरार कैसे हुई वो ?”

बाबू नाईक एक सोफा चेयर पर सिमटा-सा बैठा था और उसकी गर्दन अपराध भाव से झुकी हुई थी ।

“भई कुछ तो बता नाईक !” शंकरराव उसके नजदीक पहुंचकर आंदोलित मुद्रा में बोला- “आखिर पता तो चले कि क्या हुआ ?”

“म...मुझे मछली बहुत बढ़िया लगी थी ।”

“फिर ?” दोनों स्तब्ध भाव से उसकी कहानी सुनने लगे ।

“मैंने मछली की एक बार पुड़िया बांधी तो मेरे अंदर इच्छा हुई कि मैं उसकी एक बार और पुड़िया बांध दूं ।” बाबू नाईक सकुचाये स्वर में बोल रहा था- “ क्योंकि पता नहीं कि फिर वैसा ताजा और फ्रेश माल कब मिलता । इसीलिए मैंने अपने अंदर हिम्मत जुटाकर मछली की दोबारा पुड़िया बांध दी । लेकिन.. ।”

“लेकिन क्या ?” बैंजो के नेत्र फैले ।

“लेकिन उस दूसरी कोशिश में मेरी पूरी बॉडी पंचर हो गई । हाथ पैरों के सारे कस-बल निकल गए और मैं मछली के ऊपर आंखें बंद करके पड़ा जोर जोर से हांफने लगा । मेरी उस बदहवास और अचेतन अवस्था का मछली ने खूब फायदा उठाया ।”

“किस तरह फायदा उठाया ?” शंकरराव ने पूछा ।

वे तीनों अब सोफा सेट पर आमने-सामने गंभीर मुद्रा बनाए बैठे थे और उन तीनों का रंग उस वक्त बुरी तरह उड़ा हुआ था ।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था कि कोई मछली उनके हाथ से इस तरह भाग निकली हो ।

यह उनके लिए एक नई तथा आश्चर्यजनक घटना थी ।

"मैं समझता हूं ।" बाबू नाईक थोड़ा रुक कर सरसराये स्वर में बोला- "हमें इतना ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए ।"

"क्यों ?" शंकरराव और बैंजो ने हैरानी से बाबू नाईक को देखा ।

"अरे मछली भाग कर गई भी कहां होगी ?" बाबू नाईक थोड़ा तन कर बैठा-"मैं ऐसी घरेलू लड़कियों से खूब वाकिफ हूं । पुड़िया बंधने के बाद ऐसी मछलियां किसी को अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रहतीं । वह समझती हैं कि अब उनकी जिंदगी खत्म हो गई । इसीलिए वो किसी नदी में कूदकर जान दे देती हैं या फिर रेल के नीचे कटकर मर जाती हैं । फिर रोशनलाल की बेटी की तो हम तीनों ने बारी-बारी से पुड़िया बांधी है । तुम दोनों देख लेना, उसने अब तक आत्महत्या कर ली होगी ।"

"बात तो तुम्हारी किसी हद तक ठीक है नाईक !" शंकरराव सकुचाते हुए बोला- "लेकिन मुझे एक डर है ।"

"कैसा डर ?'

"अगर मछली दिलदार निकली नाईक । अगर उसने ऐसा न किया, जैसा तुम सोच रहे हो और वह कोल्हापुर से आते ही उस बुड्ढे रोशनलाल से मिल गई तथा उसे सब कुछ बता दिया, तब क्या होगा ?"

"तो कौन सी आफत आ जाएगी ?" नाईक एकाएक बुरी तरह गुर्रा पड़ा-"रोशनलाल क्या बिगड़ लेगा हमारा ? मार डालेगा साला ? जान ले लेगा हमारी ? क्या करेगा वो ? तुम दोनों एक बात समझ लो, रोशनलाल कल शाम तक कोल्हापुर से जैसे ही वापस आएगा, हमारे आदमी तुरंत उसकी निगरानी करना शुरू कर देंगे । अगर मछली जिंदा हुई और उसने रोशनलाल से मिलने की कोशिश की तो न मछली रहेगी और न रोशनलाल । दोनों की लाशें कुत्तों की तरह म्युनिसिपालिटी की किसी गटर में पड़ी सड़ रही होंगी ।"

"यह बढ़िया है ।" शंकरराव की आंखें चमक उठीं- "बाप-बेटी दोनों का पत्ता साफ ! दोनों खल्लास !"

"लेकिन एक बात अच्छी तरह समझ लो ।" बाबू नाईक पुनः बोला- "हमने रोशनलाल की ख्वामाखाह बलि नहीं चढ़ानी । तब तक उस बुड्ढे की अंतड़ियाँ नहीं फाड़नी, जब तक मछली उससे मिलने की कोशिश न करे । किसी से बेमतलब पंगा लेना गलत होता है । चाहे वह हमारे मुकाबले चूहा ही क्यों न हो ।"

"ठीक बात है ।" शंकरराव थोड़ा उत्साहित नजर आने लगा था ।

"क्या बात है बैंजो ?" बाबू नाईक ने खामोश बैठे बैंजो की तरफ देखा- "तू कैसे चुप-चुप है ? तू कैसे मौन व्रत धारण किए बैठा है ?"

"मैं वो सोच रहा हूं ।" बैंजो बोला- "जो तुम दोनों में से अभी तक कोई नहीं सोच रहा ।"

बाबू नाईक और शंकरराव दोनों के आश्चर्य से नेत्र फैले- "ऐसा क्या सोच रहा है भाई तू ?"

लेकिन गॉडफादर के नाम ने उन तीनों के बीच एक बार फिर दहशत तथा सनसनी का साम्राज्य स्थापित कर दिया था ।

□□□

गॉडफादर यानी बख्तावर सिंह !

गोवा अंडरवर्ल्ड का बेताज बादशाह, बख्तावर सिंह ।

भारत की सबसे बड़ी क्राइम सिंडिकेट का मालिक, बख्तावर सिंह ।

बख्तावर सिंह, जिसका गोवा में जुर्म का एक बड़ा साम्राज्य फैला हुआ है । बड़े-बड़े कैसीनो हैं । शराबखाने हैं । मटके तथा सट्टे का व्यापक बिजनेस है । जुर्म की दुनिया से जुड़े ढेरो धंधे करता है ।

सिंडिकेट की एक और विशेषता है । अंडरवर्ल्ड के पुराने ट्रेडीशन के मुताबिक बख्तावर सिंह की सिंडिकेट में न कोई ओहदेदार है । न कोई सिपहसालार । न कोई प्यादा । बख्तावर सिंह सिंडिकेट का खुद जज है और खुद ही जल्लाद । वह खुद ही फैसला सुनाता है और खुद ही जल्लाद बनकर सजा देता है ।

परंतु बख्तावर सिंह का कहर किसी बेगुनाह पर कभी नहीं टूटा ।

वह कमजोर और सताए हुए लोगों का हिमायती है । उनकी ताकत है । उनकी हिम्मत है । उन लोगों की तलवार है और ढाल है, जो खुद नहीं लड़ सकते । शायद इसीलिए गोवा के तमाम लोग बख्तावर सिंह को सम्मान से 'गॉडफादर' कहते हैं ।

जैकाल, बख्तावर सिंह का प्राइवेट सेक्रेटरी, जो गोवा अंडरवर्ल्ड से संबंधित समाचार उस तक पहुंचाता है ।

सिंडिकेट का हेडक्वार्टर है – ब्लैक हाउस । ओल्ड गोवा की पांच एकड़ भूमि में फैला ब्लैक हाउस । ताजमहल सफेद पत्थरों का बना हुआ है, वहीं ब्लैक हाउस बिल्कुल काले पत्थरों से बना है । ब्लैक हाउस को हर समय सिंडिकेट के पांच सौ सिक्योरिटी गार्ड घेरे रहते हैं ।

□□□

बख्तावर सिंह इस समय ब्लैक हाउस की शानदार ड्राइंग हॉल में ईजी चेयर पर बैठा हुआ था ।

एकदम सफेद कपड़ों में सजा-धजा ।

सफेद कोट । सफेद पेंट । सफेद शर्ट । यहां तक कि जूते भी सफेद ।

गोरा-चिट्टा रंग था बख्तावर सिंह का । उम्र चालीस-पैंतालीस साल और कद छ: फुट से भी निकलता हुआ । सफेद कपड़ों में उस समय वो अंडरवर्ल्ड का बादशाह नहीं बल्कि देश खूबसूरत प्रिंस ज्यादा नजर आ रहा था ।

बख्तावर सिंह हमेशा सफेद कपड़े पहनता था । सफेद कपड़े उसकी पहली और आखिरी पसंद थे ।

बख्तावर सिंह उस समय मटके के कारोबार से संबंधित एक फाइल देख रहा था कि तभी ड्राइंग हॉल का दरवाजा खुला और जैकाल ने अंदर कदम रखा ।

जैकाल लगभग चालीस वर्ष का काले रंग का व्यक्ति था । उसकी शक्ल भी कुछ भौंडी-सी थी । परन्तु जैकाल की बुद्धि के चर्चे अंडरवर्ल्ड में दूर-दूर तक फैले थे ।

जैकाल, बख्तावर सिंह के नजदीक आकर खड़ा हो गया ।

"कैसे आना हुआ जैकाल ?" बख्तावर सिंह ने जैकाल की तरफ देखा।

"एक बुरी खबर है गॉडफादर !"

बख्तावर सिंह की आंखों में एकाएक आश्चर्य के भाव उभर आए- "कैसी बुरी खबर ?"

सिंडिकेट के 23 नंबर कैसीनो के मैनेजर की हत्या हो गई।"

बख्तावर सिंह के सीने पर घूँसा-सा लगा। लेकिन वो शांत बैठा रहा। घटना चाहे कितनी बड़ी हो, परंतु धैर्य से नाईकना ही बख्तावर सिंह की विशिष्ट आदत थी।

"कैसे हुई हत्या ?" बख्तावर सिंह गंभीर हो उठा था।

पिछले तीन वर्षों में पहला केस था, जब सिंडिकेट के किसी आदमी की हत्या हुई।

"किसी ने मैनेजर के सीने में गोली मारी।" जैकाल बोला- "जो उसके दिल तक को फाड़ती हुई पार निकल गई। मैनेजर उस समय कैसीनो के अपने ऑफिस में था। बाहर कैसीनो के ढेर सारे स्टाफ के लोग तथा ग्राहक थे, लेकिन किसी ने गोली चलने की आवाज नहीं सुनी। इससे साबित होता है कि जिसने भी गोली चलाई, साइलेंसरयुक्त से गोली चलाई।"

"एनीथिंग ऐल्स ?"

"एक बात और गॉडफादर !" जैकाल अभी भी गर्दन नीचे किए खड़ा था।

"क्या ?"

"मैनेजर के ऑफिस की सेफ भी खुली पड़ी थी।" जैकाल थोड़ा हिचकिचाते हुए बोला- "उस सेफ में तीस लाख रुपए रखे थे गॉडफादर ! ल...लेकिन..।"

"लेकिन क्या ?"

"एक बड़े आश्चर्य की बात है। सेफ में से दो लाख रुपये गायब थे, जबकि बाकी अट्ठाइस लाख रुपए बिल्कुल सुरक्षित रखे थे, उन्हें हत्यारे ने छुआ भी नहीं था। यानी सिर्फ दो लाख रुपये के लिए किसी ने मैनेजर की जान ले ली।"

बख्तावर सिंह कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया तथा बेचैनीपूर्वक ड्राइंग हॉल में इधर-से-उधर टहलने लगा।

"क्या तुम्हें किसी पर शक है ?"

"नहीं गॉडफादर !" जैकाल पूर्ववत सम्मानजनक लहजे में बोला- "मुझे तो यही सोचकर हैरानी हो रही है कि किसी ने सिंडिकेट के आदमी की हत्या करने की जुर्रत दिखाई। वो भी सिंडिकेट के ठिकाने पर। सिंडिकेट के ऑफिस में। इतने ढेर सारे लोगों के बीच।"

बख्तावर सिंह अब जैकाल के सामने ठिठककर खड़ा हो गया। उसकी आंखों में थोड़ी सुर्खी उभर आई थी।

"वह आदमी बाहर का नहीं है जैकाल !" बख्तावर सिंह की आवाज में गुर्राहट उभरी- "वह जो भी है, सिंडिकेट का ही आदमी है। और हमारे 23 नंबर कैसीनो का ही कोई कर्मचारी है।"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं आप ?" भौचक्का रह गया जैकाल।

"मेरा अनुमान गलत नहीं हो सकता।" बख्तावर सिंह पूरे विश्वास के साथ बोला- "अगर वो बाहर का आदमी होता तो सेफ में अट्ठाइस लाख रुपए हरगिज नहीं छोड़ता। तब वो तीस के तीस लाख रुपए चुरा ले जाता। लेकिन उसने सिर्फ दो लाख चुराए, यही एक इस बात का सुबूत

अगले ही रोशनलाल शाम को चार बजे ही वापस लौट आया ।

वसूली का काम उसके कोल्हापुर पहुंचते ही हो गया था । महाजन इंटरप्राइजेज के मालिक ने उसे तुरंत ही पांच लाख का नगद रोकड़ा पकड़ा दिया था ।

रोशनलाल को रोकड़ा लेकर पहले दफ्तर जाना चाहिए था, लेकिन वो पहुंचा सीधा घर । सारी रात अंजली की फ़िक्र में वो सो नहीं सका था ।

हर पल उसका मुखड़ा रोशनलाल की आँखों के गिर्द मंडराता रहा ।

पहले कभी उसे अंजली की इतनी फिक्र नहीं सताई थी । परंतु न जाने क्यों उसे किसी अनिष्ट की आशंका कल से ही बार-बार हो रही थी ।

वह गोवा बसस्टैंड से बाहर निकलकर जैसे ही घर जाने के लिए एक टैक्सी में बैठा, उसी क्षण से एक काली कार उसके पीछे लग गई ।

□□□

घर पहुंचते ही हंगामे की शुरूआत हुई ।

उसके घर का दरवाजा खुला हुआ था और वहां धनराज तथा उसकी पत्नी बेहद चिंतित अवस्था में बैठे मानो उसी का इंतजार कर रहे थे ।

“क्या बात है ?” दोनों की मुख-मुद्रा रोशनलाल के दिल पर घूँसा-सा लगा-“आप लोग परेशान क्यों हैं ?”

उन दोनों को एकाएक सूझा नहीं कि वो रोशनलाल से क्या कहें ?

"अंजली कहां है ?" रोशनलाल का स्वर भय से कांपा था ।

दोनों फिर चुप ।

तब रोशनलाल ने नोटों से भरा बैग वहीं सोफे पर फेंका और फिर वह बदहवासों की तरह अंदर वाले कमरे की तरफ लपका ।

पलक झपकते ही रोशनलाल ने पूरा घर छान मारा था, लेकिन अंजली वहां होती, तो मिलती भी ।

"आप लोग कुछ बोलते क्यों नहीं ?" रोशनलाल पुन: उन दोनों के सामने आ खड़ा हुआ तथा बुरी तरह चीख पड़ा- "कहां है मेरी अंजली ?"

"व..वो रात से गायब है ?" धनराज सिन्हा धीमे स्वर में बोला ।

बम-सा फट गया रोशनलाल के दिमाग में ।

यूं लगा, जैसे धानी से कोई गोली चली हो ।

"अं..अंजली गायब है ।" रोशनलाल के आतंक और विस्मय से नेत्र फैले- "लेकिन कैसे ? कैसे हुई वो गायब ?"

"पता नहीं कैसे हुई गायब ।" धनराज सिन्हा चिंतित मुद्रा में बोला- "ग्यारह बजे तक तो उसने हम दोनों के साथ टी.वी. पर प्रोग्राम देखे थे । हमने कहा भी कि वह यहीं सो जाए परंतु अंजली बोली कि वह अपना घर अकेला नहीं छोड़ना चाहती । सुबह जब मेरी पत्नी नाश्ते के समय अंजली को यहां बुलाने आई तो देखा वो गायब है । तब से अब तक हम उसे कई जगह तलाश चुके हैं, लेकिन उसका कहीं कुछ पता नहीं । कॉलेज भी नहीं पहुंची । वहां भी फोन करके हमने पूछा था ।"

“फ..फिर कहां गयी अंजली ?” रोशनलाल के चेहरे पर एकाएक बुरी तरह से हवाइयां उड़ने लगीं ।

“गॉड नोज़ !” धनराज सिन्हा बोला- “हम फिलहाल तुम्हारा ही बेसब्री से इंतजार कर रहे थे ताकि तुम उसे कुछ और जगह तलाश कर सको । आखिर अंजली कहां-कहां जा सकती है, यह हमसे बेहतर तुम्हें मालूम होगा ।”

रोशनलाल बड़ी तेजी से टेलीफोन की तरफ झपटा । अगले ही पल उसकी उंगलियां जल्दी-जल्दी कोई नंबर डायल कर रही थीं ।

□□□

रोशनलाल ने आनन-फानन स्पीड से बारह-तेरह जगह फोन घुमाया और अंजली के विषय में पूछा, लेकिन अंजली कहीं न थी ।

न रिश्तेदारों में, न सहेलियों में ।

अब रोशनलाल की चिंता हद से ज्यादा बढ़ गयी । उसके चेहरे पर आतंक की जबरदस्त छाया डोलने लगी । वह धम्म से एक कुर्सी पर बैठ गया ।

“व...वो कहीं नहीं है ।” रोशनलाल की आवाज बुरी तरह से भराई- “म..मैं प्रत्येक उस जगह पूछ चुका हूं, जहां उसके जाने की जरा भी संभावना थी । न जाने वो कहां गई ।”

धनराज सिन्हा और उसकी पत्नी भी चिंता में डूबे हुए रोशनलाल के नजदीक बैठ गए ।

उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद थी कि रोशनलाल के आने के बाद अंजली का जरूर पता चल जाएगा । परंतु अब वह उम्मीद भी खत्म हो चुकी थी ।

काली कार निरंतर उसका पीछा कर रही थी । उसमें पांच गुंडे बैठे थे तथा सभी हथियारबंद थे ।

लेकिन रोशनलाल, अंजली के ख्यालों में इतनी बुरी तरह खोया हुआ था कि उसे खबर ही नहीं थी कि कोई कार भी उसके पीछे लगी है ।

□□□

रोशनलाल 'फाइनेंस कंपनी' वाले ऑफिस में जब दाखिल हुआ तो वहां आज भी केबिन में तीनों यमदूत बैठे थे ।

वे तीनों आजकल कुछ ज्यादा ही चिपके हुए थे ।

रोशनलाल ने केबिन में दाखिल होकर तीनों को नमस्ते की, फिर नोटों से भरा बैग टेबल पर रख दिया ।

"काम हो गया ?" बाबू नाईक ने आज रोशनलाल को कुछ अजीब सी नजरों से देखा ।

"हां साहब !" रोशनलाल ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "कोल्हापुर पहुंचते ही काम हो गया था । फौरन ही पांच लाख की पूरी वसूली हो गयी । यह लीजिये साहब !" रोशनलाल ने बैग खोलकर बाबू नाईक की तरफ बढ़ाया ।

बाबू नाईक ने एक सरसरी-सी दृष्टि नोटों से भरे बैग पर डाली और फिर बैग बंद करके कुर्सी के बराबर में रख दिया ।

"गुड !" बाबू नाईक खुश होकर बोला- "तूने आज बहुत बढ़िया समय पर यह काम किया है रोशनलाल । मुझे बहुत जरूरत थी रोकड़े की ।"

"रोकड़ा गिन तो लेते साहब !"

बाबू नाईक हंसा- "मैं अच्छी तरह जानता हूं रोशनलाल, हरामखोरी तेरी फितरत नहीं है। पराये पैसे पर तू कभी गंदी निगाह नहीं डालता।"

"आदमी का दिल कब बदफेली पर उतर आए साहब, क्या पता चलता है ?" रोशनलाल चिंतित अवस्था में ही बोला- "आखिर आदमी की हकीकत उसके चेहरे पर थोड़े ही लिखी होती है।"

बाबू नाईक की भक्क से हंसी उड़ गई । उसने हकबकाकर शंकरराव तथा बैंजो की तरफ देखा, उनका भी कुछ ऐसा ही हाल था।

"व्हाट हैप्पंड रोशनलाल ?" बैंजो ने तुरंत विषय परिवर्तन किया- "आज कुछ ज्यादा ही परेशान नजर आ रहा है। बातें भी अजीब-अजीब कर रहा है, क्या हुआ ?"

रोशनलाल ने गर्दन झुका ली।

उसके चेहरे पर दुःख की बेपनाह लकीरें खिंचती चली गई थीं।

"कोई बात तो जरूर है।" शंकरराव कुर्सी छोड़कर रोशनलाल के बराबर में जा खड़ा हुआ तथा उसने स्नेह से रोशनलाल के कंधों पर हाथ रखा- "बता, क्या बात है ? हमें नहीं बतायेगा तो किसे बताएगा ? आखिर हम तेरे अपने हैं। तेरे दुःख दर्द के साथी हैं।"

"स..साहब !" रोशनलाल एकदम शंकरराव के कंधे से लग गया और बुरी तरह फफक पड़ा- "मेरी बेटी सुबह से गायब है साहब ! मैं उसी की चिंता में घुला जा रहा हूं।"

"क...क्या ?" तीनों यमदूतों के मुंह बेपनाह आश्चर्य से खुले- "तेरी बेटी गायब है ?"

"हां, साहब ! उसका कहीं कुछ पता नहीं चल रहा ।" रोशनलाल सुबकते हुए बोला- "मैं हर जगह उसे तलाश कर चुका हूं । कोई जगह नहीं छोड़ी ।"

"ओह !" बाबू नाईक उसी की तरह फिक्रमंद होता हुआ बोला- "तेरी बेटी तो शायद वैसे भी जवान है ।"

"हाँ साहब !"

"पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराई ?"

"अभी तो नहीं कराई ।" रोशनलाल संभलकर सीधा खड़ा हुआ तथा अपनी आंखों के आंसू पोंछे- "शाम तक और उसके लौटने का इंतजार देख रहा हूं । अगर तब भी नहीं लौटी तो पुलिस स्टेशन में भी रिपोर्ट दर्ज कराऊंगा ।"

"लड़की नाराज तो नहीं थी तेरे से कुछ ?" बैंजो ने पूछा ।

"बिल्कुल भी नहीं साहब !" रोशनलाल दीन-हीन स्वर में बोला- "कल एकदम हंसी-खुशी छोड़ कर गया था । रात ग्यारह बजे तक उसने पड़ोस में सिन्हा साहब के यहां टी.वी. भी देखा था । सुबह जब मिसेज सिन्हा उसे नाश्ते के लिए बुलाने गयीं तो वह घर से गायब थी ।"

तीनों ने ऐसी सूरत बना ली, जैसे रोशनलाल की नहीं बल्कि उन तीनों की बेटियां गायब हो गई हों ।

"मामला कोई सीधा-सादा नहीं है रोशनलाल ।" बाबू नाईक बोला- "मुझे तो किसी बड़े खतरे का अंदेशा हो रहा है । एक काम कर, पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज करा दे ।"

"कुछ घंटे और इंतजार कर लूं साहब ।"

"अगर किसी मदद की जरूरत हो ।" इस बार शंकरराव ने कहा- "तो हमें बे-हिचक बोलना । अगर तेरी बेटी वापस मिलती है, तो हमें खुशी होगी ।"

"आपकी बहुत-बहुत मेहरबानी साहब ! अब मैं चलता हूं।"

"ठीक है, जा। और दफ्तर में हाजिरी की फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है। पहले बेटी को ढूंढ। दफ्तर में हाजिरी तो सारी उम्र देनी है।"

"थैंक यू साहब !" रोशनलाल तीनों का आभार प्रकट करता हुआ केबिन से बाहर निकल गया।

□□□

वह जब स्कूटर पर घर वापस लौट रहा था, तभी उसकी दृष्टि अपना पीछा करती काली कार पर पड़ी।

सन्न रह गया रोशनलाल।

पलक झपकते ही वह उस काली कार को पहचान गया। आखिर उन लोगों की नौकरी करते हुए उसे इतने साल हो चुके थे। वह उनके एक-एक आदमी को पहचानता था। एक-एक वाहन को पहचानता था।

तुरंत रोशनलाल के दिमाग में यह सवाल कौंधा, उसका पीछा क्यों किया जा रहा है ?

क्या बात है ?

पिछले दिनों घटी सारी घटनाएं रोशनलाल के दिमाग में ताजा हो उठीं। एक-एक घटना उसके दिमाग में न्यूज़ रील की तरह चलने लगी। बैंजो का अंजली के विषय में बात करना। फिर कल सुबह-सुबह ही बाबू नाईक और शंकरराव का उसके घर आना। उसके बाद उसे एकाएक कोल्हापुर भेजना।

'त...तो क्या अंजली के गायब होने के पीछे इन्हीं तीनों का हाथ था ?'

"अब तो मुझे लग रहा है कि कोल्हापुर पेमेंट लेने भी उन बदमाशों ने मुझे जानबूझ कर भेजा था, ताकि अंजली घर में अकेली रह जाए। मुझे पहले ही उन गुंडों की नीयत भांप लेनी चाहिए थी।"

रोशनलाल उत्तेजनापूर्ण अंदाज में ही धनराज सिन्हा को कल-परसों की सारी घटनाएं सुनाता चला गया।

उन घटनाओं को सुनकर सिन्हा की आंखों में बेचैनी भर आई।

□□□

"अब मेरी बेटी वापस नहीं आएगी।" रोशनलाल दोनों हथेलियों में अपना मुंह छुपाकर फफक पड़ा- "आप देख लेना सिन्हा साहब, अब मेरी अंजली वापस नहीं आएगी। उन्होंने जरूर मेरी मासूम बच्ची के साथ कुछ बुरा काम किया होगा। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं। वह बहुत बुरे लोग हैं।"

"धीरज से काम लो रोशनलाल।" धनराज सिन्हा ने उसकी पीठ थपथपाई- "ऐसी बातें अपनी जुबान से मत निकालो। भगवान करे ऐसा कुछ न हुआ हो। लेट्स हॉप, हमारी अंजली आएगी, जरूर आएगी।"

"लेकिन मुझे उम्मीद नहीं सिन्हा साहब।" रोशनलाल बुरी तरह फफक रहा था- "न जाने से उन शैतानों ने मेरी बच्ची के साथ क्या किया होगा ? वह कभी कोई सुबूत नहीं छोड़ते सिन्हा साहब।" रोशनलाल रोए जा रहा था और अंजली तथा उन तीनों के विषय में न जाने क्या-क्या बोले जा रहा था।

थोड़ी देर बाद धनराज सिगरेट का पैकेट लाने के बहाने घर से बाहर निकला और नजदीक ही बनी एक पनवाड़ी की दुकान पर गया । काली कार उस समय गली के नुक्कड़ पर ही खड़ी थी । तीन आदमी कार के अंदर थे, जबकि दो आदमी कार के बाहर थे । और कार का पिछला पहिया खोल रखा था, जो कि बेमतलब खोला था ।

पांचो शक्ल-सूरत से खतरनाक किस्म के गुंडे नजर आ रहे थे ।

धनराज सिन्हा की चिंता कुछ और बढ़ गई ।

उसे भी लगने लगा कि रोशनलाल का अनुमान शायद ठीक ही है ।

देर रात तक भी वह काली कार वहीं गली के नुक्कड़ पर खड़ी रही थी । इसीलिए धनराज सिन्हा ने रोशनलाल को अपने घर जाकर सोने की इजाजत नहीं दी । उसने रोशनलाल को अपने बेडरूम में नजदीक ही लिटाया । सिन्हा नहीं चाहता था कि रोशनलाल अपने घर में अकेला जाकर सोए और वह पांचों गुंडे उसके साथ कोई ऊंच-नीच करें ।

उस रात तीनों में से किसी को भी नींद न आई ।

तीनों अंजली के विषय में सोच रहे थे, कहां होगी ? कैसी होगी ?

रात का समय । एक बजा था, तभी किसी ने जोर-जोर से कुछ खटखटाया ।

तीनों एकदम उछलकर बैठ गए ।

“शायद दरवाजे पर कोई है ?” धनराज सिन्हा बोला ।

अंजली को देखकर उनकी खुशी और बेतहाशा बढ़ गई । धनराज सिन्हा और रोशनलाल ने फौरन अंजली के दोनों हाथ पकड़कर उसे खिड़की के रास्ते अंदर कमरे में खींच लिया ।

अंजली झट से अंदर आ गई ।

□□□

जैकाल 23 नंबर कैसीनो पहुंचा ।

उसे बख्तावर सिंह की यह बात पूरी तरह तर्कसंगत लगी थी कि जरूर मैनेजर की हत्या कैसीनो के ही किसी आदमी ने की है ।

पुलिस केस बनने से पहले ही मैनेजर की लाश ठिकाने लगाई जा चुकी थी और मैनेजर का केबिन व्यवस्थित कर दिया गया था ।

जैकाल मैनेजर के केबिन में जा बैठा । उसने कैसीनो के एक-एक कर्मचारी को बारी-बारी अंदर बुलाकर हत्या के विषय में गहन पूछताछ शुरू की ।

लगभग सात कर्मचारियों से पूछ-ताछ करने के बावजूद उसे कोई रिजल्ट न निकलता दिखाई दिया ।

तभी कैसीनो के आठवें कर्मचारी ने केबिन में कदम रखा । उसका नाम बब्बन था और वह कैसीनो में टोकन सप्लायर था । बब्बन जैकाल के सामने जाकर खड़ा हो गया । सिंडिकेट के गुंडों के बीच जैकाल का भी ऐसा दबदबा था कि बड़े-बड़े गुंडे उसके सामने खड़े होते हुए कांपते थे ।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" जैकाल ने उसे कठोर निगाहों से घूरा ।

"बब्बन नाम है साहब !"

"क्या काम करते हो ?'"

"कैसीनो में टोकन सप्लायर हूं साहब !"

"क्या तुम बता सकते हो कि मैनेजर की हत्या किसने की ?"

एकाएक बब्बन के चेहरे पर घबराहट के भाव परिलक्षित हुए ।

जैकाल उसी पल भांप गया कि बब्बन जरूर कुछ जानता है ।

"तुम्हें कुछ मालूम है तो साफ-साफ बताओ ।" जैकाल ने अपनी आवाज में थोड़ी नरमी पैदा की- "तुम्हारा नाम पूरी तरह गुप्त रखा जाएगा ।"

"साहब मैं सब-कुछ जानता हूं ।" बब्बन उत्तेजनापूर्ण स्वर में बोला- "मैं आपको सब-कुछ बता सकता हूं ।"

"किसने की है हत्या ?"

"मुझे इस बात का डर है साहब कि कहीं हत्यारे को मेरे विषय में पता न लग जाए कि मैंने उसका भंडाफोड़ किया ।"

"उसे कुछ पता नहीं लगेगा ।" जैकाल गुर्राया- "सिंडिकेट की ताकत तुम्हारे साथ है । गॉडफादर की ताकत तुम्हारे साथ है ।"

गॉडफादर की ताकत के नाम बब्बन के चेहरे पर विश्वास के भाव उभरे ।

"साहब !" बब्बन थोड़ा आगे को झुक गया और फुसफुसाया- "यह हत्या जरूर दिवाकर ने की है ।"

"कौन दिवाकर ?"

"वह इसी कैसीनो में मेरी तरह ही टोकन सप्लायर है । हिप्पियों की तरह उसके बड़े-बड़े बाल हैं । दोनों कानों में

हाथी दांत के मोटे-मोटे कुंडल पहनता है । दिवाकर को शराब तथा औरत का बहुत शौक है साहब । वह रोजाना 'पर्ल बार' में जाकर बढ़िया वाली इंग्लिश शराब पीता है । इसके अलावा उसे रोजाना रात को नई-नई हाईप्राइज्ड कॉलगर्ल भी चाहिए ।"

जैकाल की आंखों में असमंजसता के भाव उभर आए ।

"लेकिन इन सब बातों का मैनेजर की हत्या से क्या ताल्लुक ?"

"ताल्लुक है साहब !" बब्बन फुसफुसाए स्वर में ही बोला- "गहरा ताल्लुक है । रोजाना बढ़िया वाली इंग्लिश दारु और ऊंचे दर्जे की कॉलगर्ल फ्री में तो नहीं मिल जाती । उसके लिए मोटा नावा खर्च करना पड़ता है । और दिवाकर की सोर्स ऑफ इनकम इतनी नहीं है कि इतना मोटा खर्चा बर्दाश्त कर सके ।"

"फिर कहां से आता है दिवाकर के पास पैसा ?"

"वह अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए जगन भाई से रुपया उधार लेता है साहब । जगन भाई को तो आप जानते ही होओगे । वह अंडरवर्ल्ड के मामूली दादा से लेकर टॉप के दादा तक को रुपया ब्याज पर देता है । दिवाकर शुरु-शुरु में तो चोरी-चकारी करके उनका रुपया लौटा देता था । लेकिन पिछले कुछ महीनों में उसने तीन किस्तों में जगन भाई से दो लाख उधार ले लिया और सब-का-सब उड़ा दिया ।"

"दो लाख ? जैकाल चिहुंका ।

"हाँ, साहब ।" ऊपर से दिवाकर की किस्मत भी इन दिनों उसका साथ नहीं दे रही थी- "वह चोरी करने के लिए जहां भी जाता, वहीं नाकाम होता । जगन भाई का रोकड़ा

गारंटी से कहता है कि मैनेजर साहब की हत्या हंड्रेड परसेंट दिवाकर ने ही की है।"

जैकाल सोच में डूब गया।

बब्बन का शक उसे भी काफी हद तक सटीक लग रहा था।

"ठीक है।" जैकाल बोला- "अब तुम जा सकते हो। और यह बातें किसी को मत बताना।"

"मुझे यह बातें करके मरना है क्या साहब ?" बब्बन बोला- "दिवाकर एक खून कर चुका है, दूसरा खून करते उसे भला कितनी देर लगेगी ?"

फिर बब्बन खामोशी से बाहर निकल गया।

□□□

बब्बन के जाते ही जैकाल ने जगन भाई को फोन मिलाया।

जगन भाई एक खतरनाक किल्लर था। वह बड़े-बड़े दादाओं को न सिर्फ रुपया देना जानता था बल्कि उनसे रुपया वसूल करना भी जानता था। अंडरवर्ल्ड में रोकड़े के लेन-देन का कारोबार करते उसे कई साल हो गए थे, लेकिन आज तक किसी दादा को उसका एक पैसा मारने की हिम्मत नहीं हुई थी।

जैकाल ने जगन भाई से दिवाकर के विषय में बात की।

जगन भाई ने तुरंत बता दिया कि दिवाकर उसका सारा रोकड़ा ब्याज सहित वापस कर चुका है और रोकड़े कि वो वापस उसने आज ही की है।

अब सब कुछ स्पष्ट हो चुका था। अब इस बात में शक की कोई गुंजाइश बाकी नहीं थी कि दिवाकर ही हत्यारा है
।

जैकाल ने रिसीवर आहिस्ता से क्रेडिल पर रख दिया। फिर वो केबिन से बाहर निकला।

दिवाकर उस समय काउंटर पर खड़ा एक ट्रे में टोकन रख रहा था।

जैकाल ने उसे फौरन पहचान लिया। उसका हुलिया ही ऐसा था कि कोई भी उसे फौरन पहचान सकता था।

□□□

अंजली को देखते ही वे तीनों स्तब्ध थे। हैरान! भौचक्के और खुश! अंजली खिड़की के रास्ते अंदर आते ही रोशनलाल से लिपट गई थी तथा हिचकियों से रोते हुए उसने अपनी सारी दुःख भरी कहानी सुना डाली।

तीनों की खुशी पल भर में ही रफूचक्कर हो गई।

यूं लगा, जैसे आसमान से बिजली गड़गड़ाहट करके उन तीनों के ऊपर गिरी हो।

रोशनलाल की सबसे दयनीय स्थिति थी। अपनी बेटी की हालत पर न तो उसकी आंखों से आंसू ही निकल पा रहे थे और न ही वो उसे सांत्वना दे पा रहा था।

"उन्होंने मुझे बारी-बारी लूटा पापा।" अंजली फूट-फूट कर रो रही थी- "तीनों ने मिलकर मुझे बेइज्जत किया। वे लोग तो शायद मुझे मार डालते, लेकिन मैं भाग खड़ी हुई।"

रोशनलाल को पत्थर की बूत की तरह खड़े देख धनराज सिन्हा ने आगे बढ़कर अंजली को संभाला।

"कुछ नहीं हुआ तेरे साथ।" धनराज सिन्हा उसे सांत्वना देता हुआ बोला- "वह एक बुरा सपना था। वह शैतान सपने में आए थे अंजली। भूल जा, भूल जा उन्हें।"

किया है ताकि मुझे देखते ही वो मार दें। इसीलिए मैं खिड़की से अंदर आयी।"

"ओह!" धनराज सिन्हा के होंठ गोल दायरे में सिकुड़ गये।

अब उसकी समझ में आया कि वह गुंडे क्यों रोशनलाल की निगरानी कर रहे थे।

वह दरअसल रोशनलाल के नहीं, बल्कि अंजली के खून के प्यासे थे।

"लेकिन तुम्हें खंडहरों में छिपने की क्या जरूरत थी?" धनराज सिन्हा बोला-"तुम्हें रात ही यहां हमारे पास आ जाना चाहिए था।"

"म...मैं सोच रही थी आपके पास आने के लिए।" अंजली जोर-जोर से सुबकियाँ लेते हुए ही बोली- "लेकिन फिर मैं डर गई। मैंने सोचा कि कहीं वह तीनों शैतान मेरे पीछे-पीछे यहाँ भी न आ जाएँ और मेरे साथ-साथ आप लोगों की भी हत्या न कर डालें।"

"तुमने सुबह से कुछ खाया या नहीं?"

अंजली कुछ न बोली। वह सिर्फ सुबकियाँ ले-लेकर रोती रही।

धनराज सिन्हा ने अपनी पत्नी को खाना लाने का इशारा किया।

मिसेज सिन्हा अंजली को आहिस्ता से लिटा कर उठीं तथा फिर किचन से एक ट्रे में खाना ले आई।

"लो।" धनराज सिन्हा बोला- "पहले कुछ खा लो। सुबह से भूखी हो।"

परंतु अंजली चुपचाप पड़ी रोती रही।

मिसेज सिन्हा ने उसे संभाल कर उठाया और फिर अपने हाथ से रोटी के कुछ कौर तोड़कर खिलाए ।

अंजली पूरी एक रोटी भी न खा सकी । वह खाना बाद में खाती थी और उसकी आंखों से आंसू पहले झड़ते थे ।

"म...मैं बदला लूंगी ।" एकाएक अंजली बुरी तरह गुर्रा पड़ी- "मैं उन तीनों को सजा कराऊंगी अंकल ।"

"पहले अपने आप को संभालो अंजली ।" धनराज सिन्हा बोला- "अपने होश काबू करो ।"

"मैं पूरी तरह होश में हूं अंकल !" अंजली के चेहरे पर अब प्रतिशोध की ज्वाला धधकने लगी । उसने अपने आंसू पोंछ डाले- "मैं उन तीनों को कोर्ट में खड़ा करूंगी । उनके खिलाफ रिपोर्ट लिखावाऊंगी । पापा.. ।" अंजली दौड़कर रोशनलाल के पास पहुंची और उसने रोशनलाल के कंधे पकड़कर झंझोड़ डाले- "आप उन लोगों को सजा कराने में मेरी मदद करेंगे न पापा ? मैं चाहती हूं कि उन तीनों का वजूद, उनकी हस्ती, इस दुनिया से मिट जाए ।"

रोशनलाल हक्के-बक्के अंदाज में अंजली को देखने लगा ।

"बोलिए पापा !" अंजली चिल्लाई- "कुछ बोलते क्यों नहीं आप ? खामोश क्यों हैं ?"

"आई विल टेल यू अंजली ।" धनराज सिन्हा आगे बढ़कर बोला- "तुम्हारे पापा क्यों खामोश हैं । क्योंकि उन तीनों दादाओं को सजा करानी कोई आसान काम नहीं है । वे तीनों गोवा अंडरवर्ल्ड के बड़े दादा हैं । पैसे वाले हैं । रसूख वाले हैं ।"

"य..यह आप कह रहे हैं अंकल ?" अंजली ने भौचक्के अंदाज में धनराज सिन्हा को देखा ।

"हां, यह मैं कह रहा हूं ।" धनराज सिन्हा के चेहरे पर ग्लानि के भाव थे- "कानून का पहरेदार होकर कह रहा हूं । क्योंकि कानून की कमजोरियों से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं । मैं जानता हूँ कि पैसे तथा रुतबे वाले लोग कानून में किस-किस जगह सुराख करके अंदर घुस जाते हैं और फिर कानून को अपने हाथों की कठपुतली बना डालते हैं । ऐसे लोगों से जीतना बहुत मुश्किल है अंजली !"

"पापा ।" अंजली ने रोशनलाल को पुनः बुरी तरह झंझोड़ा- "क्या आप भी वही कहते हैं, जो अंकल कह रहे हैं ?"

"अगर मेरा बस चले बेटी ।" रोशनलाल के मुंह से दहकते हुए शब्द निकले- "तो मैं भी उन तीनों को फांसी के फंदे पर ले जाकर खड़ा कर दूं । कत्ल कर डालू उन्हें । कैसी आग इस वक्त मेरे अंदर लग रही है, उसका अंदाजा तू नहीं लगा सकती है । लेकिन सच्चाई वही है, जो सिन्हा साहब कह रहे हैं । गरीब और मजलूम आदमी की आवाज आज की अदालत में नोटों के नगाड़े की नीचे दबकर रह जाती है ।"

"तो क्या एक औरत की आबरु की कोई कीमत नहीं ? मेरे लिए अब कोई न्याय नहीं किया ? क्या वे तीनों शैतान मुझे यूं बेइज्जत करने के बाद भी समाज में खुलेआम घूमेंगे ?"

धनराज सिन्हा और रोशनलाल, दोनों चुप ।

दोनों में से किसी के पास अंजली के सवाल का कोई जवाब न था ।

उसका क्रोध देखकर धनराज सिन्हा और रोशनलाल ने भी उस रात एक महत्वपूर्ण फैसला किया । तीनों के खिलाफ पुलिस स्टेशन में रिपोर्ट दर्ज कराने का फैसला ।

□□□

"यू आर राइट गॉडफादर !" जैकाल, बख्तावर सिंह के सामने सम्मानजनक मुद्रा में जाकर खड़ा हो गया- "कैसीनो के मैनेजर का क़त्ल सिंडिकेट के ही एक आदमी ने किया है ।"

"कौन है वो बेवकूफ ?" बख्तावर सिंह का चेहरा थोड़ा कठोर हो उठा ।

"दिवाकर नाम का एक आदमी है गॉडफादर !" जैकाल बोला- "सिंडिकेट के 23 नंबर कैसीनो में ही टोकन सप्लायर है । मुझे उसके विषय में काफी बातें मालूम हुईं । जिनसे साबित होता है कि दो लाख रुपये हासिल करने के लिए उसने मैनेजर की हत्या की ।"

बख्तावर सिंह हमेशा की भांति इस समय भी सफेद सूट में सजा-धजा बैठा था । उसके सामने सिंडिकेट से संबंधित कुछ फाइलें पड़ी थीं ।

"दो लाख रुपये हासिल करने के लिए हत्या की ?" बख्तावर सिंह हैरत से बोला- "लेकिन क्यों ?"

"दरअसल उसने जगन भाई से दो लाख रुपये का कर्ज ले लिया था गॉडफादर ।" जैकाल बोला- "जिसे वो चुका नहीं पा रहा था । उधर जगन भाई ने वसूली न हो पाने के कारण तंग आकर रुपया चुकाने की एक आखिरी तारीख मुकर्रर कर दी थी और दिवाकर को धमकी दी थी कि या तो

वह उसे उस तारीख तक दो लाख रुपये लौटा दे वरना वो उसे चीर डालेगा ।”

बख्तावर सिंह ने सामने टेबल पर रखा स्मोकिंग पाइप उठा लिया और फिर उसे सोने की एक म्यूजिकल लाइटर से सुलगाया ।

“आखिरी तारीख क्या मुकर्रर की थी जगन ने ?” बख्तावर सिंह पाइप में से धुंआ छोड़ता हुआ बोला ।

“आज की ही तारीख मुकर्रर की थी । आज का दिन दिवाकर के पास आखिरी दिन था ।”

“ओह ! क्या दिवाकर ने जगन को उसकी रकम लौटा दी ?”

“यस गॉडफादर ! मैंने जगन भाई से फोन पर बात की थी । दिवाकर उसकी सारी रकम लौटा चुका है । इसके अलावा कुछ और ऐसी बातें भी हैं, जिनसे साबित होता है कि दिवाकर ही कैसीनो के मैनेजर का हत्यारा है ।”

“मुझे सब बातें बताओ ।” बख्तावर सिंह ने पाइप हाथ में ले लिया- “मैं सब-कुछ जानना चाहता हूं ।”

जैकाल को बब्बन से जो बातें मालूम हुई थीं, वे सब उसने बख्तावर सिंह को बता दीं ।

बख्तावर सिंह ने एक-एक बात ध्यान से सुनी ।

“यह बात बिल्कुल कंफर्म है ।” बख्तावर सिंह ने पूछा- “कि दिवाकर रोज शाम को ‘पर्ल बार’ में जाकर शराब पीता है ?”

“बब्बन तो यही बता रहा था गॉडफादर ।”

“दिवाकर की कोई खास पहचान ?”

“उसके हिप्पियों की तरह बहुत लंबे-लंबे बाल हैं । इसके अलावा दिवाकर की सबसे खास पहचान यह है कि

वह अपने दोनों कानों में हाथी दांत के मोटे-मोटे कुंडल पहनता है ।”

“ठीक है ।” बख्तावर सिंह ने पाइप दोबारा अपने मुंह में लगा लिया- “अब तुम जा सकते हो । तुम्हारा काम खत्म हुआ । अब जो करना है, मुझे करना है ।”

“ओके गॉडफादर !” जैकाल ने बख्तावर सिंह के सामने सम्मान से सिर झुकाया और फिर उस बेहद वैभवशाली तथा विशाल ड्राइंग हॉल से बाहर निकल गया ।

बख्तावर सिंह को अब क्या करना था, यह बात जैकाल से बेहतर कोई नहीं जानता था । जैकाल को अच्छी तरह मालूम था कि बख्तावर सिंह बाहर से जितना शांत नजर आता है, वास्तव में वह उससे कई गुना ज्यादा खतरनाक है ।

□□□

“आप इन लोगों के खिलाफ नामदर्ज रिपोर्ट लिखवा रहे हैं ?” पुलिस इंस्पेक्टर; बाबू नाईक, शंकरराव और बैंजो का नाम सुनकर यूं उछला, जैसे उसे करंट लग गया था- “अ...आप शायद जानते नहीं कि ये लोग कौन हैं ?”

“अच्छी तरह जानता हूं मैं इन कमीनों को ।” रोशनलाल शेर की तरह गुर्रा पड़ा- “कई बरस इन्हीं हरामजादों के यहां नौकरी की है । रोटी के चंद टुकड़ों के लिए इनके पापों में हिस्सेदार बना । इनके काले धंधों पर पर्दा डाला । लेकिन नहीं जानता था कि एक दिन ये मेरी ईमानदारी और वफादारी का सिला मेरी ही मासूम बच्ची की आबरू लूट कर देंगे ।”

लेकिन काली कार में मौजूद गुंडों को यह बिल्कुल खबर नहीं थी कि अंजली उन तक पहुंच चुकी है । वरना वह किसी भी हालत में उन्हें पुलिस स्टेशन न जाने देते । तब वो बीच में ही चीर-फाड़ डालते ।

धनराज सिन्हा कार लेकर पुलिस स्टेशन के अंदर दाखिल हो गया, जबकि काली कार पुलिस स्टेशन से थोड़े फासले पर ही खड़ी हो गई ।

"य...यह क्या ?" पुलिस इंस्पेक्टर, धनराज सिन्हा द्वारा लिखी गई एप्लीकेशन पढ़ते हुए चौंका- "इसमें तो आपने यह भी लिखा है वकील साहब कि अगर रोशनलाल जी या अंजली पर भविष्य में कोई जानलेवा हमला होता है अथवा किसी हमले में इनकी जान जाती है तो इसके जिम्मेदार बाबू नाईक, शंकरराव और बैंजो होंगे । उस अवस्था में उन तीनों पर हत्या का अभियोग लगाकर दफा तीन सौ दो के अंतर्गत मुकदमा चलाया जाए ।"

"बिल्कुल ठीक लिखा है मैंने ।" धनराज सिन्हा बोला- "क्योंकि ऐसे दादाओं की जात से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूँ इंस्पेक्टर साहब । मैं जानता हूं कि ऐसे खतरनाक दादा अपने खिलाफ दर्ज केस को खत्म करने के लिए कितनी निर्ममता से अपने दुश्मनों को मार डालते हैं । इसीलिए मैंने यह 'क्लू' जोड़ दिया है ताकि वे तीनों दादा इनकी जान लेने की कोशिश न कर सकें । वैसे भी आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि कल से एक काली कार रोशनलाल जी के पीछे लगी हुई है, जिसमें पांच गुंडे सवार हैं । इस समय भी वह कार बाहर ही खड़ी है । अगर आपको यकीन न आए तो आप जाकर देख सकते हैं ।"

पुलिस इंस्पेक्टर हैरानी से धनराज सिन्हा को देखने लगा, जबकि एफ.आई.आर. दर्ज होने के बाद धनराज ने रिपोर्ट की एक कॉपी अपने पास रखी थी, फिर वह रोशनलाल तथा अंजली के साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

"ठीक है इंस्पेक्टर साहब !" धनराज सिंह ने पुलिस इंस्पेक्टर से कसकर हाथ मिलाया- "अब हम लोग चलते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप जल्दी ही इस रिपोर्ट पर एक्शन लेंगे और उन तीनों दादाओं को लॉकअप में बंद करेंगे।"

"आप बेफिक्र रहें वकील साहब !" इंस्पेक्टर भरपूर जोश के साथ बोला- "मैं अभी उन तीनों को अरेस्ट करने की तैयारी करता हूं।"

"गुड ! हम आपका एहसान कभी नहीं भूलेंगे।"

फिर धनराज सिन्हा जिस तरह अंजली को कार में छिपाकर वहां तक लाया था, उसी तरह दोबारा छिपाकर पुलिस स्टेशन से बाहर निकल गया।

□□□

उनके जाते ही इंस्पेक्टर के चेहरे के भाव बड़ी तेजी से परिवर्तित हुए थे।

वो एकाएक बहुत घबराया हुआ नजर आने लगा और उसके चेहरे पर बेपनाह चिंता की लकीरें उभर आयीं। एक भी सेकंड बर्बाद किए बिना वो फुर्ती से टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट की तरफ झटका था तथा फिर उसने आनन-फानन कोई नंबर डायल किया।

"कौन ? नाईक साहब ?" अगले ही पल इंस्पेक्टर के मुंह से शब्द यूं निकले, जैसे तो तोप में से गोला छूटा हो-

"सब गड़बड़ हो चुकी है नाईक साहब । मैं इंस्पेक्टर जय सिंह बोल रहा हूं ।"

'गड़बड़' के नाम पर दूसरी तरफ भी हड़बड़ाहट का माहौल पैदा हुआ ।

"क...कैसी गड़बड़ ?" तुरंत बाबू नाईक का चौंकता स्वर टेलीफोन लाइन पर उभरा- "कैसी गड़बड़ हो चुकी है ?"

"नाईक साहब, आपने कहा था कि अगर रोशनलाल अपनी बेटी के गायब होने की रिपोर्ट दर्ज कराने आए तो मैं रिपोर्ट दर्ज न करूं । अभी रोशनलाल आया था । अपनी बेटी को साथ लेकर आया था नाईक साहब ।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम ?" चीख पड़ा बाबू नाईक- "अभी अंजली उस तक कहां पहुंची है ? हमारे पांच आदमी इसी वजह से हर पल रोशनलाल पर निगाह रखे हैं ।"

"आपके सारे आदमी गधे हैं नाईक साहब ।" इंस्पेक्टर झल्लाकर बोला-"अंजली न सिर्फ रोशनलाल तक पहुंच चुकी है बल्कि रात ही पहुँच गई थी और आपके आदमियों को कुछ खबर नहीं । यहां तक कि रोशनलाल, अंजली के साथ पुलिस स्टेशन तक आया । वह तब भी उन दोनों का रास्ते में ही काम-तमाम कर सके ।"

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया ।

"अब सारे पत्ते आपके हाथ से निकल चुके हैं नाईक साहब !"

"यह क्या कह रहा है तू ?"

"मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं ।" इंस्पेक्टर बोला- "रोशनलाल ने अब एक वकील की मदद हासिल कर ली

है नाईक साहब । धनराज सिन्हा नाम है उसका । बहुत खुर्राट वकील है । तीनों पुलिस स्टेशन आए थे और आपके खिलाफ बलात्कार की नामदर्ज रिपोर्ट लिखवा गए हैं ।"

"साले !" बाबू नाईक चिल्ला पड़ा- "तूने हमारे खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की ? भूल गया, मैंने क्या कहा था ? तूने कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं करनी ।"

"लेकिन रोशनलाल अपने साथ वकील को लेकर आया था नाईक साहब । मैं कैसे इनकार करता ? इनकार की सूरत में मेरी नौकरी जाने का खतरा था । तब वह वो खुर्राट वकील उल्टा मुझे ही नपवा डालता ।"

"मैं देखता हूं, कैसे नपवाता है साला ।" बाबू नाईक हिंसक लहजे में बोला- "मैं अभी उन्हें नपवाता हूँ । बस दस मिनट का सब्र रख ।"

"नहीं !" इंस्पेक्टर हिस्टीरिया ढंग से चिल्लाया- "नहीं नाईक साहब । आपने उन्हें छूना भी नहीं ।"

"क्यों ? क्यों नहीं छूना ?"

"क्योंकि अब अगर आपने उनकी जान लेने की कोशिश की, तो आप तीनों और भयंकर मुसीबत में फंस जाएंगे । रोशनलाल के वकील ने रिपोर्ट में यह 'क्लू' खासतौर से जोड़ा है कि अगर रोशनलाल या अंजली की हत्या होती है या फिर उन पर कोई जानलेवा हमला होता है तो उसके जिम्मेदार आप होंगे । अभी तक तो आप बलात्कार के ही अभियुक्त हैं नाईक साहब, लेकिन अगर रोशनलाल या अंजली को कुछ हो गया तो आप तीनों हत्या के भी अभियुक्त हो जाएंगे । मैं तो एफ.आई.आर. रिपोर्ट भी नष्ट कर डालता लेकिन क्या करूं, वह हरामजादा पूरी तरह मेरे

हाथ बांध गया है । रिपोर्ट की डुप्लीकेट कॉपी भी अपने साथ ले जाना नहीं भूला ।”

“ओह !” बाबू नाईक चिंता के सागर में डूबता चला गया- “यह तो वाकई भारी गड़बड़ हो चुकी है ।”

“मुझे उन लोगों के तेवर बहुत खतरनाक नजर आ रहे हैं नाईक साहब ।” इंस्पेक्टर बोला- “लगता है इस बार आप तीनों किसी बड़ी मुसीबत में फंसने वाले हैं ।”

“बकवास न कर ।” बाबू नाईक गरजा- “यह बता तू क्या कर रहा है अब ?”

“मैं तो अब अपनी ड्यूटी निभाऊंगा नाईक साहब । अब से एक घंटे बाद आप तीनों को गिरफ्तार करने जा रहा हूं । अगर आप लोग भागना चाहते हैं तो भाग जाएं । आपके पास पूरा एक घंटा है ।”

“साले हमें गिरफ्तार करने आ रहा है तू ?” बाबू नाईक ने दांत किटकिटाए-“उम्र भर जिनकी चौखट पर बैठकर पूंछ हिलाता रहा, जिनकी फेंकी रोटी खाता रहा, आज उन्हीं पर जूता उठाएगा तू ?”

“मैं क्या करूं नाईक साहब ?” इंस्पेक्टर आहत स्वर में बोला- “मजबूरी है । वैसे भी जूता कहां उठा रहा हूं मैं आप पर । मैं तो कह रहा हूं आपसे कि अगर भागना चाहते हैं तो भाग जाएँ ।”

“ठीक है, तू आ ।” बाबू नाईक ने धड़ाक से रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

□□□

बाबू नाईक ने जब वो खबर शंकरराव और बैंजो को सुनाई तो उनके भी छक्के छूट गए ।

"बस एक ही तरीका है।" पालकीवाला ने अपना ऐनक दुरुस्त किया।

"क्या ?" तीनों फ़ौरन उत्सुकता से पालकीवाला की तरफ झुके।

"अपने आपको पुलिस के हवाले कर दो।"

"यह भी कोई तरकीब है साली ?" बैंजो भड़क उठा- "कहता है पुलिस के हवाले कर दो।"

"क्योंकि अब इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है मिस्टर बैंजो !" पालकीवाला बोला- "अगर यहां से फरार हुए तो वह और बड़ी बेवकूफी होगी। कानून के हाथों से बचकर कोई भी अपराधी ज्यादा समय तक नहीं भाग सकता। फिर जब तक मैं हूं, कानून से क्या डरना ? आप तीनों को अदालत से बाइज्जत बरी कराने की गारंटी मेरी है।"

"और अगर कोर्ट रूम में तुम्हारी गारंटी भी चकमा खा गई।" बाबू नाईक बोला- "तब क्या होगा ? तब तो बंध जाएगी बे-भाव के हम तीनों की पुड़िया।"

"पालकीवाला कभी कोई केस हारा है आज तक, जो यह केस हारेगा ? पालकीवाला पर विश्वास रखो, तुम तीनों कोर्ट से न सिर्फ बरी होओगे, बल्कि बाइज्जत बरी होओगे।"

तीनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

सारे रास्ते बंद हो चुके थे। बचने का कोई तरीका न था। अंततः मजबूरी में उन्हें पालकीवाला की गारंटी पर ही भरोसा करना पड़ा।

थोड़ी देर बाद ही तीनों ने अपने आप को कानून के हवाले कर दिया।

उस वक्त वह खून के लंबे-लंबे घूंट पी रहे थे।

अंडरवर्ल्ड के उन तीनों दादाओं की जिंदगी में वह पहला मौका था, जब वे हुए गिरफ्तार हुए। जब गोवा की पुलिस फाइल में उनके खिलाफ कोई केस दर्ज हुआ।

□□□

शाम के सात बजे का समय। बख्तावर सिंह की बुलेटप्रूफ कार झटके से 'पर्ल बार' के सामने जाकर रुकी। फिर उसमें से सफेद सूट में सजा-धजा बख्तावर सिंह बाहर निकला।

बख्तावर सिंह की गाड़ी को देखते ही 'पर्ल-बार' के आसपास के पूरे इलाके में तेज हलचल मच गई थी।

लोग अपनी-अपनी दुकानों तथा ऑफिसों से बाहर निकल आए थे। घर के खिड़की दरवाजे खुल गए तथा औरत-बच्चे उनमें से झांकने लगे।

'पर्ल बार' गोवा के बेहतरीन बारों में से एक था। वहां हाईजेन्ट्री के लोग शराब पीने आते। जैसा हाई क्लास वो बार था, वैसे ही पणजी के हाई क्लास इलाके में बना भी था।

बुलेटप्रूफ गाड़ी से उतरते ही बख्तावर सिंह तेजी से उस विशाल ग्लास डोर की तरफ बढ़ा, जिसके बाहर फौजियों जैसे रौब-दाब वाला एक गनमैन खड़ा था।

लेकिन बख्तावर सिंह को देखते ही उसकी भी हवा खराब हो चुकी थी।

जैसे ही बख्तावर सिंह उसके नजदीक पहुंचा, उसने फौरन धड़ाक से एक जबरदस्त सैल्यूट मारा तथा फिर आदर के साथ ग्लास डोर खोल दिया।

बख्तावर सिंह 'पर्ल बार' में दाखिल हो गया था।

उस समय 'पर्ल बार' पूरी तरह फुल था। तमाम टेबलें बुक थीं। लोग अपने यार-दोस्तों के साथ बैठे शराब का आनंद ले रहे थे तथा बार में ही आर्केस्टा पर बजते एक रोमांटिक इंग्लिश म्यूजिक की मधुर धुन पर मस्ती के साथ झूम रहे थे। बार में सजी-धजी पियक्कड़ औरतों की संख्या भी काफी अधिक थी।

बार में दाखिल होते ही बख्तावर सिंह की दृष्टि चारों तरफ घूमी। तुरंत उसे दिवाकर नजर आ गया। वह बार में बिल्कुल पीछे एक टेबल पर तन्हा बैठा था और बड़े आनंद के साथ आंखें बंद करके शराब पी रहा था।

बख्तावर सिंह को देखते ही सबसे पहले आर्केस्ट्रा बंद हुआ।

आर्केस्ट्रा बंद हुआ तो तमाम ग्राहक चौंके।

सबकी निगाहें फौरन दरवाजे की तरफ उठीं।

और अगले ही पल पूरे 'पर्ल बार' में ग्राहकों के बीच ऐसा हड़कंप मचा, जैसे वहां कोई शेर घुस आया हो। बख्तावर सिंह को देखते ही सब का नशा उड़न-छू हो गया। कितनों के हाथ से शराब से भरे गिलास हड़बड़ाहट में छूटकर फर्श पर जा गिरे तथा टूट गए। कुछ एकदम से झटका खाकर खड़े हुए तो मेजें पलट गयीं, कुर्तियां लुढ़क गयीं।

बख्तावर सिंह का आगमन एक सनसनी का आगमन था।

पलक झपकते ही तमाम लोग 'पर्ल बार' के एक कोने में किसी चूहे की तरह जा खड़े हुए।

‘पर्ल बार’ का वर्किंग स्टाफ भी सहमकर एक कोने में खड़ा हो गया था ।

दिवाकर तब तक कई पैग पी चुका था और नशे में बिल्कुल टुन्न था । लेकिन वहां बख्तावर सिंह को देखते ही उसके भी नेत्र फट पड़े तथा वह जल्दी से दूसरे लोगों की तरह ही खड़ा होकर कोने की तरफ लपका ।

“तुम नहीं ।” फ़ौरन बख्तावर सिंह की शेर जैसी गरजदार आवाज ‘पर्ल बार’ में गूंजी- “तुम नहीं ।”

दिवाकर को करंट छू गया ।

“अ...आपने मुझसे कुछ कहा गॉडफादर ?” वह हिम्मत करके बोला ।

“हां, तुम्ही से कहा ।” बख्तावर सिंह गुर्राया- “अपनी जगह खड़े रहो ।”

दिवाकर के शरीर में झुरझुरी दौड़ गई ।

क्या मजाल जो बख्तावर सिंह के हुकुम के बाद वह एक कदम भी आगे बढ़ाता । वह जहां था, वहीं ठिठक गया ।

बख्तावर सिंह चहलकदमी करता हुआ उसके नजदीक पहुंचा ।

“तुम्हारा ही नाम दिवाकर है ?”

“य...यस गॉडफादर !” दिवाकर के मुंह से फंसा-फंसा स्वर निकला- “म... मेरा ही नाम दिवाकर है ।”

“काम क्या करते हो ?” बख्तावर सिंह दिवाकर की आंखों में आंखें डालकर सवाल पूछ रहा था ।

“स..सिंडिकेट के 23 नंबर कैसीनो में टोकन सप्लायर हूं ।”

“एक मामूली टोकन सप्लायर ।”

“य...यस गॉडफादर ।”

"कोई साइड बिजनेस भी करते हो ?"

"न...नहीं ।" दिवाकर ने जोर से गले का सूट सटका- "अ..और कुछ नहीं करता ।"

"यानी सिर्फ एक टोकन सप्लायर हो । साथ में कोई धंधा भी नहीं, कोई बिजनेस नहीं, कोई काला काम भी नहीं । इसके बावजूद 'पर्ल बार' जैसे महंगे शराबखाने में रोजाना अंग्रेजी शराब पीना अफोर्ड करते हो । उस शराबखाने में शराब पीना अफोर्ड करते हो, जहां कैसीनो का मैनेजर रोजाना शराब पीना न अफोर्ड कर सके । तुमसे बड़े-बड़े और कैसीनो कर्मचारी शराब पीना अफोर्ड न कर सके ।"

दिवाकर एकाएक विचलित नजर आने लगा ।

बाकी तमाम लोग स्तब्ध खड़े थे और नेत्र फैलाए उस तमाशे को देख रहे थे ।

"सुना है कि तुम्हें रोजाना रात को नई-नई कॉलगर्ल भी चाहियें ।" बख्तावर सिंह की आवाज में सख्ती पैदा होने लगी- "कॉल गर्ल भी ऊंचे दर्जे की । बढ़िया वाली, महंगी, हाई प्राइज्ड ।"

"ल...लगता है कि आपको किसी ने गलत इंफॉर्मेशन दी है गॉड... ।" वह अपने शब्द भी पूरे न कर पाया कि बख्तावर सिंह का एक जबरदस्त झन्नाटेदार झापड़ उसके मुंह पर पड़ा ।

चीख निकल गई दिवाकर के हलक से । एक ही झापड़ में वो मेज से जाकर टकराया और फिर उसका मुंह फर्श में लगा । उसके दिमाग में पटाखे से छूटने लगे ।

"खड़ा हो ।" बख्तावर सिंह गरजा ।

दिवाकर ने खड़ा होने की कोशिश की, लेकिन झापड़ की पीड़ा और नशे की झोंक में वो पुनः गिर गया ।

"जल्दी खड़ा हो ।" बख्तावर सिंह पुनः दहाड़ा ।

इस बार दिवाकर मेज का सहारा लेकर सीधा खड़ा हो गया ।

"मेरी तरफ देख ।"

दिवाकर ने पलकें झपकाते हुए बख्तावर सिंह की तरफ देखा ।

"अब बोल ।" बख्तावर सिंह ने कहर भरे अंदाज में उसे घूरा- "बोल कि किसी ने मुझे गलत इंफॉर्मेशन दी है । क्या यह सच नहीं की तू रोजाना इस महंगे बार में आकर शराब पीता है ? क्या यह भी झूठ है कि तुझे रोजाना हाई प्राइज्ड कॉल गर्ल चाहिए ?"

दिवाकर की गर्दन डर से जल्दी-जल्दी स्वीकृति में हिलने लगी ।

"स...सच है गॉडफादर । स...सब सच है ।"

"कहां से आता है तेरे पास इतना पैसा ? क्योंकि सिर्फ सिंडिकेट की नौकरी में तो तू इतने भारी-भरकम खर्च नहीं उठा सकता ।"

"ज...जगन भाई से रुपया उधार लेता हूं ।"

"और जब तू जगन का रुपया नहीं चुका पाता ।" बख्तावर सिंह ने दांत पीसे । उसकी आंखों में हिंसक भाव उभरे- "जब जगन तेरे खिलाफ अल्टीमेटम जारी करता है । यानी कि मियाद, एक दिन मुकर्रर करता है और कहता है कि अगर मुकर्रर दिन रुपया न चुकाया गया तो वह तेरी जान ले लेगा, तब तू ।" बख्तावर सिंह ने उंगली से दिवाकर का सीना ठोंका- "तब तू जगन के अल्टीमेटम से घबराकर

"सीधा खड़ा हो।"

दिवाकर रोते हुए ही बख्तावर सिंह के सामने सीधा खड़ा हुआ।

"अब अपने आंसू साफ कर।"

दिवाकर ने जल्दी-जल्दी अपने आंसू साफ़ किये।

बख्तावर सिंह का हर हुक्म एक शाही फरमान की तरह था, जिस पर तत्काल अमल करना गोवा के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य था।

"तू सिंडिकेट का मुलाजिम है।" बख्तावर सिंह बोला- "इसलिए सिंडिकेट के कायदे कानून से तू अच्छी तरह वाकिफ होगा।"

"ह...हां।" दिवाकर की गर्दन जल्दी-जल्दी हिली- "म...मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं।"

"तूने सिंडिकेट के आदमी का खून किया है। सिंडिकेट से गद्दारी की है। जानता है, इस अपराध की क्या सजा है ?"

"ज...जानता हूं।" दिवाकर ने अपने शुष्क होठों पर जबान फेरी- "म...मौत की सजा है।"

"तब तो तू यह भी जानता होगा कि सिंडिकेट के संविधान में माफी जैसा कहीं कोई शब्द नहीं है।"

"ह...हाँ, य...यह भी जानता हूं।"

"फिर माफी क्यों मांग रहा है बेवकूफ !" बख्तावर सिंह गुर्राया- "तेरी मौत अब लाजिमी है और अपनी यह मौत तूने खुद अपने हाथों से लिखी है।"

बख्तावर सिंह ने अपनी सफेद पेंट की जेब से निकाल ली।

"न...नहीं गॉडफादर !" दिवाकर हाथ जोड़कर पुनः हिड़कियों से रो पड़ा- "न...नहीं। म...मुझे माफ कर दो।"

"मुझसे दूर खड़ा हो जा।" बख्तावर सिंह कर्कश लहजे में बोला- "मैं नहीं चाहता कि तेरे जैसे गद्दार का गंदा खून मेरे सफेद कपड़ों पर आकर गिरे।"

दिवाकर हिड़कियों से रोता हुआ ही कुछ कदम पीछे खिसक गया।

उसी पल बख्तावर सिंह ने का ट्रिगर दबा दिया। धांय से गोली चली और सीधे दिवाकर के दिल में जा घुसी।

दिवाकर की अत्यंत मर्मभेदी और करुणाजनक चीख से पूरा 'पर्ल बार' थर्रा उठा।

□□□

उस वक्त दहशत से 'पर्ल बार' में उपस्थित प्रत्येक आदमी की आंखें बंद हो गयी थीं।

जब उन्होंने आंखें खोली तो दिवाकर को बार के फर्श पर मछली की तरह तड़पते पाया।

शीघ्र ही वो शांत हो गया।

"इस बार का मालिक कौन है ?" बख्तावर सिंह भीड़ से संबोधित होकर बोला।

तुरंत सिर पर सिंधी टोपी लगाये और बंद गले का कोट पहने एक अधेड़ व्यक्ति आगे बढ़ा।

"मैं इस बार का मालिक हूं गॉडफादर।" वह 'सिंधी' व्यक्ति बेपनाह आदर के साथ बोला- "वडी मेरा नाम जगन्नाथ गुरनानी है नी।"

"यहां कुछ हुआ है ?" गॉडफादर ने पूछा।

गुरनानी तुरंत खीं-खीं करके हंसा- “वडी यहां तो कुछ भी नहीं हुआ नी । कुछ होता तो दिखाई तो देता नी । मुझे तो कुछ दिखाई ही नहीं दिया ।” जगन्नाथ गुरनानी खीं-खीं करके हंसता हुआ ही ग्राहकों की भीड़ की तरफ घुमा- “वडी तुममें से किसी ने कुछ देखा नी ?”

ग्राहकों की भीड़ भी गुरनानी सेठ की तरह खिसियाने ढंग से हंसी ।

“गॉडफादर, इनमें से भी किसी ने भी कुछ नहीं देखा ।” जगन्नाथ गुरनानी हंसते हुए ही बोला- “वडी यहां कुछ हुआ होता, तो कोई देखता नहीं ।”

“समझदार आदमी हो गुरनानी ।” बख्तावर सिंह भी मुस्कुराया- “तुम्हारी इस समझदारी का इनाम तुम्हें भेज दिया जाएगा । और यहाँ जो लाश गिरी है, तुममें से किसी को दिखाई नहीं दी । उसे ठिकाने लगवा देना ।”

उसके बाद बख्तावर सिंह जिस प्रकार अपनी बुलेटप्रूफ कार में सवार होकर वहां आया था, उसी तरह वापस लौट गया ।

यह एक नमूना था बख्तावर सिंह के कहर का ।

उसके जलाल का ।

इस बात का कि वह सिंडिकेट की सलामती तथा अपने सिद्धांतों के लिए किस हद तक गुजर सकता है ।

□□□

गोवा हाईकोर्ट आज दर्शकों से खचाखच भरी थी ।

जो लोग अदालत की कार्यवाई को सुनना एक बोर काम समझते हैं, वे भी बलात्कार केस के कारण आज कोर्टरूम में उपस्थित थे ।

जा दबोचा। यह तीनों व्यक्ति आदी मुजरिम हैं, खतरनाक अपराधी हैं और अंडरवर्ल्ड में बड़े दादाओं जैसी हैसियत रखते हैं। ये आज से पहले भी ऐसे दर्जनों कांड कर चुके हैं।"

"आई ऑब्जेक्ट मी लॉर्ड !" पालकीवाला ने तुरंत चिल्लाते हुए कुर्सी छोड़ी- "पब्लिक प्रॉसिक्यूटर साहब मेरे क्लायंटों पर वो आरोप लगा रहे हैं, जिसका कोई सुबूत नहीं है। मेरे क्लायंट अंडरवर्ल्ड के बड़े दादा नहीं हैं बल्कि वह गोवा शहर के एक बेहद रेस्पेक्टेबल और लेजीटीमेट बिजनेसमैन हैं। उनके एक्सपोर्ट-इंपोर्ट तथा फाइनेंस के बड़े कारोबार हैं। सिर्फ इतना ही नहीं मेरे क्लायंटों ने आज तक कभी कोई अपराध नहीं किया। गोवा के किसी भी पुलिस स्टेशन में उनके नाम कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं। अगर मेरी बात गलत है तो पब्लिक प्रॉसिक्यूटर साहब उसे साबित करके दिखाएं।"

न्यायाधीश महोदय ने धनराज सिन्हा की तरफ देखा, फिर अपनी रौबदार आवाज में बोले- "क्या आप इस विषय में कुछ कहना चाहते हैं मिस्टर प्रॉसिक्यूटर ?"

"जरूर कहना चाहता हूं मी लॉर्ड !" धनराज सिन्हा जोशीली आवाज में ही बोला- "यह सच है कि आज तक इन तीनों के खिलाफ किसी पुलिस स्टेशन में कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई। ये पहली बार कानून के फंदे में फंसे हैं। लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि इन्होंने अपराध नहीं किए। बल्कि इससे यह साबित होता है कि इनका आतंक इस समाज में कितना है। लोग डरते हैं इनके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराते हुए। वे इनके जुल्म सहकर भी खामोश रहते हैं।"

"मी लॉर्ड ।" पालकीवाला मुस्कुराया- "प्रॉसिक्यूटर साहब वो बात कह रहे हैं, जिसे यह साबित नहीं कर सकते । अदालत सुबूत मांगती है, गवाह मांगती है और मैं जानता हूं कि यह ऐसा कोई सुबूत, ऐसा कोई गवाह अदालत में पेश नहीं कर सकते, जिससे मेरे क्लायंटों को आदी मुजरिम करार दिया जा सके । षड्यंत्र मेरे क्लायंटों ने नहीं रचा मी लॉर्ड, बल्कि षड्यंत्र रचा रोशनलाल और उसकी बेटी अंजली ने मेरे क्लायंटों के खिलाफ । उन्हें जबरदस्ती एक झूठे और मनगढ़ंत बलात्कार के केस में फंसाया ताकि वह मेरे सीधे-सादे क्लायंटों को डरा कर रुपया ऐंठ सकें और जब मेरे क्लायंटों ने उनके हाथों ब्लैकमेल होने से इनकार कर दिया, तब ये उन्हें घसीटकर अदालत तक ले आए । लेकिन कानून की तेज रोशनी में सच्चाई कभी छिपती मीलॉर्ड ! आप मुझे अंजली से कुछ सवाल पूछने की इजाजत दें । मैं अभी साबित कर दूंगा कि मेरे क्लायंट बेकसूर हैं, निर्दोष हैं ।"

"तुम्हें सवाल पूछने की इजाजत है ।"

पालकीवाला की आंखों में चमक उभर आई । वह मुस्कुराता हुआ अंजली की तरफ बढ़ा ।

□□□

पालकीवाला, अंजली के बिल्कुल सामने जाकर खड़ा हो गया था, फिर मुस्कुराता हुआ बोला- "तुमने मेरे क्लायंटों पर आरोप लगाया है कि 18 फरवरी की रात इन तीनों ने तुम्हारे साथ बलात्कार किया ।"

"हाँ !" अंजली ने पूरी दिलेरी से जवाब दिया- "यही वे तीनों दरिंदे हैं, जिन्होंने मेरी इज्जत लूटी और फिर मुझे मार डालना चाहा ।"

"यानी ये धोखे से तुम्हारे घर में घुसे ?"

"हाँ ।"

"जब दरवाजा खोलने के बाद तुमने वॉचमैन और मेहमानों की जगह इन्हें देखा ।" पालकीवाला बोला- "तो तुम चिल्लाई क्यों नहीं ?"

"मैंने जैसे ही चिल्लाने के लिए मुंह खोला तो फौरन इन्होंने मेरा मुंह दबोच लिया और फिर मेरे मुंह में कपड़ा ठूंस दिया गया ।" अंजली नागिन की भांति फुंफकारती हुई बोली- "उसके बाद मेरे हाथ भी पीठ के पीछे एक मजबूत रस्सी से बांध दिए गए ।"

"उसके बाद ?"

"उसके बाद बैंजो मुझे एक कमरे में ले गया । मैं उस वक्त अपने हाथ पैर बुरी तरह पटक रही थी । चीखना चाह रही थी लेकिन उन दरिंदों ने मुझे बिल्कुल असहाय बना दिया था ।"

"कमरे में ले जाकर बैंजो ने क्या किया ?"

"इसने मेरे कपड़े उतार डाले ।"

"फिर ?"

"फिर अपने भी कपड़े उतारे ।"

"उसके बाद ?" पालकीवाला के होठों पर उस वक्त बड़ी दिलचस्प मुस्कान थी ।

"उ...उसके बाद ।" अंजली एकाएक किसी बम की तरह फट पड़ी- "उसके बाद इस हरामजादे में मेरे साथ बलात्कार किया । मेरी आबरू की धज्जियां बिखेर डालीं ।"

"किस तरह बिखेरी तुम्हारे आबरू की धज्जियां ? क्या किया इसने ?"

तक हमारे प्रॉसिक्यूटर साहब के घर पर थी और वहां 'टाइम पास' कर रही थी। क्या बात है मी लॉर्ड !" पालकीवाला तेजी से न्यायधीश महोदय की तरफ घूमा- "यह पॉइंट नोट किया जाए कि 18 फरवरी की रात अंजली ग्यारह बजे तक धनराज सिन्हा साहब के घर पर थी और वहां अपना अकेलापन दूर कर रही थी, टाइम पास कर रही थी।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड !" धनराज सिन्हा पुनः चीखता हुआ कुर्सी से उठा।

"आराम से बैठ जाइए प्रॉसिक्यूटर साहब !" पालकीवाला मुस्कुराता हुआ ही तेजी से धनराज सिन्हा की तरफ घूमा- "अगर बार-बार यूं चिल्लायेंगे तो अदालत की कार्यवाही कैसे चलेगी ? पहले मुझे आराम से अंजली के बयान लेने दीजिए, फिर आपको जो कहना है, कह सकते हैं।"

"ऑब्जेक्शन ओवररुल्ड !" न्यायधीश महोदय बोले।

धनराज सिन्हा तिलमिलाता हुआ वापस कुर्सी पर बैठ गया।

"हाँ तो मिस अंजली !" पालकीवाला पुनः अंजली से संबोधित होता हुआ बोला- "उस वक्त रात के लगभग बारह बज रहे थे, जब ये तीनों तुम्हारे घर आए ?"

"हाँ !"

"तुमने इतनी रात को इनके लिए दरवाजा क्यों खोला ?"

"मुझे मालूम ही नहीं था कि दरवाजे पर यह तीनों शैतान हैं।" अंजली गुर्राई- "इन्होंने गली का वॉचमैन बनकर मुझसे दरवाजा खुलवाया और कहा कि हमारे घर पर कुछ मेहमान आए हैं।"

"वही किया ।" अंजली दहाड़ कर बोली- "जो एक पति अपनी पत्नी के साथ करता है, लेकिन उसमें पत्नी की रजामंदी शामिल होती है, सहयोग शामिल होता है । जबकि मैं नहीं चाहती थी कि बैंजो मेरे साथ वह सब कुछ करे । इसलिए वो बलात्कार था ।"

"क्या करता है एक पति अपनी पत्नी के साथ ?" पालकीवाला पूरे कमीनेपन पर उतर आया था ।

"तुम नहीं जानते ?" अंजली ने पालकीवाला को खूंखार नेत्रों से घूरा और चिल्लाई- "कि एक पति अपनी पत्नी के साथ क्या करता है ?"

"नहीं ।" पालकीवाला ने बड़ी शराफत से अपनी गर्दन इनकार में हिलाई- "मैं तो बिल्कुल नहीं जानता । मेरी तो अभी शादी ही नहीं हुई ।"

पालकीवाला की बात पर कोर्टरूम में हंसी का तेज फौव्वारा छूटा ।

"मी लॉर्ड ।" अंजली न्यायधीश महोदय से मुखातिब होकर चीखी- "मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि मिस्टर पालकीवाला को यह केस लड़ने की इजाजत बिल्कुल न दी जाए । इन्हें फौरन डिसमिस कर दिया जाए । जिस वकील को स्त्री-पुरुष संबंधों तक की नॉलेज नहीं है, वह एक बलात्कार के केस की पैरवी क्या करेगा ? वह उस औरत के दुख-दर्द को क्या समझेगा, जो बलात्कार का शिकार हुई ।"

पालकीवाला के चेहरे पर तुरंत हवाइयां उड़ने लगीं ।

कोर्टरूम में मौजूद लोगों ने जोरदार तालियां बजाकर अंजली की बात का स्वागत किया ।

"मिस्टर डिफेंस काउंसल !" न्यायधीश महोदय ने पालकीवाला को चेतावनी दी- "मिस अंजली से कोई भी सवाल पूछते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उससे मिस अंजली की मर्यादा तथा अदालत की गरिमा नष्ट न हो।"

"ठीक है मी लॉर्ड !" पालकीवाला सिर झुकाकर बोला- "मैं आगे से इस बात का ख्याल रखूंगा। अब मैं मिस अंजली से एक आखिरी सवाल पूछना चाहता हूं और मुझे उम्मीद है कि मिस अंजली उसका सच-सच जवाब देंगी।"

"पूछिए।"

"मैंने एफ़आईआर पढ़ी थी। उसमें लिखा है कि बाबू नाईक ने जब तुम्हारे साथ दो बार बलात्कार किया तो उसी दौरान तुम अपनी पीठ के पीछे बंधे हाथ खोलने में कामयाब हो गई थी। इसीलिए तुम वहां से अपने कपड़े पहनकर भाग सकी।"

"हां !" अंजली बेधड़क बोली- "यह सच है।"

"पीठ के पीछे बंधे अपने हाथ तुमने किस चीज से खोले ?" पालकीवाला, अंजली की आंखों में झांकता हुआ बोला- "क्या तुम्हारे हाथों में कोई चाकू आ गया था ?"

"नहीं। मैंने वह रस्सी अपनी उंगलियों से ही खोल डाली थी। दरअसल मेरे हाथ पीठ के पीछे बंधे थे और इन तीन दरिंदों ने मेरे साथ बारी-बारी से बलात्कार किया था। इसी कारण मेरे रस्सी से बंधे हाथों को जोर-जोर से झटके लगे तथा रस्सी थोड़ी ढीली हो गई। जिससे मुझे रस्सी खोलने में ज्यादा परेशानी नहीं हुई।"

"मी लॉर्ड !" पालकीवाला खुशी से चिल्ला पड़ा- "बेपनाह कोशिश करने के बावजूद मिस अंजली रस्सी खोलने में नाकाम हो चुकी हैं और इसी एक पॉइंट से साबित हो जाता है कि इन्होंने मेरे क्लायंटों ऊपर जो आरोप लगाए, वे झूठे हैं, बेबुनियाद हैं। दरअसल मेरे क्लायंटों ने मिस अंजली के साथ कोई बलात्कार नहीं किया। वे 18 फरवरी की रात रोशनलाल के घर गए ही नहीं।"

उस दिन थोड़ी देर और अदालत की कार्यवाही चली।

फिर अदालत बर्खास्त हो गई।

□□□

दो दिन बाद अदालत पुन: बैठी।

कोर्ट रूम उस दिन भी दर्शकों से खचाखच भरा था।

रोशनलाल भी आज कोर्ट रूम के अंदर ही था और दर्शक दीर्घा की दूसरी पंक्ति में बैठा था।

"मी लार्ड।" पालकीवाला भयानक घनगरज करता हुआ बोला- "मैं आज अदालत के सामने कुछ ऐसे गवाह पेश करने जा रहा हूँ, जिनकी गवाही के बाद पूरे केस की तस्वीर एकदम स्पष्ट हो जायेगी। उन गवाहों के बाद साफ़ साबित हो जाएगा कि षड़यंत्रकारी मेरे क्लायंट हैं या फिर रोशनलाल तथा अंजली। मेरा पहला गवाह है- रतनसिंह।"

छब्बीस-सत्ताइस साल का एक नौजवान फ़ौरन विटनेस बॉक्स में आकर खड़ा हो गया।

"तुम्हारा नाम ?" पालकीवाला उसके नजदीक जाकर बोला।

"रतन सिंह।"

"तुम रोशनलाल को जानते हो ?"

"खूब जानता हूँ जी ।" रतन सिंह नाम का वह नौजवान बोला- "मेरे से बेहतर भला रोशनलाल को कौन जानेगा ? मैं नाईक साहब और बैंजो साहब की उसी फाइनेंस कंपनी में काम करता हूँ, जिसमें ये रोशनलाल काम करता था । मैंने रोशनलाल जैसा घटिया आदमी इस दुनिया में दूसरा नहीं देखा साहब । अंजली इसकी अपनी बेटी नहीं है, इसलिए उससे वेश्यावृत्ति कराता है । एक बार उसने पांच सौ रुपये में अंजली का मेरे साथ भी सौदा किया । हद तो तब हो गयी जज साहब, जब ये उस सौदे के बाद हर महीने पांच सौ रुपये मांगने लगा । कहने लगा कि अगर मैं हर महीने पांच सौ रुपये नहीं दूंगा, तो ये अपनी बेटी से मेरे खिलाफ पुलिस में बलात्कार का मामला दर्ज करा देगा । अपनी इज्जत बचाने के लिए मैं इसके हाथों पिछले कई महीने से ब्लैकमेल हो रहा हूँ ।"

"ये झूठ बोल रहा है जज साहब ।" रोशनलाल चिंघाड़ता हुआ एकदम कुर्सी से उठा- "इसका एक-एक शब्द झूठा है । मैंने कभी अपनी बेटी का सौदा नहीं किया ।"

"हो सकता है कि रतन सिंह झूठ बोल रहा हो मी लार्ड ।" पालकीवाला घनगरज करते हुए ही न्यायाधीश महोदय की तरफ घूमा- "लेकिन ये पीड़ा, ये दर्द सिर्फ एक रतनसिंह का नहीं है । बल्कि ऐसे कई लोग हैं, जो रोशनलाल के हाथों ब्लैकमेल हो रहे थे । हैरानी की बात तो यह है कि इस ब्लैकमेलिंग सिस्टम में अंजली भी पूरी तरह अपने कलियुगी बाप के साथ थी । रतनसिंह जैसे ही

रोशनलाल के हाथों सताए हुए कुछ और गवाह मैं अदालत में पेश कर रहा हूँ ।"

उसके पश्चात एक के बाद एक छः गवाह अदालत में पेश किये गए ।

सबने वही कहानी सुनायी, जो रतनसिंह ने सुनायी थी ।

रोशनलाल और अंजली भौचक्के से अदालत में खड़े थे ।

❑❑❑

"ये सब गवाह झूठे हैं ।" धनराज सिन्हा चिल्लाकर बोला- "पैसे के बलबूते पर खरीदे हुए हैं ।"

"मैं एक आखिरी गवाह और अदालत में पेश करने जा रहा हूँ सिन्हा साहब । उसके बाद आपकी भी कलई खुल जायेगी ।"

"म..मेरी कलाई ।" हकबकाया धनराज सिन्हा ।

"हाँ, आपकी कलई ।" पालकीवाला के चेहरे पर खतरनाक मुस्कान थी, फिर वो दर्शक दीर्घा की तरफ चिल्लाकर बोला- "दीनदयाल हाजिर हो ।"

फ़ौरन दर्शकों के बीच में से एक लगभग पचास साल का आदमी उठकर विटनेस बॉक्स में आ खड़ा हुआ । रोशनलाल, धनराज सिन्हा और अंजली, उसे देखते ही पहचान गए । वह उनके मोहल्ले में ही जनरल मर्चेंट की दुकान करता था ।

"तुम्हारा नाम ?" पालकीवाला ने उससे पूछा ।

"दीनदयाल रामचंदानी ।"

"वकील साहब को पहचानते हो ?"

"खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ साहब । छः महीने पहले ही इन्होंने हमारे मोहल्ले में आकर रहना शुरू किया है । इनके घर में रोजमर्रा का ज्यादातर सामान मेरी ही दुकान से जाता है । इसलिए कभी-कभार पैसे लेने या सामान पहुंचाने इनके घर भी चला जाता हूँ ।"

"सिन्हा साहब के विषय में और कुछ जानते हो ?"

"जानता तो बहुत कुछ हूँ साहब ।" दीनदयाल थोड़ा झिझकते हुए बोला- "किन्तु बोलते हुए थोड़ी शर्म आती है ।"

"शर्म मत करो । जो जानते हो, साफ़-साफ़ कहो । यह तीन बेक़सूर लोगों की जिंदगी का सवाल है ।"

"ठीक है साहब ।" दिनदयाल बोला- "अगर आप जोर डालते हैं, तो बताता हूँ । वकील साहब की शादी को सात साल हो चुके हैं, लेकिन आज तक इनके कोई औलाद नहीं हुई । सुना है कि इनकी बीवी बाँझ है । यह तो सिर्फ सुना है साहब, लेकिन जो देखा है, वो ये है कि अंजली और वकील साहब के बीच तगड़े संबंध हैं ।"

"क्या बकवास कर रहे हो तुम ?" धनराज सिन्हा दहाड़ा ।

"मैं कहाँ बकवास कर रहा हूँ वकील साहब ।" दीनदयाल बोला- "मेरी क्या मजाल है, जो मैं आप जैसे बड़े साहब के बारे में कुछ बकवास करूं । मैं तो वही कह रहा हूँ, जो मैंने देखा है ।"

"ठीक है, तुम जा सकते हो ।" पालकीवाला बोला ।

दीनदयाल चला गया ।

"मी लार्ड ।" तब पालकीवाला शेर की तरह गर्जना करता हुआ बोला- "दीनदयाल रामचंदानी की गवाही से ये

। लेकिन पालकीवाला जी के प्रयासों से पूरे षड़यंत्र का पर्दाफाश हो गया । लिहाजा यह अदालत बाबू नाईक, शंकरराव तथा बैंजो को बाइज्जत बरी करती है और रोशनलाल एवं अंजली को इस चेतावनी के साथ छोड़ती है कि वे भविष्य में ऐसी हरकत न करें । पब्लिक प्रॉसिक्यूटर धनराज सिन्हा को भी इस अदालत की हिदायत है कि वह अपने पद की गरिमा को समझें और बाजारू लड़कियों के चक्कर में अपना कैरियर बर्बाद न करें ।"

"यह इंसाफ नहीं है जज साहब !" अंजली कटघरे में खड़ी-खड़ी जोर से दहाड़ पड़ी- "यह अन्याय है । जिन्हें आप बाइज्जत बरी कर रहे हैं, वो दरिंदे हैं, मेरी इज्जत के लुटेरे हैं । मुझे इंसाफ चाहिए जज साहब ! मुझे इंसाफ चाहिए ।" अंजली बेहद जुनूनी अवस्था में अपना सिर जोर-जोर से कटघरे पर पटककर मारने लगी ।

तीनों यमदूत अब हंस रहे थे ।

पालकीवाला हंस रहा था । यहां तक कि उसकी बेबसी पर न्यायाधीश के चेहरे पर भी मुस्कान थी ।

"नहीं बेटी, नहीं ।" रोशनलाल ने दौड़कर बुरी तरह सिर पटकती अंजली को कब्जा लिया और फिर रो पड़ा- "शैतानों से इंसाफ की उम्मीद नहीं की जाती बेटी । यह सब नोटों के अंधे हैं । इस अदालत का इंसाफ सोने की तराजू में बिक चुका है । मैंने तुझसे पहले ही कहा था कि नोटों के नगाड़ों में गरीब की फरियाद कोई नहीं सुनेगा ।"

तीनों यमदूत ज्यादा जोर-जोर से हंसने लगे ।

"हंसो मत हरामजादों ! हंसो मत ।" रोशनलाल, अंजली को संभालकर कटघरे से बाहर निकला । उसकी आवाज आंसुओं के सैलाब में ज्वालामुखी बन गई

थी-"अभी एक अदालत बंद हुई है, लेकिन अभी गोवा में एक और अदालत है-गॉडफादर की अदालत । मैं अब अपनी बेटी को लेकर गॉडफादर के पास जाऊंगा । मैं जानता हूं कि मुझे गॉडफादर से इंसाफ मिलेगा । गॉडफादर तुम्हारी मौत का ऐलान करेगा ।" रोशनलाल फफक-फफककर रोता जा रहा था और चिल्लाता जा रहा था ।

वह अंजली को लेकर कोर्टरूम से बाहर निकल गया ।

परंतु गॉडफादर के नाम ने तीनों यमदूतों की हंसी भक्क से उड़ा दी थी ।

□□□

यह गॉडफादर के नाम का ही करिश्मा था कि फ़ौरन उन लोगों के बीच खलबली मच गई ।

जज के चेहरे का रंग भी एकदम हल्दी की तरह पीला जर्द पड़ गया था ।

वे सब फौरन जज के चैंबर में इकट्ठे हुए ।

"उन्हें जल्दी रोको ।" जज बुरी तरह घबराये स्वर में बोला- "मैंने और पालकीवाला ने तुम्हें इस अदालत से तो बचा लिया लेकिन अगर वह गॉडफादर तक पहुंच गये तो फिर तुम तीनों को कोई नहीं बचा सकता । अपनी जिंदगी चाहते हो तो उन्हें फौरन पकड़ो ।"

"जज साहब ठीक कह रहे हैं ।" पालकीवाला भी अत्यंत दहशतजदां स्वर में बोला- "उन दोनों को रोकना होगा । गॉडफादर की अदालत वो अदालत है, जहां कोई सुनवाई नहीं होती । जहां किसी सुबूत और गवाह की जरूरत नहीं पड़ती । जानते हो, अंजली अदालत में रस्सी

क्यों नहीं खोल सकी ? क्योंकि वह रस्सी एयरफुल थी। गांठ बांधने के बाद उसमें खुद-ब-खुद हवा भर जाती थी और उसकी गांठ टाइट हो जाती थी। लेकिन ऐसी कोई चालाकी गॉडफादर के सामने नहीं चलेगी। अभी तीन दिन पहले ही गॉडफादर ने सिंडिकेट के एक आदमी को सरेआम 'पर्ल बार' में शूट कर दिया था।"

बाबू नाईक ने भुनभुनाते हुए बैंजो की तरफ देखा- "पता नहीं साला कौन सी कमबख्त घड़ी में उस मछली की पुड़िया बांधने का प्रस्ताव हमारे पास लेकर आया था।"

"डोंट ब्लेम मी।" बैंजो भी झल्लाया- "मजे तो तूने भी लिए थे। दो बार पुड़िया बांधी थी मछली की। तेरे से किसने कहा दो बार पुड़िया बांध। अगर एक बार ही पुड़िया बांधकर उसके भेजे में गोली उतार देता, तो आज ये दिन ही क्यों देखने को मिलते ?"

"आपस में लड़ाई-झगड़ा करके टाइम वेस्ट मत करो।" शंकरराव गुर्राया-"जल्दी से उन दोनों को पकड़ो। वरना गॉडफादर हमारी पुड़िया बांध डालेगा।"

तुरंत वे तीनों जज के चैंबर से निकलकर पागलों की तरह बाहर की तरफ दौड़ पड़े।

□□□

कोर्ट के प्रांगण में एक सफेद मारुति वैन खड़ी थी, जिसमें उन दादाओं के दो गुंडे सवार थे।

दरअसल वकील पालकीवाला के माध्यम से उन गुंडों को सुबह ही इनफार्मेशन मिल गई थी कि आज उनके तीनों दादा कोर्ट से बाइज्जत रिहा हो जाएंगे, इसलिए वे उन्हें ले जाने के लिए वैन लेकर आए थे आ गए थे।

तीनों दादा धड़ाधड़ दौड़ते हुए मारुति वैन के नजदीक पहुंचे ।

"तुममें से किसी ने अभी रोशनलाल और अंजली को कोर्ट से बाहर निकलते देखा ?" शंकरराव ने बेपनाह आतंकित अवस्था में सवाल दागा ।

"हां साहब !" तत्काल एक गुंडे ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "अभी मुश्किल से पांच मिनट पहले ही वो कोर्ट से बाहर निकले थे ।"

"किधर को गए ?"

"एक टैक्सी में बैठकर दायीं तरफ को गए हैं ।"

तुरंत वह तीनों धड़ाधड़ मारुति वैन की पिछली सीट पर बैठे और फिर उन्होंने धड़क से वैन का स्लाइडिंग डोर बंद किया ।

"जल्दी से टैक्सी का पीछा करो ।" बाबू नाईक चिल्लाया- "वह दोनों बचकर नहीं जाने चाहिए ।"

मारुति वैन झटके से स्टार्ट हुई उसके बाद वो तीर की तरह कोर्ट के प्रांगण से निकलकर दायीं तरफ भागी ।

"जरूर ये हरामी रोशनलाल मछली को लेकर सीधा ब्लैक हाउस गया है ।" बाबू नाईक अपने गंजे सिर पर बेचैनी से हाथ फेरता हुआ बोला- "यह मछली तीनों की पुड़िया बंधवाकर रहेगी । देख लेना, जरूर कोई-न-कोई नया गुल खिलेगा ।"

जितना बाबू नाईक था, उतने ही शंकरराव और बैंजो भी थे ।

गॉडफादर के नाम से तीनों की हवा खराब हुई पड़ी थी ।

बैंजो तो पिछली सीट पर बैठा बार-बार उचककर वैन की विंडस्क्रीन में से टैक्सी को देखने की कोशिश कर रहा था ।

लेकिन कोई टैक्सी उसे दूर-दूर तक नजर न आ रही थी ।

"तुम लोगों ने अच्छी तरह भी देखा था ।" बैंजो ने विचलित स्वर में पूछा- "कि टैक्सी इसी तरफ गई है ।"

"वो हंड्रेड परसेंट सीसी रोड पर गए हैं बैंजो साहब !" वैन ड्राइव करता हुआ गुंडा बोला- "हमने खूब अच्छी तरह देखा था ।"

"टैक्सी का नंबर नोट किया ?"

"न...नहीं ।" दूसरे गुंडे ने झिझकते हुए अपनी गर्दन इंकार में हिलाई- "नंबर तो नोट नहीं किया । हमें क्या मालूम था कि उन दोनों का पीछा करने की जरूरत पड़ेगी । हम तो समझ रहे थे कि केस खत्म, बात खत्म ।"

"जब नंबर ही नहीं मालूम ।" बाबू नाईक बोला- "तो हम रोशनलाल की टैक्सी को कैसे पहचानेंगे ? टैक्सी कलर तो सब एक से होते हैं ।"

"एक बात मैंने उस टैक्सी पर ऐसी देखी थी ।" तभी वैन ड्राइव करता हुआ गुंडा बोला- "जिससे हम रोशनलाल की टैक्सी को फौरन पहचान सकते हैं, एकदम से पहचान सकते हैं ।"

"ऐसी क्या बात देख ली तूने ?" फौरन तीनों दादा उसकी तरफ झुके ।

"उस टैक्सी की पिछली स्क्रीन पर लाल रंग से लिखा था- फिर मिलेंगे । जिस टैक्सी की पिछली स्क्रीन पर लाल रंग से 'फिर मिलेंगे' लिखा दिखाई दे, समझो, उसी में रोशनलाल और अंजली सवार हैं ।"

तीनों दादाओं की आंखों में आशा की कुछ किरण जगमगाई ।

“डेम इट !” बैंजो अपने दाढ़ी मूंछ रहित चिकने गालों पर हाथ फेरता हुआ बोला- “यह कमबख्त रोशनलाल अब फिर मिलेगा भी या नहीं मिलेगा । मुझे तो लगता है कि अब तक वह ओल्ड गोवा पहुँच भी गये होंगे । हम उससे क्या मिलेंगे, वही हमसे मिलेगा गॉडफादर के साथ ।”

“तू इस साले गॉडफादर का नाम लेना बंद कर ।” शंकरराव बुरी तरह दहाड़ पड़ा- “कितनी देर से गॉडफादर-गॉडफादर सुन रहा हूं मैं ।”

बैंजो अपना मुंह बंद करके बैठ गया

“और तू वैन की रफ्तार बढ़ा ।” शंकरराव ड्राइवर पर गुर्राया- “क्या बैलगाड़ी की तरह चला रहा है इसे ।”

“और कितनी तेज चलाऊँ ?” वैन ड्राइव करता हुआ गुंडा बोला- “फुल स्पीड है । इससे ज्यादा स्पीड बढ़ाई तो ट्रैफिक पुलिसवाला चालान कर देगा ।”

“करने दे चालान । इस समय हमें दूसरे चालान की पड़ी है । रोशनलाल और अंजली को हमें किसी भी हालत में ब्लैक हाउस पहुंचने से रोकना है ।”

वैन की स्पीड पहले ही बहुत तेज थी, वैन ड्राइव करते हुए गुंडे ने उसकी स्पीड और बढ़ा दी ।

ओल्ड गोवा के एक-एक चर्च को पार करती हुई मारुति वैन मानो हवा से बातें करने लगी ।

“वो रही ।” तभी एकाएक दूसरा गुंडा खुशी से उछला- “वो रही वह टैक्सी, जिसमें रोशनलाल और अंजली सवार हैं ।”

तीनों दादाओं ने भी जल्दी से उचककर विंडस्क्रीन में से सड़क की तरफ देखा ।

वह टैक्सी उस वक्त उनकी वैन से काफी दूर थी । लेकिन फिर भी तीनों ने टैक्सी की पिछली स्क्रीन पर लाल रंग में लिखी पंक्ति 'फिर मिलेंगे' साफ-साफ पढ़ी ।

टैक्सी को देखते ही तीनों के चेहरे खिल उठे ।

"पकड़ो सालों को ।" बाबू नाईक दहाड़ा- "बचने न पाएं, जाने न पाएं ।"

मारुति वैन ड्राइव करते गुंडे ने उत्साह से स्पीड और बढ़ा दी ।

□□□

टैक्सी चालक शीघ्र ही भांप गया था कि टैक्सी का पीछा किया जा रहा है ।

रोशनलाल और अंजली अभी भी टैक्सी की पिछली सीट पर सिकुड़े-सिमटे बैठे थे । दोनों के चेहरे पर कालिमा पुती थी । अंजली के चेहरे पर तो अपमान और वितृष्णा की लकीरें कुछ ज्यादा ही गहरी थीं ।

"साहब !" टैक्सी चालक, रोशनलाल की तरफ घूमकर बोला- "लगता है कि एक मारुति वैन हमारा पीछा कर रही है ।"

रोशनलाल और अंजली ने तुरंत पलटकर देखा । अगले ही पल उनके चेहरे पर आतंक की छाया डोलने लगी ।

"ज...जरूर वही यमदूत हैं ।" रोशनलाल की आवाज सूखे पत्ते की तरह कांपी- "जरूर वहीं तीनों शैतान हमारे पीछे आ रहे हैं । उनके इरादे ठीक नहीं है । वरना वे पीछा न करते ।"

उस वक्त टैक्सी की स्पीड ऐसी हैरतअंगेज थी कि हर पल ऐसा मालूम दे रहा था, उसका अब एक्सीडेंट हुआ, अब हुआ ।

“जरूर बुड्ढे को शक हो गया है कि हम उसका पीछा कर रहे हैं ।” बैंजो ने दांत किटकिटाये- “हरामजादा किस्मत का भी तेज है । टैक्सी ड्राइवर भी क्या बढ़िया मिला है । नाईक, अब हम उसे ब्लैक हाउस तक पहुंचने से नहीं रोक सकते ।”

“ब्लैक हाउस बस आने ही वाला है ।”

“कैसे नहीं रोक सकते ।” बाबू नाईक दहाड़ उठा- “तुम दोनों में से किसी के पास गन है ।” वह दोनों गुंडों से मुखातिब होकर बोला ।

“हां साहब !” तुरंत दूसरा गुंडा बोला- “मेरे पास मशीनगन है ।”

“ला, जल्दी दे मुझे ।”

गुंडे ने तुरंत सीट के नीचे छिपाकर रखी एक मशीनगन निकालकर बाबू नाईक को दे दी ।

मशीनगन हाथ में आते ही बाबू नाईक अद्वितीय फुर्ती से वैन की खिड़की की तरफ लपका ।

“नाईक ।” शंकरराव चिल्ला पड़ा- “यह क्या कर रहा है नाईक ?”

“चुप बैठा रह ।” बाबू नाईक चिंघाड़ा- “एकदम चुप । बस देखता रह, मैं क्या कर रहा हूं ।”

पलक झपकते ही बाबू नाईक का आधे से ज्यादा जिस्म वैन की खिड़की से बाहर निकल गया । अब उसकी टांगे ही सिर्फ वैन के अंदर थीं ।

खिड़की से बाहर निकलते ही बाबू नाईक नेमशीनगन टैक्सी की तरफ तान दी । जितनी तेजी से इस वक्त टैक्सी दौड़ रही थी, उसे देखते हुए इसमें कोई शक नहीं था कि वह जल्द ही ब्लैक हाउस में दाखिल हो जाती ।

अगले ही पल बाबू नाईक दनादन मशीनगन का ट्रिगर दबाता चला गया ।

धांय ! धांय ! धांय !

एकसाथ बेशुमार गोलियां मशीनगन के अंदर से निकलकर टैक्सी के टायरों की तरफ झपटी ।

बाबू नाईक का निशाना अचूक था । फौरन टैक्सी के दोनों पिछले टायर किसी बम की तरह फटे ।

टायरों के फटते ही टैक्सी जोर से सड़क पर लहराई ।

स्पीड इतनी ज्यादा तेज थी दोनों पिछले टायर फटने की बावजूद टैक्सी कितनी ही दूर तक घिसटती चली गयी और फिर धड़ाम से सड़क के किनारे एक दीवार से जाकर टकराई ।

जैसे ही टैक्सी रुकी, तुरंत उसका पिछला दरवाजा खुला तथा उसमें से रोशनलाल तथा अंजली निकलकर सड़क पर बुरी तरह भागे ।

ब्लैक हाउस अब बेहद नजदीक था । सिर्फ सड़क का एक मोड़ काटते ही सामने ब्लैक हाउस था ।

बाबू नाईक ने पुनः मशीनगन तानी और रोशनलाल तथा अंजली को निशाना बनाकर दनादन ट्रिगर दबाया ।

निशाना इस बार भी अचूक था तथा सात बेशुमार गोलियां अंजली के शरीर में जा धंसीं ।

सबने अंजली के शरीर के कई हिस्सों से खून के फव्वारे छूटते देखे ।

उसकी गगनभेदी चीख संपूर्ण वायुमंडल में गूंजी तथा उसका शरीर किसी गेंद की तरह हवा में उछला ।

अंजली सड़क पर गिरती, उससे पहले ही रोशनलाल ने 'अंजली-अंजली' चिंघाड़ते हुए उसे अपनी गोद में उठा लिया था और फिर वह पुनः पागलों की तरह ब्लैक हाउस की तरफ दौड़ा ।

"मछली तो गई ।" शंकरराव ख़ुशी से चिल्लाया- "मछली की तो बंध गई पुड़िया । नाईक ! रोशनलाल का भी टिकट काट । बुड्ढे को भी जहन्नुम पहुंचा ।"

बाबू नाईक ने तुरंत रोशनलाल को भी निशाना बनाकर मशीनगन का ट्रिगर दबाया ।

लेकिन रोशनलाल अब अंजली को गोद में उठाकर सीधे दौड़ने की बजाय सड़क पर दाएं-बाएं लहराता हुआ दौड़ रहा था, इसलिए कोई भी गोली उसे न छू सकी ।

बाबू नाईक ने फिर भी उस पर गोली बरसाना जारी रखा ।

तभी रोशनलाल सड़क के उस मोड़ पर घूम गया, जिस तरफ ब्लैक हाउस था ।

मारुति वैन भी उसके पीछे-पीछे तूफानी गति से दौड़ती हुई मोड़ के सामने पहुंची ।

परंतु रोशनलाल अब सड़क पर से गायब था ।

ब्लैक हाउस के आसपास कहीं भी उसका कुछ पता न था ।

□□□

बाबू नाईक मशीनगन लेकर धम्म से वापस मारुति वैन की पिछली सीट पर बैठ गया ।

"आज सबकुछ खत्म हो गया।" रोशनलाल के मुंह से शब्दों की जगह जज्बातों का समंदर उमड़ रहा था- "पहले तो उन तीनों दरिंदों ने मिलकर मेरी बेटी की आबरू ही लूटी थी लेकिन आज मेरी फूल सी बच्ची को मार भी डाला, जान भी ले ली उसकी । कैसी आग भर दी थी दरिंदों ने उसमें । प्रतिशोध का कैसा धधकता ज्वालामुखी बना डाला था उसे । वो बदला लेना चाहती थी, अपनी इज्जत का बदला चाहती थी । बेचारी बदला तो न ले सकी, खुद जरूर इस अनैतिक और विध्वंसकारी समाज की बलि-वेदी पर भेंट चढ़ गई । रोशनलाल, अंजली के शव से लिपटकर रोता जा रहा था और बोलता जा रहा था ।

जैकाल में उसे संभालने की चेष्टा की लेकिन कामयाब न हो सका ।

अंजली की मौत ने रोशनलाल को हिलाकर रख दिया था । उसके सब्र का बांध अब टूट चुका था ।

"गॉडफादर !" रोशनलाल तड़पते हुए ही बख्तावर सिंह की तरफ बढ़ा और फिर उसने बख्तावर सिंह के पैर पकड़ लिए- "मेरी बेटी आज इस दुनिया में नहीं है गॉडफादर । लेकिन मैं नहीं चाहता कि उसकी मौत के साथ ही उसके प्रतिशोध की भी मौत हो जाए । मैं उसके बदले के ज्वालाकुंड को जिंदा रखना चाहता हूं गॉडफादर । मैं उस आग को जिंदा रखना चाहता हूं, जो आग उन दरिंदों ने मेरी बेटी के अंदर भरी थी ।"

"क्या चाहते हो तुम ?" बख्तावर सिंह हमेशा की तरह बेहद शांत मुद्रा में बोला ।

"मैं उन तीनों की मौत चाहता हूं गॉडफादर । मैं चाहता हूं कि मुझे और मेरी बेटी को जो न्याय अदालत से न मिल सका, वह गॉडफादर से मिले ।"

"ठीक है ।" बख्तावर सिंह बोला- "तुम्हें न्याय मिलेगा । प्रतिशोध की जो ज्वाला तुम्हारी बेटी के अंदर धधकी थी, वह प्रतिशोध पूरा होगा ।"

"मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं गॉडफादर !" रोशनलाल, बख्तावर सिंह के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया- "म...मैं तमाम उम्र आपका कर्जदार रहूंगा ।"

परंतु बख्तावर सिंह ने जैसे उसके वह शब्द सुने ही नहीं । वह तेजी से जैकाल की तरफ घूमा ।

"जैकाल !"

"यस गॉडफादर !" जैकाल ने बख्तावर सिंह के सामने आदर से सिर झुकाया ।

"सबसे पहले अंजली के दाह-संस्कार का बंदोबस्त करो ।" बख्तावर सिंह बोला- "और फिर रोशनलाल के ब्लैक हाउस में रहने का इंतजाम करो । जब तक तीनों दरिंदो की हत्या नहीं हो जाती, तब तक ये ब्लैक हाउस में ही रहेंगे ।"

"ओके गॉडफादर !"

जैकाल ने पुनः बख्तावर सिंह के सामने आदर से सिर झुकाया । उसके बाद वह अंजली के दाह-संस्कार की तैयारियों में जुट गया था ।

□□□

इस समय तीनों दादा फाइनेंस कंपनी वाले ऑफिस में थे ।

तीनों की दहशत से बुरी हालत थी ।

"अब तक बख्तावर सिंह को सब कुछ मालूम हो गया होगा ।" शंकरराव बेहद बेचैन अवस्था में केबिन के अंदर इधर-से-उधर घूम रहा था- "पता नहीं क्या करेगा बख्तावर सिंह ? पता नहीं क्या होने वाला है अब ?"

"मेरे तो बख्तावर सिंह के नाम से ही होश उड़े जा रहे हैं शंकरराव ।" बैंजो ने मेज की ड्रायर से शराब की बोतल निकाली और फिर गटागट तीन-चार घूंट भरे- "यू नो ? उसने 'पर्ल बार' में दिवाकर नामक अपने टोकन सप्लायर की जब हत्या की तो उस समय हमारा एक गुंडा भी 'पर्ल बार' में मौजूद था । उसने अपनी आंखों से दिवाकर की मौत देखी । वो अभी मुझे बता रहा था कि बख्तावर सिंह ने सीधे उसके दिल में गोली मारी, वह तुरंत मर गया । यहां तक की हत्या के सुबूत भी 'पर्ल बार' के मालिक ने मिटाए । दिवाकर की लाश भी उसी ने ठिकाने लगाई । ऐसा है गोवा में बख्तावर सिंह का आतंक, उसका रुतबा, उसका जलजला । पता नहीं हमारी लाश को ठिकाने लगाएगा ? पता नहीं वो हमारे कहां गोली मारेगा ?"

"त...तू चुप कर ।" बाबू नाईक चिंघाड़ा- "जब बोलेगा हरामजादा, अपशकुन की बात बोलेगा ।"

"अब तो मुझे अपशकुन-ही-अपशकुन होता नजर आ रहा है नाईक ।" बाबू नाईक ने अपने शुष्क होठों पर जबान फेरी ।

जबकि बैंजो ने गटागट शराब के दो घूंट और भरे थे ।

"पहले भी कितनी ढेर सारी मछलियों की हमने पुड़िया बांधी थी ।" शंकरराव भुनभुनाता हुआ बोला- "लेकिन कभी कुछ नहीं हुआ । कभी किसी मछली ने चूं तक नहीं की, परंतु इस मर्तबा तो धमाके पर धमाके हो रहे हैं ।"

"यह सब इस नाईक की वजह से हुआ है ।" बैंजो बोला- "इसी की वजह से ये इतनी बड़ी आफत आई है ।"

"क्यों ?" गुर्राया बाबू नाईक- "मेरी वजह से क्यों आफत आई है ?"

"मछली की दो बार पुड़िया बांधने की क्या जरूरत थी ।" बैंजो शराब पीता हुआ ही बोला- "अगर एक बार पुड़िया बांधने के बाद ही मछली को गोली मार देता तो इतना बड़ा बवंडर ही क्यों खड़ा होता ? लेकिन नहीं, तब तो तुझे मजे की सूझ रही थी । अपनी उम्र थोड़े ही दिखाई दे रही थी तुझे । तब तो बस तेरे को मछली नजर आ रही थी कि इसकी और पुड़िया बांध दूं और पुड़िया बांध दूं । अब देख, अब बंधेगी सबकी पुड़िया ।"

"बकवास न कर ।" बाबू नाईक ने उसे लाल-लाल आंखों से घूरा- "साले की बहुत जबान चलने लगी है । मुझे क्या पता था कि ऐसा हो जाएगा । पता होता तो मैं उसकी दो बार तो क्या एक बार भी पुड़िया न बांधता, उसे छूता भी नहीं । बस कमरे में घुसते ही उसे गोली मारता ।"

"हां, बहुत शरीफ बच्चा नजर आ रहा है तू ।" बैंजो व्यंग्यपूर्वक हंसा- "दिखाई दे रहा है कि तेरा मछली में कोई इंटरेस्ट नहीं था । सूरत से ही तू तो बाल-ब्रह्मचारी नजर आता है । एकदम सूफी संत, किसी मछली को कभी चखा तक नहीं ।"

"शंकरराव !" बाबू नाईक गला फाड़कर चिल्ला पड़ा- "इस कमीने को चुप कर ले । अगर मेरा भेजा फिर गया तो मैं इसे जरूर गोली मार दूंगा । बुड्ढे और मछली की वजह से मेरी खोपड़ी पहले ही बहुत गर्म हो रही है ।"

जो अंडरवर्ल्ड के गुंडों की निगाहों में हो । यहां तक कि हमारे अपने आदमियों की निगाहों में भी हो ।"

"फिर हम कहां जाएं ?"

"डोनापाला बीच का बंगला सबसे बेहतर रहेगा ।" बाबू नाईक बोला- "वही हमारा ऐसा परमानेंट ठिकाना है, जिसके विषय में कोई कुछ नहीं जानता । चलो, हम लोग वहीँ चलते हैं ।"

बैंजो सबसे पहले झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ ।

शराब की बोतल भी उसने बंद करके अपनी जेब में रख ली थी ।

□□□

शाम तक अंजली का दाह-संस्कार भी हो गया ।

वे अत्यंत भावुक क्षण थे ।

दाह-संस्कार का सारा बंदोबस्त जैकाल ने ही किया था । परंतु दाह-संस्कार के समय खुद बख्तावर सिंह सिंडिकेट के ढेर सारे आदमियों के साथ श्मशान में मौजूद था ।

रोशनलाल ने जैसे ही चिता की को मुखाग्नि दी, वह तुरंत धूं-धूं करके जल उठी ।

अपनी बेटी को उन लकड़ियों में स्वाहा होते देख रोशनलाल एक बार फिर फूट-फूटकर रो पड़ा था ।

बख्तावर सिंह ने आगे बढ़कर उसे संभाला ।

"आज मेरे सारे सपने इस चिता के साथ चल गए गॉडफादर !" रोशनलाल फफक-फफककर रो रहा था- "आज सब कुछ खत्म हो गया । वरना मैंने क्या-क्या सुनहरे सपने देखे थे कि मैं अंजली को खूब पढ़ाऊंगा, उसकी खूब

धूमधाम से शादी करूंगा । लेकिन दरिंदों ने मेरे सारे सपने तोड़ डाले, उन्हें चिता के हवाले कर दिया ।”

रोशनलाल देर तक रोता रहा था । वे आंसू जैसे उसका नसीब बन चुके थे ।

जैकाल ने ब्लैक हाउस में ही रोशनलाल के रहने के लिए एक कमरे का भी बंदोबस्त कर दिया था ।

रोशनलाल जब शमशान से लौटा तो फिर वह उस कमरे में अकेला बंद हो गया था ।

□□□

“गॉडफादर !” जैकाल, बख्तावर सिंह के सम्मुख खड़ा हुआ- “मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं ।”

उस समय रात के दस बज रहे थे । शमशान से लौटे उन्हें काफी देर हो चुकी थी ।

“क्या कहना चाहते हो ?” बख्तावर सिंह ने नजरें उठाकर जैकाल की तरफ देखा ।

“आपको रोशनलाल को यह आश्वासन नहीं देना चाहिए था गॉडफादर ।” जैकाल थोड़े संकोच के साथ बोला- “कि आप अंजली के बलात्कारियों तथा हत्यारों से बदला लेंगे ।”

आहिस्ता से चौंक पड़ा बख्तावर सिंह । शायद उसे जैकाल से इस बात की उम्मीद नहीं थी ।

“क्यों ?’ बख्तावर सिंह ने थोड़े आश्चर्य से ही पूछा- “क्यों आश्वासन नहीं देना चाहिए था ?”

“क्योंकि आप शायद पूरी तरह उन तीनों दरिंदों को नहीं जानते हैं । बाबू नाईक, शंकरराव और बैंजो, वे तीनों ही आज गोवा अंडरवर्ल्ड की बड़ी हस्तियां हैं । उनके

कारोबार आज अंडरवर्ल्ड की दुनिया में खूब फल-फूल रहे हैं गॉडफादर ।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?" बख्तावर सिंह बोला- "स्पष्ट कहो ।"

"गॉडफादर ! आई'म वरीड ।" जैकाल सकुचाते हुए ही बोला- "कि अगर आपने उन तीनों के खिलाफ कोई कदम उठाया, तो वह सिंडिकेट को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं । म...मुझे तो डर है कि कहीं गोवा में गैंगवार न छिड़ जाए ।"

"गैंगवार !" कुटिल सी मुस्कान दौड़ी बख्तावर सिंह के होठों पर- "गैंगवार शब्द बोल देना जितना आसान है उतना ही मुश्किल है सिंडिकेट के खिलाफ गैंगवार लड़ना । लेकिन अगर वे तीनों यह बेवकूफी करते हैं और सोचते हैं कि ऐसा करके उनकी जिंदगियां बच जायेंगी । तो यह उनका सबसे बड़ा पागलपन होगा । वे तीनों दरिंदे अंडरवर्ल्ड की चाहे कितनी भी बड़ी हस्तियां क्यों न बन गए हों जैकाल, परंतु अभी सिंडिकेट से कई पायदान नीचे हैं ।"

"लेकिन फिर भी क्या जरूरत है यह सब करने की गॉडफादर ।" जैकाल ने आदरपूर्वक ही कहा- "इसमें कोई शक नहीं कि वे तीनों मिलकर भी सिंडिकेट का कुछ नहीं बिगाड़ सकते । लेकिन ये सिंडिकेट का लाखों-करोड़ों का नुकसान तो कर ही सकते हैं गॉडफादर ।"

"और तुम चाहते हो ।" बख्तावर सिंह के चेहरे पर थोड़ी सख्ती उभर आई- "कि मैं नुकसान से घबराकर उन दरिंदों को खुला छोड़ दूं ? माफ कर दूं उन्हें ? ताकि वह और लड़कियों की इज्जत लूट सकें ? उनकी हत्याएं कर सकें ? मैं भूल जाऊं अंजली की लाश को ? भूल जाऊं

वह रात उन तीनों दादाओं ने उसी बंगले पर गुजारी ।

सुबह वह इत्मीनान से सोकर उठे । पूरी रात कुशलतापूर्वक गुजरी थी और कोई घटना नहीं घटी थी ।

सुबह उठते ही बाबू नाईक टेलीफोन में बिजी हो गया । उसने अपने कई आदमियों को फोन किया और अंडरवर्ल्ड की हलचल के विषय में पूछा ।

प्रत्येक जगह से एक ही रिपोर्ट आई-अभी अंडरवर्ल्ड में कोई हलचल नहीं थी ।

अभी चारों तरफ शांति थी ।

फिर भी बाबू नाईक टेलीफोन पर टेलीफोन घुमाता रहा । उसे यह बात हजम नहीं हो रही थी कि बख्तावर सिंह ने अभी कोई एक्शन नहीं लिया । अंततः उसने रिसीवर रख दिया ।

"क्या बात है ?" शंकरराव ने फौरन कौतुहलतावश पूछा- "क्या रिपोर्ट है ?"

"अभी तक तो कोई रिपोर्ट नहीं है ।" बाबू नाईक बोला- "अभी तो अंडरवर्ल्ड में पूरी तरह खामोशी है ।"

"क...कहीं ऐसा तो नहीं है ।" बैंजो का स्वर थोड़ा आंदोलित था- "कि बख्तावर सिंह अंदर-ही-अंदर हमारी पुड़िया बांधने के इंतजाम में जुट गया हो ?"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता ।" बाबू नाईक तुरंत बोला ।

"क्यों नहीं हो सकता ?"

"क्योंकि बख्तावर सिंह जो करता है, खुलकर करता है, डंके की चोट पर करता है । यही उसकी आदत है ।"

"तो फिर उसने अभी तक किया क्यों नहीं कुछ ?"

"हो सकता है कि वह जल्दी कुछ करे । जल्दी कोई कदम उठाए । एक बात मेरा दिल बार-बार कह रहा है ।"

उसके पास दौलत और ताकत आ गई है तो वह कुछ भी कर सकता है । इन तीनों दादाओं मौत सबक होगी पूरे अंडरवर्ल्ड के लिए, पूरे क्राइम रैकेट के लिए ।"

"फ...फिर भी अगर इस विषय पर एक बार और सोच लेते गॉडफादर ।"

"मैं सोच चुका हूं, अच्छी तरह सोच चुका हूं ।"

"ओके गॉडफादर !" जैकाल ने आदर से सिर झुकाया- "मैं अभी पम्फलेट छपवाकर इनके चिपकवाने का इंतजाम करता हूं ।"

"गुड !"

"कोई और आदेश गॉडफादर ?"

"हाँ !" बख्तावर सिंह ने पाइप में से धुआं छोड़ा- "यह पता करो कि वे तीनों इस समय कहां हैं ?"

"ठीक है, मैं यह भी पता करता हूं गॉडफादर ।" जैकाल ने पुनः बख्तावर सिंह के सामने आदर से सिर झुकाया था ।

उसके बाद वो वहां से चला गया ।

□□□

पम्फलेट का सारा काम बेहद आनन-फानन हुआ था ।

शाम तक पम्फलेट छपकर तैयार हो गए । फिर रातों-रात वह पम्फलेट सिंडिकेट के आदमियों द्वारा पूरे गोवा शहर की दीवारों पर चिपका दिए गए थे ।

पम्फलेटों के चिपकते ही गोवा में भूकंप आ गया ।

अंडरवर्ल्ड में तो उस पम्फलेट ने ऐसा जबरदस्त तहलका मचाया था कि हर तरफ उसकी चर्चा थी ।

उस हंगामाखेज पम्फलेट का एक नमूना नीचे पेश है-

मौत का ऐलान

गोवा सिंडिकेट तीन आदमियों की मौत का खुला ऐलान करती है

पहला अपराधी: बैंजो- बैंजो को 25 फरवरी के दिन गोली मार दी जायेगी

दूसरा अपराधी: शंकर राव- शंकरराव को 27 फरवरी के दिन गोली मार दी जायेगी

तीसरा अपराधी: बाबू नाईक- बाबू नाईक की मौत का दिन 29 फरवरी फाइनल किया गया है। इसे भी गोली मारकर सजा दी जायेगी।

- तीनों का गुनाह है कि इन्होंने पहले 18 फरवरी की रात अंजली नामक एक लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार किया और फिर 22 फरवरी को गोली मारकर उसकी हत्या कर दी।
- तीनों अपराधियों के लिए मौत की जो तारीखें फाइनल की गयी हैं, उस दिन उन्हें किसी भी क्षण गोली मारी जा सकती है।

सजा सुनाने वाला जज- बख्तावर सिंह

सजा देने वाला जल्लाद- बख्तावर सिंह

जिसने भी पम्फलेट को पढ़ा, उसी के शरीर में सिहरन दौड़ गई।

तब तुरंत समझ गए कि अंडरवर्ल्ड में तूफान आने वाला है, खतरनाक तूफान।

□□□

दिनभर बाबू नाईक अपने आदमियों को फोन करके अंडरवर्ल्ड की हलचल के विषय में मालूम करता रहा था ।

रात के उस समय ग्यारह बज रहे थे, जब बाबू नाईक ने शराब के अपने एक ठीये पर फोन किया ।

"ओह क्राइस्ट ! थेंक गॉड नाईक साहब !" तुरंत ठीये के मैनेजर की बुरी तरह घबराई आवाज उसके कानों में पड़ी- "अ...आप कहां से बोल रहे हैं नाईक साहब ?"

"क्यों ?" उसकी घबराहट देखकर बाबू नाईक का दिल भी जोर से धड़का-"क्या हो गया ?"

"यू मीन... आपको कुछ नहीं मालूम नाईक साहब ?"

"नहीं, मुझे तो कुछ नहीं मालूम । लेकिन हुआ क्या ?"

"अंडरवर्ल्ड में इस वक्त बड़ा जबरदस्त हंगामा मचा हुआ है नाईक साहब ।" मैनेजर बेहद आंदोलित मुद्रा में बोला- "मुझे तो आश्चर्य हो रहा है कि आपको कुछ नहीं मालूम । गोवा के बच्चे-बच्चे की जबान पर इस समय गॉडफादर के 'मौत के ऐलान' की चर्चा है । गॉडफादर ने अंजली वाले केस के सिलसिले में आप तीनों को गोली मार देने का जजमेंट जारी कर दिया है । यहां तक कि आप तीनों की मौत की तारीखें भी डिक्लेयर कर दी हैं ।"

बाबू नाईक के नेत्र दहशत से फट पड़े- "त...तुम्हें यह सब कैसे मालूम ?"

"नाईक साहब !" मैनेजर बोला- "सिंडिकेट की तरफ से पूरे गोवा में इस संबंध में बड़े-बड़े पम्फलेट चिपका दिए गए हैं । आप अगर इस समय गोवा में ही कहीं हैं तो बाहर सड़क पर निकलकर देखिए । मेरी गारंटी है कि आपको कहीं-न-कहीं पम्फलेट चिपका हुआ नजर आएगा । क्योंकि बड़ी तादाद में वह पम्फलेट चिपकाए गए हैं ।"

बाबू नाईक ने आहिस्ता से टेलीफोन का रिसीवर रख दिया।

□□□

बाबू नाईक धम्म से यूं सोफे पर बैठा, जैसे एकाएक उसका शरीर निर्जीव हो गया हो।

"क...क्या हुआ ?" तुरंत शंकरराव और बैंजो उसकी तरफ लपके- "क्या खबर है ?"

"बहुत खतरनाक खबर है।"

"कैसी खतरनाक खबर ?"

"म..मैंने जगतपाल को फोन किया था।" बाबू नाईक कंपकंपाये स्वर में बोला- "उ...उसने बताया कि गॉडफादर ने हमारे खिलाफ मौत का फरमान जारी कर दिया है। हम तीनों को गोली मारने की सजा सुना दी है।"

"व्हाट द फ... यह क्या कह रहा है तू ?" बैंजो की आंखों में मौत नाची।

"यह मैं नहीं जगतपाल कह रहा है। उसने यह भी बताया कि बख्तावर सिंह ने हमारी मौत की तारीखें भी फाइनल कर दी हैं।"

"लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है।" शंकरराव ने एकदम अपने शुष्क पड़ गए होठों पर जबान फेरी- "कि जगतपाल झूठ बोल रहा हो।"

"उसे झूठ बोलकर क्या मिलेगा ?" बाबू नाईक भड़का- "फिर वो हमारा आदमी है। हमारा वफादार आदमी है। वो हमारी हिमायत लेगा या गॉडफादर की हिमायत लेगा।"

बैंजो उनमें से एक पम्फलेट को उतारकर अंदर ले आया ।

□□□

अब उन तीनों के बीच जबरदस्त आतंक फैल चुका था ।

सिंडिकेट की तरफ से जारी वह पम्फलेट इस समय उन तीनों के बीच रखा था, जिसे वे तीनों कई मर्तबा पढ़ चुके थे ।

और जितनी बार भी उन्होंने वह पम्फलेट पढ़ा था, उतनी ही उनके बीच दहशत फैली थी ।

सबसे ज्यादा बैंजो की बुरी हालत थी क्योंकि पहला नंबर उसी का था ।

“क...कल 24 फरवरी है ।” बैंजो थरथर कांपते स्वर में बोला- “और परसों 25 फरवरी । परसों बख्तावर सिंह मुझे गोली मार देगा ।”

बाबू नाईक और शंकरराव ने भी अपने शुष्क होठों पर जबान फेरी तथा बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

“य...यानी अब मेरी जिन्दगी और मौत के बीच सिर्फ एक दिन का फासला है शंकरराव !” बैंजो ने तुरंत शंकरराव का हाथ पकड़ लिया- “मुझे बचा लो शंकरराव । मुझे उस जल्लाद के हाथों से बचा ले । वरना वह परसो मेरी पुड़िया बांध डालेगा ।”

बैंजो की हालत उस समय ऐसी थी कि उसकी आंखों से आंसू निकलने को तैयार थे ।

“बास्टर्ड ने सबसे पहले नंबर पर भी तो मुझे ही लगाया है ।” बैंजो रुआंसे स्वर में बोला- “पता नहीं क्या बिगाड़ा था मैंने उसका ।”

"उसने बिल्कुल सही तेरे को पहले नंबर पर लगाया है।" बाबू नाईक एकाएक गुस्से में नाग की तरह फुंफकार उठा- "तू है ही इसी काबिल।"

"क...क्यों ?" बैंजो हड़बड़ाया- "म...मैंने क्या किया ?"

"तेरी वजह से ही आज हम सब इस अंजाम तक पहुंचे हैं। तूने ही सबसे पहले उस मछली को देखा था। सबसे पहले तेरे अंदर ही उस मछली को देखकर आग भड़की थी कि उसकी पुड़िया बांधी जाए। तब तो बड़े मीठे-मीठे सुर में राग अलाप रहा था कि घरेलू मछली की बात ही कुछ और होती है। फ्रेश मछली की बात ही कुछ और होती है। अरे मैं कहता हूं।" बाबू नाईक झल्लाकर बोला-"मछली-मछली में भी भला कहीं फर्क होता है। घरेलू हो या कोठे वाली हो, सब एक ही काम आती हैं, पुड़िया बांधने के। लेकिन नहीं, तब तो फ्रेश के चक्कर में मुझे भी अंधा बना दिया था और खुद भी अंधे बन गए थे।"

"अब मुझे ये थोड़े ही मालूम था।" बैंजो भी झल्लाया- "कि वह पुड़िया बांधना हमारे लिए इतना बड़ा हंगामा पैदा कर देगा।"

"अगर तुझे मालूम होता तो तू तब भी बाज नहीं आता।" बाबू नाईक कर्कश लहजे में ही बोला- "मैं तेरी फितरत से वाकिफ हूं। मछली को देखकर तू कैसा पागल होता है, यह मेरे से बेहतर कोई नहीं जानता। तब तो तुझे बस मजे की पड़ती है। वैसे भी मछली की सबसे पहली पुड़िया भी तो तूने ही बांधी थी। कह रहा था, अनछिदी है। सबसे पहले मैं छेद करता हूं। अब कर ले बेटा छेद। अब सबसे

पहले वो हम सबका बाप बख्तावर सिंह तेरे में ही छेद करेगा ।”

“नाईक !” शंकरराव थोड़ी सख्ती से बोला- “यह लड़ाई-झगड़े का टाइम नहीं है ।”

“लड़ाई-झगड़ा कौन उल्लू का पट्ठा कर रहा है ।” बाबू नाईक बोला- “अब तो मातम मनाने का टाइम है । दो-दो दिन के आगे-पीछे तीनों ही इस दुनिया से विदा हो रहे हैं ।”

“एक आइडिया है मेरे पास ।” तभी शंकरराव बोला ।

“कैसा आइडिया ?”

“हमें कानून की मदद लेनी चाहिए । जिस तरह बख्तावर सिंह ने पूरे गोवा में पम्फलेट चिपकाकर हमारी मौत का ऐलान किया है, वह गैरकानूनी काम है । ऐसी पोजीशन में हमें कानून की हिमायत हासिल हो सकती है ।”

“तू पागल हो गया है ।” बाबू नाईक गुर्राया- “अरे हम कानूनी लड़ाई में उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे । सिंडिकेट का वकील कोर्ट में कहेगा कि वह पम्फलेट बख्तावर सिंह की तरफ से चिपकाए ही नहीं गए । वह जरूर बख्तावर सिंह के किसी दुश्मन का काम है, जो बख्तावर सिंह को बदनाम करना चाहता है । बता, ऐसी पोजीशन में क्या सबूत है हमारे पास ? कैसे हम साबित करेंगे कि नहीं पम्फलेट की यह हरकत बख्तावर सिंह की ही है ? फिर तू भूल रहा है शंकरराव कि गोवा में कोई भी अदालत बख्तावर सिंह से ऊपर नहीं है । गोवा का कानून बख्तावर सिंह की हुकुम का गुलाम है ।”

शंकरराव ने पुनः अपनी शुष्क होठों पर जबान फेरी तथा फिर वह जल्दी से शराब की एक बोतल और तीन गिलास उठा लाया ।

"तू कहना क्या चाहता है ?" बाबू नाईक ने हैरानी से शंकरराव की तरफ देखा- "मैं यह कहना चाहता हूं नाईक कि हमें अपनी शक्ति को पहचानना चाहिए ।" शंकरराव भरपूर जोश के साथ बोला- "अगर बख्तावर सिंह ने रसगुल्ला समझकर हम तीनों को खाने की कोशिश की तो हम उसके सिंडिकेट की ईंट से ईंट बजा देंगे ।"

"त...तू सिंडिकेट से टकराने की सोच रहा है ?" बाबू नाईक का स्वर काँप उठा ।

"हां, यही सोच रहा हूं मैं ।" शंकरराव ने कहा- "अगर बख्तावर सिंह ने हमारी हत्या करने का प्रयास किया तो हम उसे बताएंगे कि हम क्या हैं ।"

"तू पागल हो गया है ।" बाबू नाईक कहर भरे स्वर में बोला- "लगता है कि ज्यादा पी ली है तूने ।"

"नहीं ।" शंकरराव की गर्दन इंकार में हिली । उसकी आंखें लाल सुर्ख हो रही थीं- "मैं पूरी तरह होश में हूं ।"

"तुझे क्या लगता है कि हम अंडरवर्ल्ड की सबसे बड़ी ताकत का मुकाबला कर सकते हैं ? सिंडिकेट का मुकाबला कर सकते हैं ?"

"यह सच है कि हम सिंडिकेट का मुकाबला नहीं कर सकते ।" शंकरराव ने बेहिचक कबूल किया- "तीनों मिलकर भी नहीं कर सकते । लेकिन बख्तावर सिंह ने हमारी मौत का ऐलान तो कर ही दिया है नाईक । तो फिर क्यों न हम लोग लड़ते हुए मरें ।"

"ही इज राइट ।" बैंजो फौरन बोला- "अपना शंकरराव एकदम ठीक कह रहा है ।"

"तू चुप रह ।" बाबू नाईक गुर्राया- "एक बार तो फंसवा चुका है । दोबारा और फंसवाएगा ।"

"यह फंसवाने की बात नहीं है नाईक !" शंकरराव बोला- "बल्कि एकदम ठीक बात है। अब यही एक रास्ता हम लोगों के सामने बचा है । हमें जंग का ऐलान करना चाहिए । क्या पता करिश्मा हो जाए । क्या पता हम सिंडिकेट की ईंट से ईंट बजाने में कामयाब हो जाएँ ।"

"पागल मत बन शंकरराव ! अगर हमने गैंगवार छेड़ी, तो हमारी मौत निश्चित है।"

"मौत तो फिर भी निश्चित है ।"

"नहीं है निश्चित ।" बाबू नाईक झटके से बोला- "अभी भी हम बच सकते हैं। एक रास्ता है हमारे पास ।"

"वह कौन सा रास्ता है ?" शंकरराव और बैंजो दोनों चौंके थे।

क्योंकि उनकी समझ के मुताबिक अब ऐसा कोई रास्ता नहीं था।

"अगर हम किसी बेहद सुरक्षित जगह छिप जायें ।" बाबू नाईक ने रास्ता बताया- "और बख्तावर सिंह फाइनल तारीखों में हमारा क़त्ल न कर सके तो फिर हम बच जाएंगे । फिर हमें कोई नहीं मार सकता । बख्तावर सिंह भी नहीं क्योंकि बख्तावर सिंह का उसूल है कि एक बार कोई तारीख फाइनल करने के बाद वो कभी दूसरी तारीख फाइनल नहीं करता ।"

बाबू नाईक की बात सुनकर दोनों की आंखों में हजार-हजार वाट के बल्ब जल उठे ।

बात एकदम सच थी । वाकई बख्तावर सिंह इस मामले में उसूल का पक्का था ।

"लेकिन हम छिपेंगे कहां ?" बैंजो ने शीघ्रतापूर्वक पूछा- "ऐसी कौन सी जगह हो सकती है, जहां बख्तावर सिंह हम तक न पहुंच सके ।"

"जहां तक मेरा अनुमान है, छिपने के लिए इस बंगले से ज्यादा बढ़िया और क्या जगह हो सकती है ।" बाबू नाईक बोला ।

"बिल्कुल ठीक बात है ।" शंकरराव ने भी कहा- "इस मामले में यह बंगला सबसे बढ़िया है ।"

"तो फिर गैंगवार का प्रोग्राम कैंसिल ?"

"कैंसिल ।"

बाबू नाईक ने संतोष की गहरी सांस ली ।

जबकि बैंजो अभी भी बेचैन था ।

वह अभी भी पूरी तरह आश्वस्त नजर नहीं आ रहा था ।

उस रात उन तीनों में से कोई भी दहशत और बेचैनी के कारण सो नहीं सका ।

□□□

"आओ जैकाल !" बख्तावर सिंह जैकाल को देखते ही सतर्क हो गया- "ऐनी न्यूज़ ?"

"खबर कुछ अच्छी नहीं है गॉडफादर !" जैकाल के चेहरे पर चिंता की गहरी लकीरें खिंची हुई थी- "सारी रात सिंडिकेट के आदमियों ने उन तीनों दरिंदों को तलाश किया है लेकिन वे अपने किसी भी ठिकाने पर मौजूद नहीं है । उन तीनों के सभी ठिकाने चेक किए जा चुके हैं और बाकायदा बड़ी बारीकी से चेक किए जा चुके हैं ।"

“ओके गॉडफादर । मैं अभी टेलीफोन एक्सचेंज की मदद से उनके सभी प्रमुख ठिकानों की टेलीफोन लाइन टेप करने की व्यवस्था करता हूं ।”

“गुड । अब तुम जा सकते हो ।”

“थैंक यू गॉडफादर ।”

फिर जैकाल वहां से चला गया ।

□□□

बैंजो की स्थिति काफी दयनीय थी ।

उसे अभी भी इस बात पर विश्वास नहीं हो पा रहा था कि वो मरने से बच जाएगा ।

यूं तो सारी रात तीनों ही जागे थे परंतु बैंजो तो एक पल के लिए लेटा भी नहीं था । सारी रात उसने बंगले में इधर-से-उधर चहलकदमी करते हुए गुजारी ।

वो बार-बार पानी पीता था । बार-बार अपने चेहरे के पसीने साफ करता था ।

सुबह उसने नाश्ता भी नहीं किया ।

उसकी हालत देखकर बाबू नाईक बोला- “मुझे लगता है कि बख्तावर सिंह को तेरी पुड़िया बांधने की जरूरत नहीं पड़ेगी । कल 25 फरवरी है । अगर तेरी यही हालत रही तो तेरी पुड़िया तो अपने आप बंध जाएगी ढक्कन । 25 फरवरी से पहले ही बंध जाएगी ।”

“ले ।” शंकरराव बोला- “कुछ नाश्ता कर ले ।”

“न...नहीं ।” बैंजो सहमे-सहमे स्वर में बोला- “मुझे भूख नहीं है ।”

पम्फलेट देखने के बाद से अब तक उसका मुंह जरा सा निकल आया था ।

और सख्त थी- "शेर अपना शिकार हमेशा खुद करता है और वे तीनों मेरे शिकार हैं, मेरे अपने शिकार।"

"लेकिन आप सिंडिकेट के मालिक हैं गॉडफादर। सिंडिकेट में काम करने वाले पांच हजार कर्मचारी भी तो आपके ही हैं। आप एक बड़ी फौज के बादशाह हैं।"

"बिल्कुल ठीक कहा तुमने।" बख्तावर सिंह बोला- "मैं एक बड़ी फौज का बादशाह हूं। लेकिन मेरे सिद्धांत अलग है। मैं इस बात में यकीन नहीं रखता कि बादशाह का काम सिर्फ हुक्म देना है जैकाल। मैं समझता हूं कि जिस दिन बादशाह सिर्फ हुक्म देने लगता है, उस दिन वो नकारा हो जाता है, बेकार हो जाता है। और नकारा बादशाह को उसकी फ़ौज भी बर्दाश्त नहीं करती। इसीलिए हर खतरा अपनी फ़ौज से पहले मैं खुद उठाना चाहता हूं। मौत के खौफ से मैं ब्लैक हाउस की इन ऊंची-ऊंची शाही किले जैसी दीवारों में कैद नहीं होना चाहता।"

बख्तावर सिंह का तर्क सुनकर जैकाल शब्द-विहीन हो गया।

उस पल उसके दिल में बख्तावर सिंह के प्रति सम्मान कुछ और बढ़ गया था।

वह सचमुच में गॉडफादर था, एक पापी गॉडफादर। जिसका नाम गोवा के हजारों लोगों के दिलों पर स्वर्ण अक्षरों में लिखा था।

"डोन्ट वेस्ट ऐनी मोर टाइम।" तभी बख्तावर सिंह ने अपनी रिस्टवाच देखी- "पहले ही तुम्हें काफी देर हो चुकी है।"

"अरे पागल, अगर कुछ खाएगा नहीं।" बाबू नाईक उसे किसी बच्चे की तरह फटकारता हुआ बोला- "तो फिर तेरी और बुरी हालत हो जाएगी।"

"वह तो अब मेरी होनी ही है।" बैंजो रुआंसे स्वर में बोला- "देख लेना नाईक, नो वन केन सेव मी नाउ। बख्तावर सिंह मुझे कल मार डालेगा।"

"लगता है कि तेरे दिमाग के नट-बोल्ट ढीले हो गए हैं साले।" बाबू नाईक सख्त लहजे में बोला- "अरे वह कैसे मार डालेगा तुझे ? उसे यह मालूम ही कैसे होगा कि हम तीनों यहां हैं ?"

"मैं नहीं जानता कि उसे कैसे मालूम होगा।" बैंजो का चेहरा धुआं-धुआं हो रहा था- "मैं बस इतना जानता हूं कि उसे किसी तरह मालूम हो जाएगा। वो बख्तावर सिंह है। वो सिंडीकेट का बादशाह है।"

"तुझे ख्वामाखाह वहम हो गया है।" शंकरराव बोला- "मैं कहता हूं कि तुझे कुछ नहीं होगा। 25 फरवरी बिल्कुल अमन-चैन से गुजर जाएगी।"

"नो।" बैंजो अपनी बात पर दृढ़ था- "देख लेना, कल मेरी मौत लाजिमी है। कल का दिन मेरी जिंदगी का आख़िरी दिन है।"

शंकरराव ने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया- "अब कौन समझाए तुझे, तेरे दिलो-दिमाग पर मौत की दहशत बुरी तरह सवार हो चुकी है।"

"नाईक !" बैंजो जल्दी से बाबू नाईक के नजदीक पहुंचकर उससे लिपट गया- "मुझे बचा ले नाईक। तू ठीक कहता है, गलती मेरी ही थी। मेरे ही कारण तुम दोनों भी आज इस अंजाम को पहुंचे हो। पता नहीं उस मछली

की पुड़िया बांधने का विचार मेरे दिमाग में आया ही क्यों था ? मैं अपनी गलती कबूल करता हूं नाईक । लेकिन तू मुझे बचा ले । मैं अभी मरना नहीं चाहता । म...मैं अभी जिंदा रहना चाहता हूं ।"

बैंजो की हालत देखकर बाबू नाईक का दिल हाहाकार करने लगा ।

उसने जीवन में कल्पना भी नहीं की थी कि कभी उन तीनों का वैसा हश्र भी हो सकता है ।

□□□

काफी देर बाद जाकर बैंजो की हालत थोड़ी संभली ।

"देखो ।" तब बैंजो थोड़ा रुककर बोला- "न जाने क्यों मेरा दिल कहता है कि अगर मैं यहां रहा तो मैं मर जाऊंगा ।"

"लेकिन यहां कैसे मर जाएगा तू ?" शंकरराव ने अपने शब्दों पर जोर देकर पूछा ।

"यह मैं नहीं जानता ।" बैंजो की आवाज पहले की तरह कांप रही थी- "ब..बस मेरा दिल कहता है ।"

"ठीक है ।" बाबू नाईक बोला- "मैंने मानी तेरी बात । तुझे इस बंगले में रहते हुए डर लग रहा है । तुझे डर है कि बख्तावर सिंह कल यहां पहुंच सकता है ।"

"ह...हां यही बात है ।" बैंजो ने अपने चेहरे के पसीने साफ किए- "म...मैं कहीं और शिफ्ट होना चाहता हूं ।"

"और कहां शिफ्ट होना चाहता है तू ?"

"किसी भी ऐसी जगह, जहां बख्तावर सिंह न पहुंच सके ।"

"ऐसी तो मेरी निगाह में और कोई जगह नहीं ।" बाबू नाईक गंभीर स्वर में बोला- "मैं तो समझता हूं कि छिपने के लिए यह बंगला ही सबसे बेहतर जगह है ।"

"नहीं । इस बंगले के अलावा भी एक जगह और है ।"

"और कौन सी जगह है ?"

"तुम लोग गोवा शहर की घनी आबादी वाले मडगांव के बीचों-बीच बने दस मंजिले 'अजंता टावर' को भूल रहे हो । उस अजंता टावर को, जिसके मालिक हम लोग ही हैं । जो कहने को तो एक गेस्ट हाउस है, लेकिन वह वास्तव में जिस्मफरोशी का एक बड़ा अड्डा है और वहां हमारे आदमी बड़ी भारी-भारी कीमतों पर कॉलगर्ल सप्लाई करते हैं ।"

"तू कहना क्या चाहता है ?" शंकरराव घोर विस्मय से बोला- "क्या तू यह चाहता है कि तू उस 'अजंता टावर' में जाकर छिप जाए ।"

"अजंता टावर में नहीं ।" बैंजो तत्परतापूर्वक बोला- "बल्कि अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर ।"

"दसवीं मंजिल पर क्या खास बात है ?"

"ये तो तुम्हें मालूम ही है ।" बैंजो का दिमाग एकाएक बहुत तेजी से चलने लगा था- "अजंता टावर में कुल तीन लिफ्टें हैं लेकिन उन तीनों लिफ्टों में एक ही लिफ्ट ऐसी है, जो सबसे ऊपर यानी दसवीं मंजिल तक जाती है ।"

"बिल्कुल ठीक बात है ।" शंकरराव बोला- "एक ही लिफ्ट दसवीं मंजिल तक जाती है ।"

"नाउ इमेजिन शंकरराव ।" बैंजो थोड़ा उत्साहपूर्वक बोला- "कि अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर हम पूरी तरह खाली करा लेते हैं और वहां मैं जाकर छिप जाता हूं । सिर्फ इतना ही नहीं, मैं लिफ्ट से दसवीं मंजिल पर पहुंचने

“इसका मतलब अजंता टावर की दसवीं मंजिल खाली करायी जाए ?”

“करा लो। वैसे भी जब बैंजो का दिल गवाही नहीं देता कि वो यहाँ बंगले में छिपे तो फिर यही बेहतर है कि उसके अजंता टावर में छिपने का बंदोबस्त किया जाए।”

“तुम क्या कहते हो बैंजो ?”

“मैं तो इस बंगले में एक मिनट भी नहीं रुकना चाहता हूँ।” बैंजो तत्काल बोला- “मैं तो अजंता टावर में जाना चाहता हूँ।”

“ठीक है।” शंकरराव बोला- “तो फिर मैं अजंता टावर की दसवीं मंजिल बिल्कुल खाली करने का बंदोबस्त करता हूँ।”

शंकरराव टेलीफोन की तरफ बढ़ गया।

□□□

अजंता टावर मडगांव के बेहद भीड़-भाड़ वाले इलाके में बना था।

पीटर परेरा, यह उस गुंडे का नाम था, जो अजंता टावर का सर्वेसर्वा था और जिसके अंडर में वहां जिस्मफरोशी का सारा कारोबार होता था।

पीटर परेरा की उम्र मुश्किल से पैंतीस साल थी। उसका रंग गोरा-चिट्टा था और उसने अपने चेहरे पर हल्की फ्रेंचकट दाढ़ी रखी हुई थी। आज जो पीटर परेरा, शक्ल-सूरत तथा पर्सनैलिटी से कोई बिजनेसमैन नजर आता था, वही पीटर परेरा कभी गोवा में वेश्याओं की दलाली का मामूली काम करता था, लेकिन वो शंकरराव की निगाह में ऐसा चढ़ा

कि शंकरराव ने उसे पूरे अजंता टावर की देखभाल के लिए नियुक्त कर दिया ।

इन दिनों पीटर परेरा के मजे ही मजे थे । उसकी जिन्दगी के दो ही शौक थे, शानदार भोजन करना और शानदार से शानदार लड़की के साथ बिस्तर पर रात गुजारना ।

अजंता टावर की उस नौकरी के दौरान पीटर के ये दोनों ही शौक पूरे हो रहे थे ।

अभी थोड़ी ही देर पहले ही पीटर परेरा एक लड़की के साथ कुश्ती लड़कर अपने ऑफिस में आया था ।

तभी टेलीफोन की घंटी बजी ।

"यस ।" उसने रिसीवर उठाया- "पीटर परेरा स्पीकिंग ।"

"परेरा ।" तुरंत एक भारी-भरकम आवाज उसके कानों में पड़ी- "मैं शंकरराव बोल रहा हूँ ।"

"कहिये साहब !" पीटर परेरा फ़ौरन अलर्ट बोला- "कैसे फोन किया साहब ? अंडरवर्ल्ड में तो इस समय आप तीनों साहबों को लेकर बड़ा हंगामा मचा हुआ है ।"

"वह सब मैं जानता हूँ ।" शंकरराव कुपित होकर बोला- "वह सारी खबरें मुझे मिल रही हैं । इस समय मैंने तुम्हें एक बेहद जरूरी काम से फोन किया है परेरा ।"

"टेल मी सर ।" पीटर परेरा तुरंत बोला- "क्या काम है ?"

"टावर की दसवीं मंजिल पर इस समय कुल कितने कस्टमर ठहरे हुए हैं ?"

"एकदम एक्यूरेट तो मुझे नहीं मालूम साहब लेकिन फिर भी अंदाजन पांच-छः कस्टमर ठहरे हुए हैं ।"

"ठीक है। तुम उन सभी कस्टमरों को नीचे की मंजिलों पर शिफ्ट करा दो। मैं एक घंटे के अंदर-अंदर अजंता टावर की दसवीं मंजिल पूरी तरह खाली चाहता हूँ।"

"व्हाट हैप्पंड साहब ?" पीटर परेरा एकाएक थोड़ा घबरा उठा।

"सवाल कोई नहीं। जो मैं कह रहा हूँ, सिर्फ वह करो।" शंकरराव सख्त स्वर में बोला- मैं एक घंटे के अंदर-अंदर अजंता टावर की दसवीं मंजिल पूरी तरह खाली चाहता हूँ। वहां एक भी व्यक्ति मौजूद नहीं होना चाहिए। किसी का कोई सामान मौजूद नहीं होना चाहिए।"

"ओके साहब ! मैं अभी दसवीं मंजिल पूरी तरह खाली कराता हूँ।"

"और यह बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिए।" शंकरराव सख्ती से हिदायत करता हुआ बोला- "कि दसवीं मंजिल खाली कराने का आदेश मैंने तुम्हें दिया है या फिर मेरा कोई फोन तुम्हारे पास आया है।"

"ठीक है साहब। किसी को कुछ मालूम नहीं होगा। मैं अभी सारा इंतजाम करता हूँ।"

पीटर परेरा ने टेलीफोन रख दिया।

उसके बाद वो बड़ी तेजी से अजंता टावर की दसवीं मंजिल खाली कराने में जुट गया था।

परन्तु अंडरवर्ल्ड में उस समय जो हंगामा मचा हुआ था, उसके विषय में सोच-सोचकर पीटर परेरा कुछ डर भी रहा था। उसे साफ़-साफ़ लग रहा था कि 'अजंता टावर' अब अंडरवर्ल्ड में मचे हंगामे का केन्द्र बनने जा रहा है।

□□□

दोपहर के दो बजे का समय था। बख्तावर सिंह डायनिंग टेबल की एक कुर्सी पर बैठा उस समय भोजन करने में व्यस्त था।

बख्तावर सिंह कितने विराट हृदय का मालिक था, इस बात का सबसे बड़ा सुबूत यह था कि रोशनलाल भी उसके साथ बैठा भोजन कर रहा था।

अलबत्ता रोशनलाल की हिम्मत नहीं हो रही थी कि वो बख्तावर सिंह जैसे बड़े आदमी के साथ भोजन करे, लेकिन बख्तावर सिंह ने उसे आदेश दिया था, इसलिए वो मजबूर था।

तभी जैकाल ने वहां कदम रखा। उस समय उसकी चाल में विजयपूर्ण तेजी थी और चेहरे पर चमक विराजमान थी।

जैकाल को देखते ही दोनों खाना खाते रुक गये।

"मैं बड़ी अच्छी खबर लाया हूँ गॉडफादर !" जैकाल प्रसन्नचित मुद्रा में बोला- "सिंडिकेट के आदमी यह पता लगाने में कामयाब हो गए हैं कि वह तीनों दरिन्दे इस समय कहाँ हैं ?"

"कहाँ हैं ?" बख्तावर सिंह के चेहरे पर भी चमक फ़ैल गयी।

"वे तीनों इस समय डोनापाला बीच पर बने एक बंगले में हैं गॉडफादर। मैंने पता कर लिया है कि वह बंगला एक क्रिस्चियन आदमी का है और वह क्रिस्चियन बैंजो का बाप था।"

"तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?" बख्तावर सिंह के स्वर में कौतूहलता जागी।

था कि एक घंटे के अंदर-अंदर अजंता टावर की दसवीं मंजिल एकदम खाली करा दी जाए ।"

"क्यों ?" बख्तावर सिंह चौंका- "शंकरराव ने पीटर परेरा को ऐसा आदेश क्यों दिया ?"

"वजह तो शंकरराव ने पीटर परेरा को भी नहीं बतायी गॉडफादर । उसने सिर्फ दसवीं मंजिल खाली कराने का आदेश पीटर परेरा को दिया । लेकिन जहाँ तक मेरा अनुमान है, वह लोग अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर बैंजो को छिपाएंगे । शायद वे डोनापाला बीच वाले बंगले में खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं, इसीलिए उन्होंने छिपने के लिए अजंता टावर की दसवीं मंजिल को चुना है ।"

"अजंता टावर की दसवीं मंजिल में ऐसी क्या ख़ास बात है, जो उन्होंने उसे चुना ।"

"यह तो मुझे भी नहीं मालूम गॉडफादर ।" जैकाल बोला ।

"लेकिन मैं बता सकता हूँ ।" बहुत देर से खामोश बैठे रोशनलाल ने एकदम से कहा- "कि अजंता टावर की दसवीं मंजिल में क्या ख़ास बात है ।"

"क्या ख़ास बात है ?"

बख्तावर सिंह तथा जैकाल ने कौतूहलता से रोशनलाल की तरफ देखा ।

"मैं एक बार खुद अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर गया था गॉडफादर ।" रोशनलाल तत्परतापूर्वक बोला- "बाबू नाईक ने एक बैग देने के लिए मुझे शंकरराव के पास भेजा था । तब शंकरराव अजंता टावर की दसवीं मंजिल

पर ही था, इसलिए मुझे वहीं जाना पड़ा और तभी मैंने वहां एक ख़ास बात नोट की थी ।"

"क्या ख़ास बात नोट की थी ?"

"अजंता टावर में कुल तीन लिफ्टें हैं गॉडफादर ।" रोशनलाल रहस्यपूर्ण स्वर में बोला- "परन्तु आपको यह सुनकर हैरानी होगी कि दसवीं मंजिल तक उन तीनों में से एक लिफ्ट जाती है ।"

"इसमें हैरानी की क्या बात है ? लिफ्टों में इस तरह का फर्क तो सभी मल्टी बिल्डिंगों में पाया जाता है ।"

"ठीक कहा आपने गॉडफादर । लेकिन अब शायद उसी फर्क को वे तीनों शैतान अपने सुरक्षा हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने जा रहे हैं । मैं उन तीनों बदमाशों को अच्छी तरह जानता हूँ । वे बदमाश जरूर बैंजों की दसवीं मंजिल पर छिपा देंगे और लिफ्ट के दसवीं मंजिल पर ही कनेक्शन काट डालेंगे । इनसे बैंजो वहां बिल्कुल सुरक्षित हो जाएगा, क्योंकि लिफ्ट मौजूद न होने के कारण किसी का भी उस तक पहुँचना बिल्कुल नामुमकिन होगा ।"

रोशनलाल की बात सुनकर बख्तावर सिंह तथा जैकाल के दिमाग में धमाके होने लगे ।

उनके नेत्र खुले के खुले रह गए ।

वाकई, वे तीनों शैतान वही चाल चलने जा रहे थे, तो वह चाल सचमुच लाजवाब थी ।

□□□

"मैं आपकी बात का यकीन करें गॉडफादर ।" रोशनलाल गुस्से में मुट्ठियाँ भींचता हुआ बोला- "वे तीनों दरिन्दे हंड्रेड परसेंट यही चाल चलने जा रहे हैं । मैं उनकी

नस-नस से वाकिफ हूँ। मैं बरसों उन कमीनों के साथ रहा हूँ।"

"गॉडफादर ।" जैकाल एकाएक सनसनाए स्वर में बोला- "अब तो मुझे भी लग रहा है कि रोशनलाल की बात ठीक है। जरूर इसलिए शंकरराव ने अजंता टावर की वह दसवीं मंजिल खाली कराई है।"

"हूँ !" बख्तावर सिंह ने गहरी हुंकार भरी- "शायद तुम दोनों ठीक ही कह रहे हो।"

"गॉडफादर !" जैकाल पुन: उत्तेजित मुद्रा में बोला- "अगर उनका यही प्लान है तो अब से थोड़ी देर बाद ही बैंजो अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर शिफ्ट हो जाएगा।"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?"

"मैं कहना चाहता हूं गॉडफादर, अगर बैंजो एक बार अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर शिफ्ट हो गया और उसने ऊपर से लिफ्ट के कनेक्शन काट दिए तो वह सुरक्षित हो जाएगा। फिर तो यह समझो, जैसे कि वह बैंक के किसी मजबूत स्ट्रांग रुम में बंद हो गया हो। इसलिए इससे पहले कि बैंजो अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर शिफ्ट हो आप डोनापपाला बीच के बंगले पर पहुंचकर उसे मार डालो।"

"नहीं। मैं आज उसे नहीं मार सकता।" बख्तावर सिंह बोला- "तुम शायद भूल रहे हो कि आज 24 फरवरी है और मैंने उसकी मौत की तारीख 25 फरवरी मुकर्रर की है।"

"लेकिन कल उसे मारना बहुत मुश्किल होगा गॉडफादर।"

जैकाल की बात सुनकर मुस्कुराया बख्तावर सिंह।

"इस दुनिया में कोई काम मुश्किल नहीं होता जैकाल।" बख्तावर सिंह बोला- "सिर्फ आदमी अपने इरादे का पक्का होना चाहिए। तुम देखना, बैंजो चाहे किसी भी 'खोह' में जाकर क्यों न छिप जाए, वह चाहे अपने चारों तरफ सुरक्षा की कितनी भी ऊंची दीवारें क्यों न खड़ी कर ले लेकिन कल उसकी मौत लाजिमी है। वह कल मरेगा और मेरे ही हाथों से मरेगा।"

जैकाल अब खामोश हो गया।

वह जानता था कि बख्तावर सिंह के शब्द पत्थर की लकीर होते हैं।

"तुम अब सिर्फ एक काम और करो जैकाल।"

"कहिए, गॉडफादर।"

"डोनापाला बीच वाले बंगले के बाहर तो तुमने सिंडिकेट के आदमी तैनात कर ही दिए हैं, अब इसी तरह अजंता टावर के बाहर भी सिंडिकेट के आदमी तैनात कर दो और उनसे कहो कि वह सारी सभी महत्वपूर्ण घटनाओं की खबर ब्लैक हाउस में भेजें।"

"ओके गॉडफादर ! मैं अभी अजंता टावर के बाहर भी सिंडिकेट का जाल फैलाता हूं।"

"गुड। अब तुम जा सकते हो।"

जैकाल ने बख्तावर सिंह के सामने आदर से सिर झुकाया तथा फिर वहां से चला गया।

□□□

वे दोनों पुनः भोजन करने में व्यस्त हो गए थे।

"मेरे कारण आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ रहा है गॉडफादर।" भोजन करते हुए रोशनलाल थोड़े कृतज्ञ भाव से बोला।"

"ऐसा कुछ नहीं है ।" बख्तावर सिंह ने सामान्य ढंग से कहा- "यह जंग अब सिर्फ तुम्हारी ही नहीं रोशनलाल बल्कि अब यह जंग मेरी भी है । उसी पल से यह जंग मेरी हो गई थी, जिस पल तुम अंजली की लाश लेकर इंसाफ मांगने के लिए मेरे पास आए थे ।"

"आप सचमुच महान हैं गॉडफादर ।" रोशनलाल आभार पूर्ण मुद्रा में बोला- "आप सचमुच कोई अवतार या पैगंबर हैं, जो कमजोरों की मदद करने कलयुग में इस धरती पर आ पहुंचा है ।"

बख्तावर सिंह धीमे से मुस्कुरा दिया ।

उस पल वह सिर्फ बैंजो के बारे में सोच रहा था ।

□□□

अजंता टावर की दसवीं मंजिल खाली होने में एक घंटे का समय भी नहीं लगा था ।

पीटर परेरा ने मालूम किया तो पता चला कि उस समय दसवीं मंजिल पर चार कस्टमर ठहरे हुए थे ।

तुरंत उन चारों कस्टमर्स को टावर की नीचे वाली अलग-अलग मंजिलों पर सामान सहित शिफ्ट करा दिया गया ।

फिर पीटर परेरा अपने ऑफिस में बैठकर शंकरराव के अगले फोन का इंतजार करने लगा ।

अंडरवर्ल्ड की हलचल को देखकर उसकी जान सूखी जा रही थी ।

जब से बख्तावर सिंह ने उन तीनों की मौत का ऐलान किया था, तब से गोवा अंडरवर्ल्ड का आधे से ज्यादा कारोबार मानो एकदम ठप्प हो गया था, क्योंकि अंडरवर्ल्ड के जितने भी बड़े-बड़े दादा थे, उनकी निगाहें उस वक्त उस

जंग पर लगी थीं । तब स्तब्ध भाव से जंग का परिणाम जानने के इच्छुक थे ।

काफी देर तक इंतजार करने के बाद भी पीटर परेरा के पास शंकरराव का फोन न आया ।

दो घंटे बाद पीटर परेरा को बाहर अजंता टावर में कुछ हलचल की आवाजें सुनाई दीं । वह उस हलचल के विषय में पता करता, उससे पहले ही ऑफिस का दरवाजा खुला और शंकरराव तथा बैंजो ने अंदर कदम रखा ।

दो-दो दादाओं को अपने सामने देखते ही पीटर परेरा एकदम उछलकर खड़ा हो गया ।

"आइए साहब, आइए ।" वह अपनी कुर्सी उन्हें पेश करता हुआ बोला- "बैठिए ।"

"नहीं, यह बैठने का वक्त नहीं है ।" शंकरराव बोला ।

"कैसे आना हुआ साहब ?"

"दसवीं मंजिल खाली करा दी ?"

"हां साहब !" पीटर परेरा ने तुरंत अपनी गर्दन दाएं-बाएं हिलाई- "वह तो मैंने तभी खाली करा दी थी । आधा घंटा भी नहीं लगा । क्या नाईक साहब भी आए हैं ?" पीटर परेरा मुश्किल से तीन इंच खुले दरवाजे में से थोड़ा ऊचककर बाहर झांकने की कोशिश करता हुआ बोला ।

"सीधे खड़े रहो ।" शंकरराव गुर्राया- "बाकी कोई नहीं आया है । सिर्फ हम दोनों आए हैं ।" शंकरराव ने झटका देकर तीन इंच खुला दरवाजा भी बंद कर दिया ।

पीटर परेरा एकदम सीधा तनकर खड़ा हो गया ।

"क्या सिंडिकेट के आदमी हम लोगों की तलाश में यहां आए थे ?" शंकरराव ने पूछा ।

"जी साहब ।" पीटर परेरा ने अपने शुष्क होठों पर जबान मेरी- "यह भी मालूम है ।"

"इसीलिए मैंने अजंता टावर की दसवीं मंजिल खाली कराई है ।" शंकरराव पीटर परेरा को सब कुछ समझाता हुआ बोला- "अब बैंजो दसवीं मंजिल पर रहेगा ।"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं साहब ?" पीटर परेरा के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं- "लेकिन यहां तो बैंजो साहब के लिए खतरा ही खतरा है ।"

"कोई खतरा नहीं है । हम खूब सोच-विचारकर यहाँ आये हैं । दसवीं मंजिल पर पहुंचने के बाद लिफ्ट का कनेक्शन काट दिया जाएगा । इस तरह टावर की दसवीं मंजिल बिल्कुल सील हो जाएगी । फिर बख्तावर सिंह तो क्या, बख्तावर सिंह का बाप भी बैंजो तक नहीं पहुंच सकता । और हां, एक बार तुम बता रहे थे कि तुमने कुछ महीने लिफ्ट मैकेनिक के यहां भी काम किया था ?"

"यस सर ।" पीटर परेरा फौरन बोला- "यह सच । मैंने पोंडा (गोवा राज्य का ही एक शहर) में लगभग 3 महीने लिफ्ट मैकेनिक के यहां नौकरी की थी ।"

"तब तो तुम्हें लिफ्ट मकैनिज्म के बारे में अच्छी-खासी जानकारी होगी ?"

"थोड़ी बहुत जानकारी है साहब ।"

"ठीक है । तो फिर तुम भी बैंजो के साथ दसवीं मंजिल पर ही रहोगे । इससे बैंजो का समय भी आसानी से कट जाएगा । लिफ्ट के कनेक्शन काटने तथा जोड़ने में भी उसे आसानी रहेगी, क्योंकि बैंजो को इस विषय में कोई खास नॉलेज नहीं है ।"

"म...मैं बैंजो साहब के साथ रहूंगा ।" पीटर परेरा के चेहरे पर पुनः बुरी तरह हवाइयां उड़ने लगीं ।

क्यों ? क्या तुम्हें कोई ऐतराज़ है ?"

"ऐतराज़ तो कोई नहीं लेकिन अगर आप इनके साथ रहते तो ज्यादा मुनासिब होता ।"

"बकवास मत करो ।" शंकरराव दहाड़ पड़ा- "जो कहा जा रहा है, सिर्फ वह करो । यहां टावर में रुकने के लिए मेरे पास ज्यादा समय नहीं है । चलो, तुम बैंजो के साथ जल्दी से दसवीं मंजिल पर पहुंचकर लिफ्ट के कनेक्शन काट दो ।"

पीटर परेरा फिर से स्थिर खड़ा रहा । उसके चेहरे पर एकाएक आतंक की छाया डोलने लगी थी ।

उसे अकस्मात ऐसा लगने लगा था, जैसे वह किसी बहुत भारी मुसीबत में फंस गया हो ।

"सुना नहीं क्या ?" शंकरराव पुनः दहाड़ा- "जल्दी चलो यहां से ।"

पीटर परेरा मरे-मरे कदमों से शंकरराव तथा बैंजो के साथ-साथ ऑफिस से बाहर निकला तथा फिर उस लिफ्ट की तरफ बढ़ गया, जो दसवीं मंजिल तक जाती थी ।

फिर बैंजो और पीटर परेरा योजनानुसार लिफ्ट में सवार होकर दसवीं मंजिल की तरफ बढ़ गए ।

ठीक पांच मिनट बाद पीटर परेरा के ऑफिस में टेलीफोन की घंटी बजी ।

वहां मौजूद शंकरराव ने रिसीवर उठाया ।

"यस, शंकरराव स्पीकिंग ।"

"मैं बैंजो बोल रहा हूं शंकरराव ।" तुरंत दूसरी तरफ से बैंजो का हर्षित स्वर उसके कानों में पड़ा- "मैं पीटर परेरा

के साथ टावर पर दसवीं मंजिल पर पहुंच चुका हूं। पीटर परेरा ने लिफ्ट का कनेक्शन भी काट दिया है।"

"गुड। मैं तुम्हारा फोन सुनने के लिए ही अभी तक यहां मौजूद था।" शंकरराव ने भी संतोष की गहरी सांस ली- "अब कैसा महसूस कर रहे हो बैंजो ?"

"पहले से ज्यादा अच्छा महसूस कर रहा हूं। लगता है कि जैसे मैं किसी बहुत सुरक्षित जगह आ गया हूं और अब वो हरामी बख्तावर सिंह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।"

"चिंता मत करो। तुम जिंदा रहोगे बैंजो। परसों मैं और नाईक दोनों तुम्हें वहां लेने आयेंगे। तुम हमारे साथ हंसते-मुस्कुराते हुए यहाँ से जाओगे।"

"काश ऐसा ही हो।" बैंजो ने गहरी सांस ली- "वरना मछली की पुड़िया बांधने ने जिन्दगी तो सांसत में फंसा ही दी है।"

"अब मछली को भूल जा।" शंकरराव गुर्राया- "याद भी मत कर उस बदजात को। मैं नाईक के पास वापस डोनापाला बीच वाले बंगले पर जा रहा हूँ। कोई बात हो, तो वहीं फोन करना।"

"ठीक है, तू जा।"

शंकरराव ने रिसीवर रख दिया।

अगले ही पल उसकी मारुति वैन डोनापाला बीच की तरफ दौड़ी जा रही थी।

□□□

बंगले पर वापस पहुंचते ही सनसनी की शुरुआत हुई।

उसमें से दो आदमी सिर झांकते साफ़-साफ़ नजर आ रहे हैं, जिनकी निगाहें हमारे बंगले की तरफ ही हैं।"

शंकरराव ने बिल्डिंग की तरफ देखा। वाकई उस दिन तीसरी मंजिल की एक खिड़की खुली हुई थी और उसमें से दो व्यक्ति झांकते साफ़-साफ़ नजर आ रहे थे। दोनों के हाथों में दूरबीनें थीं और दोनों ने ही अपने चेहरे पर काले चश्में चढ़ाये हुए थे। एक ने काले चमड़े की जर्कीन पहन रखी थी, जबकि दूसरा सफ़ेद स्वेटर पहने था।

"यह क्या जरूरी है कि वो सिंडिकेट के आदमी हैं ?" शंकरराव बोला- "ऐसा भी तो हो सकता है कि वह उस बिल्डिंग के मालिक हों या किरायेदार की हैसियत से वहां रहने के लिए ये हों ?"

"नहीं।" बाबू नाईक ने सख्ती से उसकी बात काटी- "वो हंड्रेड परसेंट सिंडिकेट के ही आदमी हैं। उनमें जो काली जर्कीन वाला है, उसे मैं खूब पहचानता हूँ। वो सिंडिकेट के एक मटके के ठीये पर काम करता है और मटका कलेक्टर है। मैंने उसे कई बार देखा है। मेरी आँखें धोखा नहीं खा रही हैं शंकरराव। वे लोग सिंडिकेट के ही आदमी हैं।"

एकाएक शंकरराव की आँखों में भी दहशत मंडराने लगी। वह भी अब उस काली जर्कीन वाले को पहचान गया था।

सिंडिकेट का वास्को-डिगामा में जो मटके का बड़ा ठिया था, वो वहीं काम करता था।

खुद शंकरराव ने भी कई मर्तबा उसे वहां देखा था।

"तू बिल्कुल ठीक कह रहा है नाईक।" एकाएक शंकरराव बेहद आतंकित अवस्था में अपनी गर्दन दायें-बायें

हिलाने लगा- "यह हरामजादे सिंडिकेट के ही आदमी हैं। काली जर्कीन वाले को मैं भी पहचान गया हूँ। इ..इसका मतलब बैंजो का अनुमान ठीक था। वो बिल्कुल सही कह रहा था कि बख्तावर सिंह के आदमी उसे खोजते हुए वहां तक भी आ जायेंगे।"

"मेरी तो यह समझ में नहीं आ रहा।" बाबू नाईक खिड़की के सामने से हटकर धम्म से एक कुर्सी पर जा बैठा- "कि इन्हें हमारे इस बंगले का एड्रेसन कैसे मालूम हुआ।"

"जरूर सालों ने कोई जुगत भिड़ाई होगी।" शंकरराव के चेहरे पर भी अब आतंक की छाया डोलने लगी थी और वह भी बाबू नाईक के सामने एक कुर्सी पर आ बैठा था- "बल्कि मैं तो यह कहता हूँ कि जरूर बख्तावर सिंह को अब भी मालूम है हमने बैंजो को अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर छिपा दिया है।"

"प..पता नहीं क्या होने वाला है।" बाबू नाईक की आवाज सूखे पत्ते की तरह कांपी- "अब तो मुझे भी डर लग रहा है शंकरराव। अ..अच्छा ही हुआ, जो हमने बैंजो को अजंता टावर में शिफ्ट करा दिया। अगर वो यहाँ होता तो फिर हम उसे कल किसी भी हालत में मरने से नहीं बचा सकते थे।"

"ल..लेकिन हम क्या करें अब ?" शंकरराव ने अपने शुष्क होठों पर जबान फेरी- "ऐसी परिस्थितियों में अब हमारा एक भी पल इस बंगले में ठहरना बेहद खतरनाक है। क्योंकि यहाँ पर तो हमारी मदद करने के लिए हमारे आदमी भी नहीं हैं। ज्यादा हथियार भी हमारे पास नहीं हैं।"

"जहाँ तक मेरा अनुमान है ।" बाबू नाईक बोला- "फिलहाल हमारे लिए यहाँ कोई खतरा नहीं है ।"

"क्यों खतरा नहीं है ?"

"क्योंकि बख्तावर सिंह ने हमारी मौत की जो तारीखें फाइनल की हैं, उसमें अभी कई दिन बाकी हैं और मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ कि बख्तावर सिंह मुक़र्रर तारीख से पहले खिलाफ कोई कदम नहीं उठायेगा । इसलिए फिलहाल हमें इसी बंगले में रहकर खामोशी से यह देखना है कि बख्तावर सिंह कल क्या करता है । बैंजो के खिलाफ क्या कदम उठाता है ।"

शंकरराव चुप बैठा गया ।

परंतु सिंडिकेट के आदमियों को देखकर अब उसे एक-एक पल वहां गुजारना भारी लग रहा था ।

□□□

बैंजो उस रात भी नहीं सोया ।

अलबत्ता अजंता टावर की दसवीं मंजिल पर पहुँचने के बाद वो खुद को सुरक्षित महसूस कर रहा था लेकिन फिर भी मौत के खौफ ने उसे सोने नहीं दिया ।

25 फरवरी की सुबह उसने नाश्ता कर दिया ।

एक भरी हुई तथा कई चाकू उसकी जेब में रखे थे, ताकि वह किसी भी खतरे का एकदम से मुकाबला कर सके ।

बैंजो एक दक्ष चकूबाज था ।

अंडरवर्ल्ड का बड़ा दादा बनने से पहले वो बेशुमार लोगों की चाकू मारकर हत्या कर चुका था । आज बहुत साल बाद उसे फिर चाकू की जरुरत महसूस हुई थी,

25 फरवरी ख़त्म होने में अब सिर्फ तीन घंटे बाकी थे।

जैसे-जैसे घड़ी की सुई आगे बढ़ रही थी, ठीक उसी अनुपात में बैंजो और पीटर परेरा के बीच सस्पेंस भी बढ़ता जा रहा था।

हर पल उन्हें ऐसा लग रहा था, जैसे अभी कुछ हुआ, अभी कुछ हुआ।

लगभग सवा नौ बजे घटना घटी। घटना भी ऐसी घटी कि किसी ने कल्पना भी न की थी।

जोर-जोर से घंटी बजाती हुई मडगांव फायर बिग्रेड की एक टंकी तथा एक बड़ी क्रेन वहां आकर रुकी।

टंकी में पानी की जगह पेट्रोल भरा था। जबकि क्रेन के अगले सिरे पर लोहे का एक बॉक्स टंगा हुआ था, जिसमें सिंडिकेट का एक आदमी सवार था।

उन दोनों के अजंता टावर के सामने रुकते ही तुरंत फायर बिग्रेड की वैन के ड्राइविंग पोर्शन में से एक आदमी नीचे कूदा तथा फिर उसने टंकी का पाइप उठाकर क्रेन के लोहे वाले बॉक्स में मौजूद आदमी को पकड़ा दिया।

अगले ही पल क्रेन के सिरे पर लटका वह बॉक्स क्रेन के साथ-साथ बड़ी तेजी से ऊपर की तरफ उठने लगा।

क्रेन वाकई बहुत बड़ी थी।

शीघ्र ही लोहे का बॉक्स इतना ऊपर उठ गया कि वह अजंता टावर की आठवीं मंजिल को स्पर्श करने लगा।

टंकी से जुड़े पाइप की लम्बाई भी बहुत थी, वो भी वहीं तक ही पहुँच रहा था।

उसके बाद लोहे के बॉक्स में मौजूद सिंडिकेट के आदमी ने वो काम किया, जो किसी के भी छक्के छुड़ा दे।

आठवीं मंजिल की विशाल ऊंचाई पर पहुंचकर उसने पाइप का क्लिप खोल दिया। क्लिप खुलते ही पाइप में से पेट्रोल की एक बड़ी मोटी तेज धार निकली तथा वह सीधे अजंता टावर की दसवीं मंजिल की तरफ उछली।

तुरंत पूरा अजंता टावर ऊपर से नीचे तक पेट्रोल में नहाता चला गया।

इस बीच सिंडिकेट के जो आदमी अभी तक अजंता टावर की निगरानी कर रहे थे, वे फौरन धड़धड़ाते हुए टावर के अंदर घुस गए तथा प्रत्येक मंजिल पर फैल गए, सिर्फ दसवीं मंजिल को छोड़कर।

अंदर घुसते ही उन्होंने फलक फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरु कर दिया।

"पूरे टावर को पेट्रोल से भिगो दिया गया है। जल्द ही खुद गॉडफादर यहां पहुंचकर पूरे टावर में आग लगाने वाले हैं। जो आदमी अपनी जान बचाना चाहता है, वह टावर में से निकलकर बाहर भाग जाए।"

जैसे ही सिंडिकेट के आदमियों ने चिल्ला-चिल्लाकर वह बात कही, तुरंत पूरे टावर में हड़कंप मच गया।

तमाम आदमी अपना सामान छोड़-छोड़कर अजंता टावर से बुरी तरह भागने लगे।

वह दृश्य ऐसा था, जैसे एकदम से चीटियों के किसी बड़े झुंड में हलचल मच गई हो।

□□□

अजंता टावर में मचा वह हड़कंप बैंजो और पीटर परेरा से भी छिपा न रहा।

बैंजो ने शीशे की खिड़की पर पड़ती पेट्रोल की तेज धार को देख लिया था। वह एकदम से यह तो न समझ सका कि वह पेट्रोल है, अलबत्ता इतना तुरंत भांप गया कि उनके खिलाफ कोई षड्यंत्र रचा जा रहा है।

"व्हाट द फ... ?" बैंजो के छक्के छूट गए- "य...यह क्या हो रहा है ?"

पीटर परेरा ने एकदम से खिड़की खोली तथा नीचे झांककर देखा।

फौरन पेट्रोल की तेज धार इतनी तेजी से पीटर परेरा के चेहरे पर पड़ी कि वह चीखता हुआ पीछे हो गया।

"ब...बैंजो साहब !" पीटर परेरा के नेत्र दहशत से फ़ैल गये- "य..यह तो पेट्रोल है बैंजो साहब। पूरे अजंता टावर को पेट्रोल से भिगोया जा रहा है।"

"यह क्या कह रहे हो तुम ?" उस खबर ने बैंजो को भी अंदर तक दहलाकर रख दिया।

वह तुरंत पीटर परेरा की तरफ लपका तथा उसने उसके चेहरे पर पड़ी पेट्रोल की कुछ बूँदें अपने हाथ में लेकर देखीं।

अगले ही पल वो स्तब्ध खड़ा रह गया।

वह सचमुच ही पेट्रोल था।

"इ...इसका मतलब वे लोग पूरे अजंता टावर को आग लगाने जा रहे हैं ?"

"बिल्कुल यही बात है बैंजो साहब।" पीटर परेरा के चेहरे पर मौत नाच रही थी- "मैं क्या कहता था बैंजो साहब ! उसका नाम बख्तावर सिंह है। वह आप तक पहुंचने का जरूर कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। उसने रास्ता निकाल लिया। अगर आप अब यहां रहते हैं, तब

चारों तरफ से एक ही शोर उमड़ा ।

भीड़ किसी 'काई' की तरह हटती चली गई ।

जबकि बुलेटप्रूफ कार तेज झटके से अजंता टावर के सामने जाकर रुकी थी । फिर उसमें से सफेद सूट में सजा-धजा बख्तावर सिंह बाहर निकला ।

□□□

बख्तावर सिंह को उसकी विशेष कार से उतरते बैंजो ने भी देख लिया था ।

उस समय बैंजो खिड़की के पास ही खड़ा था, जब बख्तावर सिंह की बुलेटप्रूफ कार टावर के सामने आकर रुकी ।

बख्तावर सिंह को देखते ही बैंजो के शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया । वह तेजी से टेलीफोन की तरफ झपटा और उसने जल्दी-जल्दी डोनापाला बीच वाले बंगले के नंबर डायल किए ।

तुरंत दूसरी तरफ घंटी बजने लगी ।

"बाबू नाईक स्पीकिंग ।" शीघ्र ही टेलीफोन लाइन पर बाबू नाईक की आवाज उभरी ।

"क..नाईक ।" बैंजो एकाएक थर-थर कांपते हुए बोला- "म...मैं बैंजो बोल रहा हूं नाईक ।"

"क्या हुआ ?" बैंजो की आवाज सुनकर उछल पड़ा बाबू नाईक भी- "तेरी आवाज क्यों कांप रही है बैंजो ?"

"य...यहां सब गड़बड़ हो गई नाईक । म.. मेरी तो बस पुड़िया बंधने वाली है नाईक ।"

"यह क्या बकवास कर रहा है तू ?" बाबू नाईक चीख पड़ा ।

"म...मैं सच कह रहा हूं नाईक ।"

"लेकिन बख्तावर सिंह दसवीं मंजिल तक कैसे पहुंचा ? लिफ्ट का कनेक्शन तो कटा हुआ है ।"

"वो दसवीं मंजिल तक नहीं पहुंचा नाईक । बल्कि उसने हालात ऐसे पैदा कर दिए हैं कि मुझे खुद नीचे जाना पड़ेगा ।"

"क्या पेंचदार बातें कर रहा है तू ?" बाबू नाईक झुंझला पड़ा- "मेरे तो कुछ समझ नहीं आ रहा ।"

"समझ में तो मेरे भी कुछ नहीं आ रहा नाईक ।" बैंजो पूरी तरह कलप उठा-"लेकिन उस हरामजादे ने पूरे अजंता टावर को पेट्रोल में भिगो दिया है और अब वो बस किसी भी पल टावर में आग लगाने वाला है । नाईक, हेल्प मी यार ।" बैंजो तेज आवाज में सुबक पड़ा- "अगर उसने टावर में आग लगा दी तो मेरी यहीं पुड़िया बंध जाएगी । म...मैं यहीं दसवीं मंजिल पर ही जलकर भस्म हो जाऊंगा । और...और अगर मैं लिफ्ट का कनेक्शन जोड़कर नीचे गया, तो वह मुझे नीचे मार डालेगा । मेरी अब हर तरफ मौत-ही-मौत है नाईक ।"

बैंजो की बात सुनकर बाबू नाईक भी हक्का-बक्का रह गया ।

परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी कि कोई भी उस माहौल में हक्का-बक्का रह जाता ।

"बोल नाईक ।" बैंजो गिड़गिड़ा पड़ा- "बोल, कैसे मैं अपनी जान बचाऊँ ? कैसे मैं उस जल्लाद के हाथों से बचूं ?"

बाबू नाईक चुप ।

खुद उसकी बुद्धि के भी तोते उड़ गए थे ।

"रहने दे।" बाबू नाईक ने बीच में ही उसका हाथ पकड़ लिया- "फोन मत उठा।"

उस समय बाबू नाईक की आंखों में सफेदी पुती थी और होंठ किसी कागज की तरह फड़फड़ा रहे थे।

"लेकिन यह तो पता चले।" शंकरराव बोला- "कि किसका फोन है ? क्या पता कोई अर्जेंट मैसेज देना चाहता हो।"

"सही कहा तूने। कोई अर्जेंट मैसेज ही देना चाहता है। इससे ज्यादा अर्जेंट मैसेज हमारी जिंदगी में कुछ और नहीं हो सकता।"

"य...यानी तू जानता है कि किसका फोन है ?"

"हां !" बाबू नाईक ने गहरी सांस लेकर स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "जानता हूं। अपने बैंजो का फोन है।"

"ब...बैंजो का फोन ?" शंकरराव बड़ी तेजी से टेलीफोन की तरफ झपटा- "तो फिर उठाता क्यों नहीं ?"

"रहने दे।" बाबू नाईक ने पुनः उसे बीच में ही पकड़ लिया और अपने माथे पर छलछला आये पसीने साफ किए- "फोन मत उठा। अभी मैंने बैंजो से बात की है। उस की पुड़िया बंधने वाली है शंकरराव। वो मरने वाला है।"

"य...यह क्या कह रहा है तू ?" शंकरराव के दिल पर जबरदस्त घूँसा-सा पड़ा।

"मैं सच कह रहा हूं शंकरराव।" बाबू नाईक ने एकाएक बहुत भाव-विह्वल अंदाज में शंकरराव को अपने सीने से लगा लिया- "वो फंस चुका है। अब उसे कोई नहीं बचा सकता। आज बख्तावर सिंह की बदौलत हमारी दोस्ती की त्रिमूर्ति टूट जाएगी।"

"लेकिन कैसे हुआ यह सब ?" शंकरराव भौचक्का रह गया ।

जवाब में बाबू नाईक उसे वो सारी बात बताता चला गया था, जो बैंजो से उसे मालूम हुई थी ।

"शंकरराव !" बाबू नाईक का एक-एक शब्द बोलते हुए कलेजा फटा जा रहा था- "अब अपना बैंजो फोन पर चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है कि हम दोनों उसे बचा लें, हम दोनों उसे बचा लें । अब तू ही बता, हम उसे कैसे बचा सकते हैं शंकरराव । उसके किसी सवाल का जवाब अब हमारे पास नहीं है । हां, अगर बैंजो के मरने से पहले उसकी चीखों को सुनने की ताकत तेरे अंदर है, तो फोन उठा ले मैं तुझे नहीं रोकूंगा ।

लेकिन फिर शंकरराव की भी हिम्मत नहीं हुई कि वह फोन उठा सके ।

शंकरराव अब बड़े डरे-डरे अंदाज में फोन को देखने लगा । फोन अभी भी जोर-जोर से बज रहा था । फोन के बजने की आवाज उस समय दोनों को ऐसी लग रही थी, जैसे बैंजो हलक फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा हो, मदद मांग रहा हो ।

"हम इस समय बैंजो तक पहुंच भी तो नहीं सकते ।" बाबू नाईक ने आक्रोश में दीवार पर घूँसा मारा- "अजंता टावर इस बंगले से इतनी दूर है कि हमें वहां पहुंचने में एक घंटा लग जाएगा और एक घंटे में तो वहां बख्तावर सिंह सब-कुछ तहस-नहस कर देगा ।"

"य...यानी अब हमारे सामने इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं ।" शंकरराव तिलमिलाकर बोला- "कि हम बैंजो की पुड़िया बंधने का इंतजार करें ।"

बाबू नाईक गुस्से में अपनी दोनों मुट्ठियाँ खोलता-बंद करता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया।

उनका एक यार मरने जा रहा था, लेकिन वे दोनों अंडरवर्ल्ड के बड़े दादा होने के बावजूद कुछ नहीं कर सकते थे।

दोनों बेबस थे।

□□□

उधर अजंता टावर के आसपास का दृश्य अत्यंत विहंगमकारी हो उठा था।

न सिर्फ टावर पूरी तरह खाली हो गया था बल्कि टावर के आसपास जो शोरूम तथा ऑफिस थे, वे भी पूरी तरह खाली हो चुके थे।

कुछ तो बड़े आनन-फानन अपना सामान भी निकालकर बाहर सड़क पर ले गए थे।

सिंडिकेट की तरफ से इस बात की पूरी व्यवस्था की गई थी कि टावर के आसपास आग न फैलने पाए। इसीलिए आग पर एकदम काबू पाने के लिए फायर ब्रिगेड की बीस बड़ी टंकियां भी वहां पहुंच चुकी थीं।

लेकिन फिर भी लोगों में आग को लेकर दहशत थी। बख्तावर सिंह अपनी बुलेटप्रूफ कार से उतरने के बाद टावर की तरफ बढ़ा। शीघ्र ही बख्तावर सिंह के हाथ में उसका लाइटर भी नजर आने लगा था।

टावर के नजदीक पहुंचकर बख्तावर सिंह ने अपना म्यूजिकल लाइटर जलाया तो उसके म्यूजिक की आवाज उस घनघोर सन्नाटे में चारों तरफ गूंजी।

फिर उसने लाइटर की 'लौ' टावर की दीवार से स्पर्श करा दी।

पलक झपकते ही जैसे कोई आग का दरिया अजंता टावर में नीचे से ऊपर की तरफ दौड़ा ।

एक मिनट भी नहीं लगा कि पूरा टावर धूं-धूं करके जलने लगा ।

बख्तावर सिंह भी उसी पल एकदम से जलते टावर के अंदर घुस गया था ।

□□□

अजंता टावर अब धूं-धूं करके किसी बड़े अग्निकुंड की तरह जल रहा था और बैंजो अभी भी पागलों की तरह टेलीफोन का नंबर डायल करने में लगा था ।

उसे घोर आश्चर्य हो रहा था कि उसका कोई यार फोन क्यों नहीं उठा रहा ।

तभी पीटर परेरा ने उसके हाथ से रिसीवर छीनकर नीचे फेंक दिया ।

"बंद करो अब ये सब ।" पीटर परेरा दहाड़ा- "बहुत हो चुका । मौत हमारे सिर तक आ पहुंची है और तुम अभी भी टेलीफोन के नंबर डायल करने में लगे हो ।"

उसी पल बैंजो की नजरें खिड़की पर पड़ीं ।

आग की लपटें धूं-धूं करके खिड़की से ऊपर उठ रही थीं ।

बैंजो के देखते-ही-देखते खिड़की का कांच तेज धमाके से फटा और अंदर आ गिरा ।

"क..क्या करें ?" बैंजो बदहवासों की तरह बोला- "क...क्या करें अब ?"

"अब एक ही रास्ता है ।" पीटर परेरा चिल्लाया- "भागो यहां से, जल्दी भागो । वरना किसी भी पल यह पूरा टावर

पीटर परेरा के हलक से मर्मभेदी चीख निकल गई । वो वहीं फर्श पर गिर पड़ा ।

पीटर परेरा ने देखा, उसके सामने अत्यंत रौद्र रूप में बख्तावर सिंह खड़ा था ।

“ग...गॉडफादर !” उसने तुरंत बख्तावर सिंह के पैर पकड़ लिए- “म..मेरा नाम पीटर परेरा है । ब...बैंजो लिफ्ट में है ।”

बख्तावर सिंह को सामने देखते ही बैंजो के भी छक्के छूट चुके थे ।

यह शुक्र था कि वो अभी भी लिफ्ट में था । उसने फौरन मौके का फायदा उठाया और लिफ्ट का दरवाजा बंद करने के लिए बेपनाह तेजी से दरवाजे के हैंडल की तरफ झपटा ।

लिफ्ट का दरवाजा पकड़कर उसने खींच भी लिया, परंतु दरवाजा पूरी तरह बंद हो पाता, उससे पहले ही बख्तावर सिंह ने अपनी एक टांग दरवाजे के बीच में फंसा दी और फिर झटका देकर लिफ्ट का दरवाजा पूरी तरह खोल दिया । साथ ही उसने अंदर लिफ्ट के स्विच पैनल में लगी एक तार पकड़कर खींच डाली ।

अब स्विच पैनल का और लिफ्ट का आपस में संबंध खत्म हो चुका था ।

अब लिफ्ट वापस ऊपर नहीं जा सकती थी ।

उसी पल ने बैंजो ने अपनी जेब से दो चाकू निकाल लिए और दोनों चाकुओं से बख्तावर सिंह पर एक साथ हमला किया ।

चाकुओं के उस हमले से बचने के लिए बख्तावर सिंह को एकदम पीछे हटना पड़ा ।

दोनों चाकू सनसनाते हुए उसकी गर्दन के पास से गुजर गए ।

तत्काल बैंजो ने दो चाकू और निकाले तथा पुनः उन्हें बख्तावर सिंह की तरफ उछाला ।

इस बार चाकुओं से बचने के लिए बख्तावर सिंह नीचे फर्श पर ही बैठ जाना पड़ा ।

बख्तावर सिंह पर लगातार चाकुओं से हमला करते हुए बैंजो लिफ्ट से बाहर निकला तथा दौड़ता हुआ एक कमरे में घुस गया और उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया ।

पीटर परेरा पहले ही मैदान छोड़कर अजंता टावर से भाग चुका था ।

□□□

बख्तावर सिंह बिना एक सेकंड गँवाए तेजी से उस कमरे की तरफ लपका, जिसमें बैंजो बंद हो गया था ।

फिर उसने कंधे के प्रचंड प्रहार उस कमरे के दरवाजे पर करने शुरु कर दिए ।

पूरा एक मिनट भी नहीं गुजरा, अंदर से लगी दरवाजे की सिटकनी प्रचंड चोटों के कारण चौखट से उखड़ गई और दरवाजे के दोनों एकदम से खुल गए ।

लेकिन कमरे में बैंजो कहीं न था ।

उसने इधर-उधर कई जगह देखा, बैंजो कहीं न मिला ।

तभी बख्तावर सिंह की दृष्टि बेड के नीचे की तरफ पड़ी ।

अगले ही पल उसने बेड पकड़कर खींच लिया । फ़ौरन बैंजो नजर आने लगा । वह अपनी जान बचाने के लिए बेड के नीचे घुस गया था और एक कोने में किसी चूहे की तरह

सिकुड़ा बैठा था । जबकि अब उसके हाथ में थी । भरी हुई थी ।

लेकिन फिर भी उसका शरीर खौफ से पत्ते की तरह थर-थर काँप रहा था और दांत बज रहे थे ।

ऐसा था बख्तावर सिंह का खौफ, उसका आतंक कि अंडरवर्ल्ड के के बड़े-बड़े दादा भी उसे देखकर चूहे बन जाते थे और उनकी पैंटें गीली होने लगती थी ।

बख्तावर सिंह ने जैसे ही बेड पकड़कर खींचा, उसी पल बैंजो ने बौखलाहट में धांय-धांय दो गोलियां चलाईं ।

दोनों गोलियां ही बेड में कहीं जा धंसी थी ।

इस बीच बख्तावर सिंह ने भी निकाल लिया था ।

उसने भी एक गोली चलाई । वह गोली धांय से सीधी बैंजो के दायें कंधे में जा धंसी ।

बैंजो को ऐसा लगा, जैसे किसी ने लोहे की गरम सलाख उसके कंधे में धंसा दी हो । वह हलक फाड़कर भैंसे की तरह डकाराया और उसके हाथ से रिवाल्वर छूटकर दूर जा गिरी ।

बख्तावर सिंह आगे बढ़ा तथा उसने अपना जूता बैंजो के सीने पर रख दिया और रिवाल्वर उसकी खोपड़ी की तरफ तान दी ।

"न..नहीं, गॉडफादर नहीं ।" बैंजो गिड़गिड़ा पड़ा- "ग...गोली मत चलाना । म....मुझे माफ़ कर दो गॉडफादर ।"

"तू एक जलील और नीच इंसान है बैंजो ।"

"ह..हाँ गॉडफादर ।" बैंजो जल्दी-जल्दी अपनी गर्दन स्वीकृति में हिलाने लगा- "म..मैं जलील हूँ । मैं नीच हूँ । मुझसे सचमुच एक घिनौना पाप हुआ है । म..मुझे अंजली

के साथ वह सब नहीं करना चाहिए था, जो मैंने किया। लेकिन मुझे माफ़ कर दो गॉडफादर। म...मैं वादा करता हूँ कि मैं फिर कभी ऐसा पाप नहीं करूंगा। मुझे सिर्फ एक बार माफ़ कर दो।" बैंजो की हालत बहुत दयनीय हो चुकी थी।

"तू अंजली की जिंदगी लौटा सकता है ?" बख्तावर सिंह गुर्राया।

बैंजो एकाएक फटे-फटे नेत्रों से बख्तावर सिंह को देखने लगा।

"जवाब दे।" बख्तावर सिंह का चेहरा लाल भभूका हो उठा- "क्या तू लौटा सकता है अंजली की उस फूल-सी जिंदगी को, जिसकी तुम तीनों दरिंदों ने एक-एक पंखुड़ी छितरा दी ?"

"नो।" बैंजो की गर्दन इंकार में हिली- "म...मैं उसकी जिंदगी को नहीं लौटा सकता।"

तू अंजली की इज्जत को लौटा सकता है ?" बख्तावर सिंह का चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बन चुका था- "जिसके तूने चिथड़े-चिथड़े कर डाले ?"

"नहीं।" बैंजो की गर्दन पुनः बड़े दयनीय भाव से इनकार में हिली- "म..मैं उस इज्जत को भी नहीं लौटा सकता।"

"फिर किस अधिकार से तू माफी मांग रहा है बेगैरत इंसान ?" बख्तावर सिंह कहर भरे स्वर में बोला- "माफ वो जुर्म किए जाते हैं, जिनकी भरतपूर्ति हो सकती हो। भरपाई हो सकती हो। लेकिन तूने अपनी ताकत, अपने पैसे के घमंड में चूर होकर एक इंसानी जिंदगी से खिलवाड़ किया है। और इंसानी जिंदगी की भरपाई कोई नहीं कर सकता।

आग ज्यादा फैलने नहीं पाई थी । आसपास की इमारतों को तो बिल्कुल भी नुकसान नहीं पहुंचा था ।

अजंता टावर की खिड़कियों के भी सिर्फ लकड़ी वाले फ्रेम जल गए थे या फिर टावर बाहर से बिल्कुल काला हो गया था । अलबत्ता अंदर से टावर भी पूरी तरह सुरक्षित था ।

कुल मिलाकर अजंता टावर में जैसी धूं-धूं करके आग लगी थी, वैसा कोई बड़ा नुकसान वहां होने नहीं पाया ।

□□□

रात के लगभग बारह बजे बाबू नाईक और शंकरराव वहां पहुंचे ।

तब तक अजंता टावर के बाहर से भीड़ पूरी तरह छंट चुकी थी और वहां सिर्फ उनके ही आदमी थे ।

बैंजो की लाश भी वहीँ पड़ी थी । हां, अब उसकी लाश के ऊपर सफेद कपड़ा जरूर ढक दिया गया था ।

शंकरराव, बैंजो की लाश को देखते ही उससे लिपट गया और फिर बिलख बिलखकर रोने लगा । शंकरराव ने उसे हमेशा अपने छोटे भाई की तरह समझा था और आज जब बख्तावर सिंह ने उसे गोली मार दी थी तो उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसका छोटा भाई मर गया ।

बाबू नाईक भी बैंजो की लाश देखकर स्तब्ध-सी मुद्रा में खड़ा था ।

"नाईक !" एकाएक शंकरराव आक्रोश की आंधी बना बैंजो के पास से उठा-"मैं इस साले बख्तावर सिंह को नहीं छोड़ूंगा । मैं इसे मार डालूंगा ।"

"होश में आ शंकरराव !" बाबू नाईक ने बेहद भाव-विह्वल अंदाज में उसे गले से लगा लिया- "होश में आ ।

बैंजो की लाश को देखकर इस समय जैसे तेरा खून खौल रहा है, वैसे ही मेरा भी खून खौल रहा है । आज उस हरामजादे बख्तावर सिंह की बदौलत ही हम तीनों दोस्तों में से एक कम हो गया । लेकिन यह समय होश खोने का नहीं है ।"

"मैं कुछ नहीं जानता नाईक, मैं कुछ नहीं जानता ।" शंकरराव एकाएक जहरीले नाग की तरह फुंफकारा- "इस समय मेरे सिर पर खून सवार है । मैं खामोश नहीं बैठना चाहता ।"

"बेवकूफ आदमी । गुस्से में उठाया गया हर कदम गलत होता है ।"

"लेकिन... ।"

"पहले बैंजो का अंतिम संस्कार करते हैं ।" बाबू नाईक ने सख्ती से उसकी बात काटी- "फिर आराम से बैठ कर सोचेंगे कि अब क्या कदम उठाना है ? क्या करना है ?"

बाबू नाईक के लाख समझाने के बावजूद भी शंकरराव बड़ी मुश्किल से शांत हुआ ।

बड़ी मुश्किल से उसकी आक्रोश की ज्वाला शांत हुई ।

फिर वे दोनों बैंजो के अंतिम संस्कार का बंदोबस्त करने में जुट गए थे । इस बीच सिंडिकेट के आदमी लगातार उनके पीछे थे ।

सुबह के छः बजे तक उन्होंने बैंजो का शव एक कॉफिन में बंद करके नजदीक के कब्रिस्तान में दफना दिया ।

बैंजो के पोस्टमार्टम की नौबत नहीं आई थी । अंडरवर्ल्ड की लड़ाई-झगड़ों में गोवा पुलिस ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करती थी । खासतौर से जब मामला सिंडिकेट संबंधित हो, तब तो हरगिज़ भी नहीं ।

□□□

बख्तावर सिंह जैसे ही ब्लैक हाउस में प्रविष्ट हुआ, तो रोशनलाल ने फ़ौरन उसके पैर पकड़ लिए ।

रोशनलाल को यह खबर पहले ही मिल चुकी थी कि बैंजो मारा गया । बख्तावर सिंह अपने मटके के एक अड्डे से होकर आ रहा था, इसलिए उसे ब्लैक हाउस पहुंचने में देर हो गई थी ।

"य...यह क्या कर रहे हो ?" बख्तावर सिंह बौखलाता हुआ पीछे हटा ।

"पैर छू रहा हूं आपके गॉडफादर ।" रोशनलाल के स्वर में श्रद्धा थी ।

"ल...लेकिन क्यों ?" बख्तावर सिंह ने रोशनलाल के कंधे पकड़कर उसे खड़ा किया ।

"आज आपके कारण ही मुझे इंसाफ मिल सका है गॉडफादर ।" रोशनलाल की आंखों में खुशी के आंसू कंपकंपाने लगे- "जो न्याय मुझे और मेरी बेटी को अदालत न दे सकी, वह न्याय आज आपने दिया । मेरी बेटी की आत्मा आज बहुत खुश होगी गॉडफादर । वह आज आपको लाखों-लाखों दुआएं दे रही होगी ।"

"धन्यवाद मुझे नहीं बल्कि उस परमपिता परमात्मा को दो रोशनलाल ।" बख्तावर सिंह ने छत की तरफ उंगली उठाई- "जिसने इस संपूर्ण सृष्टि को बनाया है । मैं क्या हूं । मैं तो उसके अनंत हाथों में से मात्र एक हाथ हूँ । अगर मेरा हाथ तुम्हारी मदद के लिए आगे नहीं बढ़ता तो कोई दूसरा हाथ बढ़ता । उस परमपिता परमात्मा को तुम्हारी मदद करनी थी । मुझे खुशी है कि उसने इस महान कार्य के लिए मुझे चुना ।"

"बेचारे की उम्र ही क्या थी, क्या देखा था अभी उसने ? तीनों में सबसे छोटा था और सबसे पहले इस दुनिया से रुख्सत हो गया।"

"अब यह सोच।" बाबू नाईक बोला- "कि आगे क्या करना है ?"

"वह तो मैंने सोच लिया।" शंकरराव के चेहरे पर अत्यंत हिंसक भाव पैदा हुए।

"क...क्या सोच लिया ?"

"मैंने अब साले बख्तावर सिंह की ऐसी-तैसी कर देनी है।" शंकरराव की आंखें सुर्ख हो उठीं- "उसने जिस तरह बैंजो की पुड़िया बांधी, मैंने बिल्कुल उसी तरह उसकी भी पुड़िया बांध देनी है। छोड़ना नहीं हरामी को, बख्शना नहीं।"

"फिर पागलपन की बातें करने लगा।"

"नहीं।" शंकरराव की गर्दन हिली- "यह पागलपन की बात नहीं। अब इस खूनी जंग का यही एकमात्र हल है।"

"तू क्या समझता है।" बाबू नाईक बोला- "कि तू बख्तावर सिंह की पुड़िया बांध देगा ? है तेरे में इतनी हिम्मत ?"

"अगर मैं बख्तावर सिंह की पुड़िया न भी बांध सकूं, तब भी फिक्र की कोई बात नहीं। लेकिन अब मैंने यह जंग लड़नी है और खुलकर लड़नी है।"

"जानता है।" बाबू नाईक कातर स्वर में बोला- "अगर तू बख्तावर सिंह की पुड़िया न बांध सका, तो तेरा क्या अंजाम होगा ?"

"क्या अंजाम होगा ?"

"वो तेरी पुड़िया बांध देगा।"

"अ...आपके विचार सचमुच महान हैं गॉडफादर !"

बख्तावर सिंह धीमे से मुस्कुराता हुआ अंदर की तरफ बढ़ गया।

□□□

बाबू नाईक और शंकरराव, डोनापाला बीच वाले बंगले में आमने-सामने बैठे थे।

दोनों शोक मग्न थे।

26 फरवरी को सनसनीखेज शुरूआत हो चुकी थी।

सामने वाली बिल्डिंग में सिंडिकेट के आदमी अभी भी तैनात थे। इसके अलावा सिंडिकेट के कुछ और आदमी भी अब बंगले के आसपास फ़ैल चुके थे। एक तो बंगले के गेट से थोड़े फासले पर ही अंधा भिखारी बनकर बैठा था और वो आते-जाते राहगीरों से बड़ी अजीब-अजीब आवाजें निकालकर भीख मांग रहा था।

"अगर मालूम होता।" शंकरराव भुनभुनाता हुआ बोला- "उस मछली की पुड़िया बांधना इतना बड़ा हंगामा खड़ा कर देगा तो मैं उस साली को छूता भी नहीं, हाथ भी नहीं लगाता। लानत है ऐसे फ्रेश माल पर, जो जान के लाले पड़ जाएं।"

"अब क्यों बार-बार उस हरामजादी मछली का जिक्र करके दिल में आग लगाता है।" बाबू नाईक गुर्राकर बोला- "अरे जो होना था, हो गया। अब ऐसा तो नहीं हो सकता कि वो मछली दोबारा जिंदा हो जाए या हम तीनों ने उसकी जो पुड़िया बांधी थी, वह पुड़िया उसे वापस हो जाए। पुड़िया बंधनी थी, बंध गई।"

"लेकिन उसी पुड़िया के चक्कर में तो अपने बैंजो की पुड़िया बंध गई नाईक।" शंकरराव क्रोध में फुंफकारा-

"तो इसमें अनोखी बात क्या है ? मेरी पुड़िया तो उसने वैसे भी बांधनी है । कल का दिन फाइनल है मेरी मौत का । जब मुझे मरना ही है तो मैं क्यों न अपने दिल की सारी भड़ास निकाल कर मरूं ? मैं बैंजो की तरह चूहे की मौत नहीं मरना चाहता नाईक । मैं शेर की तरह युद्ध लड़ते हुए मरना चाहता हूं ।"

"बैंजो की मौत से तेरी खोपड़ी सरक गई है बेवकूफ ।" बाबू नाईक गुर्राया- "बख्तावर सिंह या सिंडिकेट के खिलाफ तू जो जंग का ऐलान करना चाहता है, उससे कुछ नहीं हासिल होगा तुझे । यह तेरी गलतफहमी है कि तू या तेरी फ़ौज सिंडिकेट के सामने शेर की तरह लड़ सकती है । अगर तूने ऐसा कोई कदम उठाया तो तेरी बैंजो से भी ज्यादा खतरनाक ढंग से पुड़िया बंधेगी । बैंजो की तो लाश भी हासिल हो गयी, परंतु ऐसी परिस्थिति में तेरी लाश भी नहीं हासिल होने वाली ।"

"तो क्या चाहता है ?" शंकरराव अपना चेहरा लाल-पीला करके बोला- "कि मैं भी पुड़िया बंधने के डर से बैंजो की तरह कहीं जाकर छिप जाऊं ? और फिर बख्तावर सिंह कल मुझे ढूँढता-ढूँढता मेरे पास पहुंच जाए तथा मुझे बेरहमी से मार डाले ?"

"यह क्या जरूरी है ।" बाबू नाईक बोला- "कि तू जहां जाकर छिपे, बख्तावर सिंह उस जगह को भी ढूंढ निकालेगा ?"

"क्यों जरूरी नहीं ? वह जब बैंजो को ढूंढ सकता है तो मुझे क्यों नहीं ढूंढ सकता ?"

"इसीलिए तो कह रहा हूं शंकरराव ।" बाबू नाईक आहत स्वर में बोला- "कि तेरा दिमाग फेल हो गया है ।

कुछ भी ठीक ढंग से नहीं सोच पा रहा है तू। शंकरराव ! बैंजो को जब हमने अजंता टावर में छिपाने का प्लान बनाया, तब तो हमें यह भी मालूम नहीं था कि सिंडिकेट के आदमी हमारे बंगले की निगरानी कर रहे हैं। जब तू बैंजो को लेकर अजंता टावर पहुंचा, तब भी सिंडिकेट के आदमी तेरे पीछे होंगे। इसीलिए बख्तावर सिंह को यह रिपोर्ट तो थाली में सजी-सजाई चांदी के वर्क लगी अपने आप मिल गई कि हमने बैंजो को अजंता टावर में शिफ्ट कर दिया है। जबकि अब परिस्थिति में फर्क है। इस समय हम जानते हैं कि हमारा यह बंगला अब गुप्त नहीं रहा। इसकी हकीकत सिंडिकेट को मालूम हो चुकी है। अब हमें यह भी मालूम है कि सिंडिकेट के आदमियों द्वारा चौबीस घंटे हमारी निगरानी की जा रही है। इसीलिए ऐसी परिस्थिति में अगर तेरे छिपने का प्लान बनाया जाएगा तो वह प्लान पहले से बेहतर होगा। इस बार इस बात का विशेष ख्याल रखा जाएगा कि तेरे छिपने की जगह के बारे में सिंडिकेट के आदमियों को कुछ मालूम न होने पाए। इसलिए बख्तावर सिंह को इस बार यह रिपोर्ट थाली में सजी-सजाई, चांदी के वर्क लगी नहीं मिलेगी कि तू कहां छिपा है। उसे एडवांस में ही सब कुछ मालूम नहीं हो जाएगा। बल्कि बख्तावर सिंह को तुझे तलाशने के लिए हाथ-पैर पीटने होंगे और इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि बख्तावर सिंह अपनी इस कोशिश में कामयाब हो जाए।"

नाईक की बात सुनकर शंकरराव के चेहरे पर सोच के भाव उभर आए।

"मैं गलत नहीं कह रहा शंकरराव।" बाबू नाईक अपनी एक-एक शब्द पर जोर डालता हुआ बोला- "सिंडिकेट से

भी सोचता हूं। मुझे उम्मीद है कि हम जरूर कोई शानदार जगह ढूंढने में कामयाब हो जाएंगे।"

फिर वे दोनों बंगले के दो अलग-अलग कमरों में पहुंच गए तथा एकांत में किसी 'महत्वपूर्ण जगह' के बारे में सोचने लगे।

□□□

बीस मिनट भी न गुजरे होंगे कि शंकरराव भागा-भागा बाबू नाईक के पास आया।

"मैंने जगह के बारे में सोच लिया है।" शंकरराव खुशी से हांफ रहा था- "ऐसी बढ़िया जगह सोची है कि बख्तावर सिंह तथा सिंडिकेट की पूरी फौज मिलकर भी उस जगह को ढूंढ नहीं सकती। उन्हें तलाशने में सात जन्म लग जाएंगे, लेकिन फिर भी वो मुझे ढूंढते-ढूंढते वहां तक नहीं पहुंच सकेंगे।"

"ऐसी कौन सी जगह है ?" बाबू नाईक ने भी उत्सुकतावश पूछा।

"सोनाबाई तो याद होगी तेरे को ?"

"स..सोनाबाई ?" बाबू नाईक के नेत्र गोल दायरे में सिकुड़े।

"अरे वही सोना, जो मेरे मन की थी पंजिम वाले ब्राथेल (वेश्यागृह) में पेशा करती थी। जो नाक में हीरे की लौंग पहनती थी और हमेशा जुड़ा बांधकर रखती थी।"

"अच्छा वो।" बाबू नाईक की आंखों में एकाएक तेज चमक उभरी- "वो सोना, उसकी तो मैंने तीन-चार बार पुड़िया भी बांधी थी।"

"मैं उसी सोना की बात कर रहा हूं।"

"क्या मछली थी वो भी शंकरराव ।" सोनाबाई का जिक्र छिड़ते ही बाबू नाईक के चेहरे पर हरियाली लहलहाने लगी थी- "पठ्ठी की जांघें भी ये लंबी-लंबी और भारी थीं । पुड़िया बांधते समय ऐसा लगता था, जैसे किसी पहलवान से कुश्ती लड़ी जा रही हो ।"

"बिल्कुल ठीक बोला तू । सोनाबाई एकदम ऐसी ही थी नाईक । ऊपर से सेक्स आसनों की तो उसे इतनी नॉलेज थी कि वह उल्टा ग्राहकों को बताती थी, ऐसी कर, ऐसे कर । यूं लेट, यूं बैठ । उसके चाहने वाले आज भी ब्राथेल के चक्कर लगाते हैं । लेकिन अब उन्हें निराश लौट जाना पड़ता है ।

"क्यो ?" बाबू नाईक चौंका- "निराश क्यों लौट जाना पड़ता है ?"

"क्योंकि साल भर पहले ही उसने जिस्मफरोशी के धंधे से किनारा कर लिया है ।" शंकरराव कड़वा-सा मुंह बनाकर बोला- "पता नहीं साली के दिमाग में कैसे भजन-पूजन की बात घुस गई थी । मीराबाई के भजन गाने लगी थी और वहीं एक छोटा सा मंदिर भी बना लिया था ।"

"बड़ी अजीब बात बता रहा है ।" बाबू नाईक अचंभित मुद्रा में बोला- "यह तो नौ सौ चूहे खाकर हज को जाने वाली बात हुई ।"

"अब कुछ भी कह ।" शंकरराव बोला- "लेकिन साल भर पहले ही सोनाबाई ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह धंधा नहीं करेगी । वेश्यावृत्ति के धंधे से उसने नोट भी खूब पीटे थे । काफी रोकड़ा इकट्ठा कर लिया था । फिर वो ब्राथेल भी पूरी तरह से छोड़कर चली गई और कोल्वा बीच इलाके में ही एक छोटा किंतु बढ़िया मकान लेकर

रहने लगी । कुछ पैसा बैंक में जमा कर दिया, वहां से उसे हर महीने इतना ब्याज प्राप्त हो जाता है कि जिंदगी की गाड़ी चलाने के लिए उसे कुछ करने की जरूरत ही नहीं पड़ती । घर में फ्रीज़, टेलीफोन वगैरा सबकुछ है । बस वहां अकेले रहकर भजन-पूजन करती है ।"

"यानी आज की तारीख में सोनाबाई पूरी तरह सन्यासिनी बन चुकी है ।" बाबू नाईक बोला- "और वह कोल्वा बीच वाले अपने घर में रहती है ।"

"हां नाईक ।" शंकरराव पुनः बेहद उत्साहित मुद्रा में बोला- "मैं समझता हूं कि छिपने के लिए उससे बढ़िया जगह और कहीं नहीं हो सकती । सिंडिकेट के आदमियों को यह बात ख्वाब में भी नहीं सूझेगी कि मेरे जैसा अंडरवर्ल्ड का दादा किसी सन्यासिनी के घर में भी छिपा होगा ।"

"बात तो तेरी ठीक है ।" बाबू नाईक भी उत्साहित नजर आने लगा- "तेरे को छिपने के लिए बढ़िया जगह भी मिलेगी और पुड़िया बांधने के लिए बढ़िया मछली भी मिलेगी । यानी एक पंथ दो काज ।"

"वो अब मछली नहीं रही नाईक । वो अब भक्तन बन चुकी है । वो अब सारे दिन राम-राम करती है ।"

"जरूर साली दिखावा करती होगी ।" बाबू नाईक फुंफकारा- "वरना ऐसा भी कहीं हो सकता है कि जो मछली दोपहर, शाम, रात तीन-तीन बार अपनी पुड़िया बंधवाती हो, वह एकाएक सब कुछ छोड़ दे ।"

"वह वाकई सब कुछ छोड़ चुकी है । वो फुल सन्यासिनी बन चुकी है ।"

शंकरराव हैरानी से बाबू नाईक को देखने लगा ।

“तूने जब सुपर बाजार की वैन देखी है तो तुझे यह भी मालूम होगा कि वो वैन दो पोर्शन में बंटी होती है, एक ड्राइविंग पोर्शन । दूसरा, पीछे वाला दुकान जैसा बड़ा पोर्शन, जिसमें बाकायदा शटर भी लगा रहता है । उस दुकान जैसे बड़े पोर्शन में फल-फ्रूट रखे रहते हैं और वहीं सुपर बाजार का एक सेल्समैन भी बैठा रहता है, जो फल फ्रूट बेचता है ।”

“बिल्कुल ठीक बात है ।” शंकरराव विस्मय से ही बोला- “इसी तरह की है वो वैन ।”

“तूने कभी उस फ्रूट सेल्समैन को देखा है ?”

“क्यों ? कोई खास बात है उस सेल्समैन में ?”

“अगर तूने उसे देखा होता शंकरराव ।” बाबू नाईक उत्साहजनक अवस्था में ही बोला- “तो इस समय तू यह सवाल न करता, तब तू फौरन ही समझ जाता कि मैं क्या कहने जा रहा हूं । जानता है, उस सेल्समैन की कद-काठी यहां तक कि शक्ल-सूरत भी तेरे से काफी हद तक मिलती है । एक बार तो उसे देखकर मैं भी चक्कर खा गया था । वह बिल्कुल तेरी ही तरह पतला और लंबा है । उम्र भी तेरे जैसी है । बाल भी तेरी तरह ही लंबे-लंबे रखता है । बस उसका माथा चौड़ा है और नाक थोड़ी मोटी है, वरना वह बिल्कुल तेरी टू कॉपी है । अगर कोई दूर से तुम दोनों को देखे तो हंड्रेड परसेंट चक्कर खा जाए ।”

“बड़ी अजीब बात सुना रहा है ।”

“अजीब बात है, लेकिन सच है, हकीकत है ।”

“ठीक है । मैं मानता हूं कि वह फूट सेल्समैन मेरे से काफी हद तक मिलता है, लेकिन मैं सिंडिकेट की

आदमियों की आंखों में धूल झोंककर यहां से किस तरह बाहर जाऊंगा ?”

“उसी फ्रूट सेल्समैन की बदौलत यह काम संभव होगा ।”

“किस तरह ?”

सुपर बाजार की वो वैन रोजाना की तरह आज भी शाम को छः बजे के आसपास इस इलाके में आएगी ।” बाबू नाईक उसे अपनी योजना समझाता हुआ बोला- “जैसे ही वैन हमारे बंगले के सामने से गुजरेगी, मैं रोकूंगा तथा इतने सारे फल खरीदूंगा कि उन फलों को रखने के लिए सेल्समैन मेरे साथ-साथ बंगले के अंदर आना पड़ेगा । और तुझे क्या करना है, मैं समझता हूं कि यह बात बताने की जरूरत नहीं ।”

शंकरराव की दोनों आंखें हजार-हजार वाट के बल्ब की तरह जगमगाने लगीं ।

बाबू नाईक की पूरी योजना वो पलक झपकते ही समझ गया था ।

“लेकिन अगर सेल्समैन बंगले के अंदर आने से इंकार कर दिया ।” शंकरराव ने आशंका व्यक्त की- “तब क्या होगा ?”

“वह सब तू मेरे ऊपर छोड़ दे । उसे बंगले के अंदर लेकर आने की हैडक मेरी है । मैं उसे हर हालत में यहां लेकर आऊंगा ।”

“यानी आज शाम को मेरा बंगले से निकलना पक्का ?”

“बिल्कुल पक्का ।”

शंकरराव खुश नजर आने लगा ।

एक बार फिर शै-मात का खेल शुरू हो गया था। उन्होंने अपने बचाव के लिए पत्ते बिछाने शुरू कर दिए थे।

□□□

रोजाना की तरह शाम को छः बजे सुपर बाजार की वो सरकारी वैन डोनापाला बीच पर प्रकट हुई।

डोनापाला बीच पर उस समय कुछ लोग फुटबॉल का खेल पूरे उत्साह से खेल रहे थे। वहीं कुछ कपल इवनिंग वॉल्क का मज़ा भी ले रहे थे, तो कुछ टूरिस्ट बीच पर भी तैर रहे थे।

जो ड्राइवर उस वैन को चला रहा था, वह एक पगड़ीधारी सिख था। जबकि वैन के सेल पोर्शन में आज भी वही सेल्समैन बैठा था, जिसकी सूरत काफी हद तक शंकरराव से मिलती थी।

उस सेल्समैन का नाम कासिम अली था। कासिम अली की दो साल पहले ही शादी हुई थी और अभी छः महीने पहले ही उसकी बीवी ने एक चांद से बेटे को जन्म दिया था। कासिम अली खुश था। जिंदगी की सारी खुशियाँ उसे मिली थीं।

लेकिन उस बेचारे को कहां मालूम था कि किसी से मिलते अपने चेहरे की बदौलत आज उसकी सारी खुशियां खत्म होने जा रही हैं।

छः बजने में उस समय पांच मिनट शेष थे, जब बाबू कमले बंगले से बाहर आकर खड़ा हो गया।

अब उसे 'शिकार' का इंतजार था।

बाबू नाईक को बंगले से बाहर आते देखते ही सिंडिकेट के सारे आदमी भी चौकस हो गए थे।

अंधा भिखारी जोर-जोर से चिल्लाकर भीख मांगने लगा था, शायद वो आसपास तैनात सिंडिकेट के आदमियों को अलर्ट कर रहा था ।

एक आदमी बिजली के खंभे पर चढ़ा हुआ था और वो ख्वामाखाह तारों के साथ छेड़छाड़ कर रहा था । वह भी सिंडिकेट का ही आदमी था ।

जबकि दो आदमी बुलेट मोटरसाइकिल पर इधर-से-उधर घूम रहे थे ।

बाबू नाईक ने किसी की परवाह न की । उसे बड़ी बेसब्री से वैन का इंतजार था ।

लगभग सवा छः बजे वैन बंगले के नजदीक पहुँची । बाबू नाईक ने हाथ देकर वैन रुकवाई ।

तुरंत वैन बंगले के बिल्कुल सामने रुक गई ।

"क्या चाहिए साहब ?" कासिम अली, बाबू नाईक से बड़े मीठे स्वर में बोला ।

कासिम अली को देखकर बाबू नाईक खुश हुआ था । वरना उसे यह डर था कि कहीं आज सेल्समैन न बदल गया हो ।

"साहब !" कासिम अली पुनः बोला- "क्या चाहिए ?"

"द...दो किलो सेब दे दो ।"

कासिम अली सेब तोलने लगा ।

"क्या केले भी हैं ?" बाबू नाईक ने पूछा- "बढ़िया वाले ?"

"एकदम बढ़िया केले हैं साहब ।" कासिम अली अच्छे सेल्समैन की भांति बोला- "बताइए कितनी दूं ?"

"दो दर्जन केले दे दो ।"

कासिम अली ने सेब तोलने के बाद दो दर्जन केले भी दिए ।

इस प्रकार बाबू नाईक उससे भिन्न-भिन्न फलों के बारे में पूछता रहा और उन्हें लेता रहा ।

शीघ्र ही प्लास्टिक के चार बड़े-बड़े शॉपिंग बैग फलों से भर गए ।

ढेर सारे फल लेने के बाद बाबू नाईक ने उसका हिसाब किया फिर विनयपूर्वक बोला- "भैया, क्या तुम दो बैग मेरे बंगले के अंदर रखकर आ सकते हो ? बाकी दो बैग मैं खुद ले जाऊंगा । सांस की बीमारी है, इसलिए ज्यादा वजन नहीं उठाया जाता ।"

"कौन से बंगले में ?" कासिम अली ने पूछा ।

"यही जो सामने वाला बंगला है ।"

कासिम अली थोड़ा हिचकिचाया ।

"मैं तुम्हें हर्गिज भी कष्ट न देता ।" बाबू नाईक तुरंत बोला- "दरअसल मैं इस बंगले में अकेला हूं । कोई नौकर भी तो नहीं है ।"

"मुझे बैग रखकर आने में कोई परेशानी नहीं साहब !" कासिम अली बोला- "लेकिन मैं दुकान अकेली छोड़कर कैसे जाऊं ?"

"मैं यहां खड़े होकर तुम्हारी दुकान देखता हूं । इतने में तुम मेरे बैग रख आओ ।"

"हां, यह ठीक रहेगा ।" कासिम अली झटपट खड़ा हो गया और फिर उसने फलों के चारों बैग उठा लिए ।

"य.. यह क्या कर रहे हो ?" बाबू नाईक चौंका ।

"जब आपकी मदद करनी ही है साहब, तो क्यों न पूरी मदद करूं। दो बैग उठाने में भी आपको ख्वामाखाह परेशानी होगी।"

"लेकिन....।"

"मैं गया और आया साहब। आप बस मेरी दुकान देखते रहिए।"

कासिम अली बैग उठाकर तेजी से बंगले की तरफ बढ़ गया।

"यह वाकई भला आदमी है।" बाबू नाईक की आंखों में पैशाचिक चमक उभरी- "सीधा स्वर्ग में जाएगा।"

□□□

मुश्किल से पांच मिनट बाद ही वो लौट आया।

"सारे फल रख आए ?" बाबू नाईक थोड़े ऊंचे स्वर में बोला।

"हां साहब ! सब फल रख आया। अब आप बेफिक्र होकर अंदर जाइए। आपकी मुश्किल हल हो चुकी है।"

"गुड। मैं तुम्हारा बहुत-बहुत आभारी हूं।"

"इसमें आभार कैसा ? इंसान ही इंसान के 'काम' आता है। इस नाचीज सेल्समैन की किस्मत में ही था कि वह आपके 'काम' आए, काम आ गया।" बोलते हुए ही वो वैन के दुकान वाले पोर्शन में बैठ गया था और उसने वहीं लगी एक बैल का बटन दबा दिया।

तुरंत वैन तेजी से आगे बढ़ गई।

बाबू नाईक जल्दी-जल्दी चलता हुआ वापस बंगले में पहुंचा। सामने ड्राइंग हॉल के चिकने फर्श पर ही कासिम अली की खून से लथपथ गर्दन कटी लाश पड़ी थी। शंकरराव ने कासिम अली के कपड़े उतारने के बाद उसे बड़ी

बेरहमी से कत्ल कर डाला था और फिर खुद उसके कपड़े पहनकर वहां से फरार हो गया था ।

कासिम अली की लाश देखकर बाबू नाईक के होठों पर मुस्कुराहट दौड़ गई ।

फिर वो तेजी से कासिम अली की लाश ठिकाने लगाने के कार्य में जुट गया ।

इतना बड़ा काम झटपट हो गया था और सिंडिकेट के आदमियों को कानों-कान भनक तक नहीं लगी थी ।

□□□

बाबू नाईक के बंगले में जाते ही बिजली के खंभे पर चढ़ा सिंडिकेट का आदमी फौरन नीचे उतर आया ।

उसी पल बुलेट भी गड़गड़ती हुई उसके नजदीक आकर रुकी ।

"बहुत सारे फल खरीदे हैं गंजे ने ।" उसने बुलेट पर सवार आदमी की सिगरेट अपनी माचिस से सुलगाते हुए धीमे स्वर में कहा ।

"जरूर साला रोटी की जगह फल ही खाता होगा ।" बुलेट पर सवार व्यक्ति बोला- "तभी तो सेब की तरह से लाल सुर्ख हो रहा है ।"

"एक बात समझ में नहीं आई ।" उसी पल बुलेट पर पीछे बैठा व्यक्ति भी बोला ।

"क्या बात ?"

"सेल्समैन फलों के बैग रखने अंदर बंगले में क्यों गया था ? यह काम तो खुद गंजा भी कर सकता था ।"

"अरे बहुत हारामी है ये गंजा ।" बिजली मैकेनिक बना सिंडिकेट का आदमी बोला- "खुद को गॉडफादर से कम

पोजीशन वाला थोड़े ही समझता है। फलों के बैग उठाकर खुद ले जाता तो उसकी शान में फर्क नहीं आ जाना था।"

"मुझे तो कुछ और बात लगती है।" बुलेट पर पीछे बैठा आदमी बोला।

"और क्या बात ?"

"जरूर कहीं न कहीं कुछ घपला है।"

"तू तो साले पागल हो गया है।" बुलेट चालक गुर्राया- "हर चीज में घपला नजर आता है। अभी गंजे ने वैन रुकवाई थी तो बोल रहा था, गंजे ने वैन क्यों रुकवाई ? जरूर कुछ घपला है, अरे क्या वो खाना-पीना भी बंद कर दे।"

बुलेट चालक ने वह बात कुछ इस ढंग से कही कि कथित बिजली मैकेनिक की हंसी छूट गई।

वह हंसा तो उसके गंदे पायरिया लगे दांत यूं चमके, जैसे किसी ने गटर का ढक्कन खोल दिया हो।

"तू बता।" बुलेट चालक कथित बिजली मैकेनिक से बोला- "तूने कोई खास बात तो नहीं देखी ?"

"नहीं, कोई खास बात तो नहीं देखी ?"

"ठीक है पूरे चौकस होकर निगाह रखना।"

"बेफिक्र रहो।"

बुलेट गड़गड़ाती हुई आगे बढ़ गई।

□□□

तीस-पैंतीस किलोमीटर की दूरी तय कर शंकरराव लगभग एक-सवा घंटे में कोल्वा बीच पर सोनाबाई के घर पहुंच गया था।

यहां तक पहुंचने में उसे कैसी भी, कोई दिक्कत न आई थी।

ही तंदरुस्त और भारी थीं, जिनके जानलेवा कटाव साड़ी में से अलग नजर आ रहे थे ।

शंकरराव को देखते ही सोनाबाई की आंखें चमक उठीं ।

"आइए, राव साहब ।" वह प्रफुल्लित स्वर में बोली- "आज सोना की याद कैसे आयी ?"

"तू भी कोई भूलने वाली चीज है ?" शंकरराव ने उसे सिर से पांव तक देखकर ठंडी आह भरी- "तू तो सचमुच का सोना है मेरी जान, सचमुच का सोना । पहले 22 कैरेट का सोना थी, अब तो फुल 24 कैरेट का सोना बन चुकी है ।"

शंकरराव की बात सुनकर सोनाबाई हंसी ।

वह हंसी तो उसके मोतियों की लड़ी जैसे जगमग-जगमग दांत चमक उठे, जो उसकी सुन्दरता में और चार चांद लगा गये ।

"आइए, अंदर आइए ।" सोनाबाई दरवाजा छोड़कर एक तरफ हटी ।

शंकरराव ने अंदर कदम रखा और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया ।

"मैंने सोचा ।" शंकरराव मुस्कुराता हुआ ही बोला- "कि आज तेरी खबर ले लूं । यहां कोल्वा बीच पर भजन-पूजन ही कर रही है या कुछ और कर रही है । इसी बहाने तेरे दर्शन भी हो गए ।"

सोनाबाई पुनः हंसी ।

वह हंसती बहुत थी और जब हंसती थी तो और खूबसूरत लगती थी ।

"बैंजो साहब कैसे हैं ?"

"ब.. बैंजो साहब ?" शंकरराव के जिस्म को एकाएक करण्ट छू गया ।

उसकी सारी खुशी एकदम भक्क से उड़ गयी ।

इसका मतलब सोनाबाई कुछ नहीं जानती थी । उसे कुछ नहीं मालूम था कि अंडरवर्ल्ड के सिंडिकेट और उनके बीच कैसा बड़ा हंगामा हो रहा है । जिस बैंजो का हाल-चाल वो पूछ रही थी, वह बेचारा बैंजो तो अब इस दुनिया में ही नहीं है ।

शंकरराव ने तत्काल फैसला कर लिया कि सोनाबाई को कुछ नहीं बताएगा । वह उसके सामने तमाम हालातों पर पर्दा ही पड़ा रहने देगा ।

"क्या बात है ?" सोनाबाई गंभीर हो उठी- "आपने बताया नहीं कि बैंजो साहब कैसे हैं ?"

"एकदम फर्स्ट क्लास ।" शंकरराव अपने चेहरे पर नकली खुशी का आवरण ओढ़ते हुए बोला- "एकदम मजे में हैं । तू तो जानती ही है, अपना बैंजो हमेशा खुश रहता है । रोजाना नई-नई मछली फांसता रहता है ।"

'मछली' के नाम पर सोनाबाई पुनः अपने मोतियों जैसे दांत चमकाकर हंसी ।

"खुराफातें छोड़ी नहीं अभी तक ।" सोनाबाई बोली ।

"ले, सब तेरी तरह थोड़े ही है । खुराफातें भी कहीं छूटती हैं और मेरी जान पट्ठी खुराफातों में जो मजा है, वो भजन-पूजन में कहां । भजन-पूजन तो लोग बुढ़ापे में इसलिए करते हैं, ताकि परलोक सुधर जाए । जवानी तो धड़ाधड़ पुड़िया बांधने को है ।"

सोनाबाई फिर हंसी ।

उसकी जिंदगी में अब बहुत शाइस्तगी आ गई थी। वह हंसती भी थी तो शालीनतापूर्वक हंसती थी।

जबकि पहले उसकी हंसी में उन्माद होता था, चंचलता होती थी।

"अब एक बात सुन ले।" शंकरराव बोला- "और अच्छी तरह से सुन ले।"

"क्या ?"

"दो दिन तक अब मुझे तेरा मेहमान बनकर यहीं रहना है। तेरे को कोई ऐतराज तो नहीं ?"

"मुझे क्या ऐतराज हो सकता है ?" सोनाबाई तुरंत बोली- "बल्कि मुझे तो खुशी है कि कोई पुराना परिचित मेरे यहां आया है। इसी बहाने कुछ मेहमाननवाजी का भी मौका मिलेगा। वैसे भी यह घर तो आपकी ही देन है राव साहब।"

"व...वो कैसे ?" शंकरराव चौंका।

"अगर आप मुझे अपने ब्रॉथेल में शरण न देते या फिर जौंक बनकर मेरी सारी कमाई को चूसने लगते तो मैं यह सब कैसे जुटा पाती ?"

"एक साल में बहुत समझदार हो गई है तू। पहले सिर्फ खूबसूरत थी, अब खूबसूरती बढ़ने के साथ-साथ बुद्धि भी खूब तेज हो गई है। अच्छा, एक बात बता।"

"पूछो।"

"बिल्कुल सच-सच जवाब देगी ?"

"पूछोगे भी।"

"पहले तू नाक में हीरे की लौंग पहनती थी, अब भी पहनती है।"

"हां।"

"हां, कहीं ऐसा तो नहीं कि शंकरराव यहां से कहीं और फरार हो गया हो ?"

"तू पागल है।" जर्किन वाला सिगरेट का कश लगाते हुए ठिठका और थोड़ा भड़ककर बोला- "ऐसा भी कहीं हो सकता है ? सिंडिकेट के इतने सारे आदमी बंगले पर निगाह रखे हैं, फिर वो किधर से फरार होगा ?"

"तू अभी इन दादाओं को नहीं जानता।" हैट वाले ने दांत किटकिटाए- "साले बहुत हारामी दादा हैं। एक से एक नई ट्रिक सोचते हैं। तू मान या न मान, लेकिन मेरा दिल गवाही दे रहा है कि शंकरराव बंगले के अंदर नहीं हैं। वह जरूर बाबू नाईक की मदद से कोई ट्रिक भिड़ाकर फरार हो चुका है।"

"कैसी ट्रिक ?" जर्किन वाले की आवाज में अब सस्पैंस पैदा होने लगा था।

"यह मैं भी नहीं जानता कि वह ट्रिक कैसी होगी ? लेकिन मैं समझता हूं कि हमें यह बात फौरन गॉडफादर को बता देनी चाहिए।"

"नहीं, जब तक यह कंफर्म न हो जाए कि शंकरराव वाकई बंगले में नहीं है, तब तक गॉडफादर को कुछ भी बताना फिजूल होगा।"

"लेकिन यह बात कंफर्म कैसे होगी ?"

"इसके लिए हमें दिन निकलने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।" जर्किन वाला सिगरेट के लंबे-लंबे कश लगाता हुआ बोला- "आराम से बैठकर कोई तरकीब सोचते हैं, जिससे सब कुछ मालूम हो जाए।"

उसके बाद हैट वाले कुछ नहीं कहा। वो नजदीक ही एक केतली में से एक कप में चाय पलटने लगा

"आज बंगले की लाइट नौ बजे ही बंद हो गई ।"

"तो इसमें अनोखी बात क्या है ?" जर्किन वाले ने एक सिगरेट सुलगाते हुए पूछा ।

"अनोखी बात है । रोजाना बंगले की लाइट रात के ग्यारह बजे बंद होती थी, आज इतनी जल्दी क्यों बंद हुई ।"

"अरे उन्हें नींद आ रही होगी ।" जर्किन वाला बोला- "जल्दी सो गए होंगे, हो जाता है ऐसा कभी-कभी ।"

"तू क्या समझता है, यह समय सोने का है ?" हैट वाला थोड़े तीखे स्वर में बोला- "उन दोनों के सिर पर मौत मंडरा रही है । उनकी जान के लाले पड़े हुए हैं, ऐसे में कोई जल्दी सो सकता है ?"

अब जर्किन वाला आश्चर्य से उसे देखने लगा ।

"वैसे भी तूने आज एक महत्वपूर्ण बात नोट नहीं की, जो मैंने की है ।"

"कौन सी बात ?"

"रोजाना शाम को शंकरराव बंगले के लॉन में आधा घंटा टहलता था, आज वो टहलने के लिए भी लॉन में नहीं आया ।"

"क्या पता मौत के खौफ ने उसे सब-कुछ भुला दिया हो । वैसे भी जब किसी आदमी के सिर पर मौत की नंगी तलवार लटक रही हो तो उसे टहलना कैसे सुझेगा ?"

"नहीं ।" हैट वाले ने अब दूरबीन गले में लटका ली थी और वहीं खिड़की के पास एक स्टूल पर बैठ गया था- "जरूर कुछ और बात है । मुझे गड़बड़ लग रही है ।"

"ग....गड़बड़ ?"

□□□

सबसे पहले शंकरराव और सोनाबाई ने एक साथ खाना खाया था। फिर रात के नौ बजे सोनाबाई अपने घर में ही बने छोटे से मंदिर में भजन करने चली गई थी।

रात के ग्यारह बजे तक सोनाबाई भजन गाती रही।

वह बड़ी लयबद्ध सुरीली आवाज में पूरी तन्मयता के साथ भजन गाती थी।

पूजा खत्म होने के बाद वो मंदिर से निकली तो सोने के लिए सीधे अपने कमरे में चली गई।

शंकरराव का बिस्तर उसने नौ बजे से पहले ही दूसरे कमरे में कर दिया था।

लेकिन शंकरराव की आंखों में नींद कहां थी। उसकी आंखों के गिर्द तो बार-बार सोनाबाई का चेहरा मंडरा रहा था। यह कैसे हो सकता था कि 'मछली' दूसरे कमरे में सोए और वह दूसरे कमरे में।

रात के बारह बजे तक शंकरराव करवट-पर-करवट बदलता रहा।

जब 'मछली' से दूर रहने की बेचैनी उसे बर्दाश्त न हुई तो वह बिस्तर छोड़कर उठा और बिल्कुल खामोशी से दबे पांव सोनाबाई के कमरे की तरफ बढ़ा।

कमरे का दरवाजा बंद था, लेकिन शंकरराव ने उसे धक्का दिया तो वह निर्विकार ढंग से खुलता चला गया।

अंदर से सांकल लगी हुई नहीं थी।

सामने ही बिस्तर पर सोनाबाई गहरी नींद में सो रही थी। वह एकदम से सीधी लेटी हुई थी। सांसों के तीव्र वेग के कारण उसकी छातियां ऊपर-नीचे उठ-गिर रही थीं।

उसकी दोनो टांगें दाएं-बाएं फैली हुई थीं और पेटीकोट घुटनों तक सरका हुआ था, जिससे उसकी गोरी-चिट्टी जांघें एकदम साफ-साफ नजर आ रही थीं।

पेट भी बिल्कुल नंगा था और उसमें सांसों के आवागमन के कारण अजीब-सी हलचल हो रही थी।

सोनाबाई को उस हाल में देखते ही शंकरराव का पूरा जिस्म एकदम से खड़क उठा।

उसने अपने शुष्क होठों पर जुबान फेरी और फिर वह बिस्तर पर सोनाबाई के करीब ही बैठ गया।

सोनाबाई फिर भी दीन-दुनिया से बेखबर गहरी नींद में सोती रही।

सोनाबाई को देखकर शंकरराव का बुरा हाल होने लगा था। एकाएक उसने अपना हाथ सोनाबाई की नंगी जांघ पर रख दिया और फिर उसकी उंगलियाँ कछुए की भांति रेंगती हुई ऊपर की तरफ बढ़ीं।

तत्काल सोनाबाई की आंखें भक्क से खुल गयीं। वह एकदम झटके से यूं उठ बैठी, जैसे उसे सोते-सोते चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट लगा हो। उसने नेत्र फैलाकर बड़ी हैरानी से शंकरराव को देखा। उसे शंकरराव को अपने बेडरूम में देखकर ही जबरदस्त आश्चर्य हुआ था।

"य... यह क्या कर रहे हो ?" सोनाबाई अपनी टांगें पेटीकोट से ढककर तेजी से पीछे हुई।

शंकरराव ने उसे दबोच लिया, फिर उसके बदन को हिलाता हुआ बोला- "तुझे नहीं मालूम कि मैं क्या कर रहा हूं ?"

"न...नहीं।" सोनाबाई की आंखों में आतंक के भाव उभर आए- "छोड़ो मुझे, छोड़ो। आप तो जानते हैं राव

साहब, अब मैंने जिस्मफरोशी की दुनिया से किनारा कर लिया है । अब मैं धंधा नहीं करती ।”

“अरे तो मैं कौन सा तुझे वापस धंधे में धकेल रहा हूं ।” शंकरराव गुर्राया- “मैं तो बस एक बार तेरी पुड़िया बांधना चाहता हूं ।”

“नहीं राव साहब, नहीं ।” सोनाबाई कुछ और ज्यादा अपने आप में सिकुड़ गई- “अब यह मुमकिन नहीं अब मैं सन्यासिनी बन चुकी हूं ।”

“अरे तो कौन सी आफत आ गई, जो तू सन्यासिनी बन गई । बड़ी बड़ी सन्यासिनें यह सब करती हैं ।”

“मैं उन सन्यासियों में नहीं, मैं अपनी तमाम शारीरिक इच्छाओं को त्याग चुकी हूं ।”

“तू पागल हो गई है ।” शंकरराव गुस्से में दहाड़ा- “भूसा भर गया है, तेरी खोपड़ी में । कैसा भरा-भरा फलदार जिस्म है, जो दूसरों को छाया भी दे और फल भी दे । इससे बड़ा धर्म तेरा क्या होगा कि दिल खोलकर दूसरों की सेवा करे । पता नहीं भजन-पूजन की बात किसने तेरे दिमाग में घुसा दी है ।”

शंकरराव ने और ज्यादा कसकर सोनाबाई को दबोच लिया तथा उसके हाथ तेजी से उसके ब्लाउज की तरफ उठे ।

“न...नहीं ।” सोनाबाई पुनः तेजी से पीछे खिसक गई- “छोड़ो मुझे, छोड़ो ।” उसके चेहरे पर अब याचना के भाव उभर आए थे ।

वह शंकरराव के सामने लगभग गिड़गिड़ा रही थी ।

“आज तो मैंने तुझे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना मेरी सोना, आज तो तेरी पुड़िया बंधनी-ही-बंधनी है ।”

सोनाबाई ने बहुत हाथ-पैर पीटे ।

बहुत याचना की ।

परंतु शंकरराव के ऊपर उस समय वासना का भूत पूरी तरह सवार हो चुका था । उसे सिर्फ सोनाबाई का जिस्म नजर आ रहा था ।

सोनाबाई की कोई फरियाद उसके कानों तक नहीं पहुंच रही थी ।

अंततः उसे रात शंकरराव ने सोना की पुड़िया बांध ही दी ।

□□□

हैट वाले आदमी ने अपना हैट दुरुस्त किया तथा फिर वो बे-धड़क बंगले के अंदर दाखिल हो गया ।

उस वक्त सुबह के छः बज रहे थे ।

काली जर्किन वाले ने और उसने रात घंटों बैठकर दिमाग दौड़ाया था । आखिरकार वो एक ऐसा प्लान बनाने में कामयाब हो ही गए थे, जिससे यह पता लगाया जा सके कि शंकरराव अपने बंगले में है या नहीं ।

इस समय हैट वाला उसी प्लान को साकार करने के लिए बंगले में घुसा था । उसने अपने हाथ पर ढेर सारे अखबार भी डाल रखे थे ।

बंगले के मेन गेट पर पहुंचकर उसने दो-तीन बार कॉलबेल दबाई ।

मुश्किल से पांच मिनट बाद ही बाबू नाईक ने भिन्नाते हुए दरवाजा खोला । वह सारी रात जागा था । सुबह के वक्त थोड़ी आंख लगी थी, तो वह कॉलबेल बजने लगी थी ।

"नहीं मालूम करना । यह बंगला मेरा है, यहां मेरा हुक्म चलता है ।"

"ल....लेकिन साहब ।"

बाबू नाईक ने उसी पल धड़ाक से उसके मुंह पर दरवाजा बंद कर दिया ।

हैट वाला तुरंत हड़बड़ाता हुआ पीछे हटा ।

□□□

"इससे तो साफ-साफ यह साबित होता है ।" जर्किन वाले ने चाय का कप खाली करके स्टूल पर रखा- "कि शंकरराव बंगले में नहीं है ।"

"बिल्कुल यही साबित होता है ।" हैट वाले ने भी जबरदस्त रोमांचित स्वर में कहा- "अगर शंकरराव बंगले में होता तो बाबू नाईक उससे एक बार पूछने जरूर जाता कि उसने अखबार के लिए बोला था या नहीं । वह क्योंकि पूछने नहीं गया, इसलिए साफ-साफ साबित होता है कि अंदर शंकरराव था ही नहीं ।"

"ल....लेकिन यह शंकरराव गया किधर से ?" जर्किन वाले के चेहरे पर अब थोड़ी घबराहट के चिन्ह भर आए थे ।

"गया होगा साला किधर से । हमें यह पता करके अब क्या करना है ?" हैट वाला आंदोलित मुद्रा में बोला-"वह फरार होना था, हो गया । देखो आज 27 फरवरी है । आज ही के दिन शंकरराव की मौत होनी है, इसलिए हमें यह खबर ब्लैक हाउस पहुंचानी चाहिए । ताकि गोवा में शंकरराव की खोजबीन का काम तुरंत बड़े पैमाने पर शुरू किया जा सके । अगर हमने इस मामले में ज्यादा देर की तो गॉडफादर का कहर हमारे ऊपर भी टूट सकता है ।"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम । हमें तुरंत यह खबर ब्लैक हाउस पहुंचानी चाहिए ।"

फिर वह दोनों बड़ी तेजी से कमरे में मौजूद अपना सामान समेटने लगे ।

□□□

उन्होंने वह खबर सीधे जैकाल को जाकर सुनाई थी । जैकाल ने तुरंत वह खबर बख्तावर सिंह को सुनाई ।

खबर ही कुछ ऐसी थी कि बख्तावर सिंह भी एकाएक चिंतित हो उठा । चिंता का सबसे बड़ा कारण यह था कि आज 27 फरवरी थी ।

"लेकिन वो फरार कैसे हुआ ?" बख्तावर सिंह ने जोर से चौंककर पूछा- "बंगले के चारों तरफ तो सिंडिकेट के आदमियों का बड़ा जाल फैला हुआ था ?"

"यह सच है गॉडफादर ।" जैकाल ने आदरपूर्वक सिर झुकाया- "बंगले के चारों तरफ वाकई सिंडिकेट के आदमियों का बड़ा जाल फैला हुआ था । सिर्फ इतना ही नहीं, वह आदमी पूरी तरह चौकस भी थे और एकदम अलर्ट होकर बंगले की निगरानी कर रहे थे ।"

"फिर भी वो फरार हो गया ?" बख्तावर सिंह बोला- "इतनी निगरानी के बावजूद भी वह सिंडिकेट के आदमियों की आंखों में धूल झोंक गया ?"

"यस गॉडफादर !" जैकाल थोड़ी आहत मुद्रा में बोला- "यह बात कबूलते हुए दिल को कष्ट होता है, लेकिन सच्चाई यही है कि इतनी जबरदस्त निगरानी के बावजूद भी वो भाग निकला ।"

बख्तावर सिंह ने झुंझलाते हुए मुट्ठियाँ भींची ।

"लेकिन वो भागा किस तरह ?" बख्तावर सिंह ने एक स्मोकिंग पाइप म्यूजिकल लाइटर से सुलगाते हुए पूछा ।

"यह किसी को भी नहीं मालूम गॉडफादर । उन लोगों को खुद हैरानी है कि आखिर यह सब कैसे हुआ ? कल पूरे दिन में सिर्फ एक बार बाबू नाईक अकेला बंगले से बाहर निकला था, वह भी फल लेने के लिए । अलबत्ता एक बात उन्होंने जरूर आश्चर्यजनक बताई ।"

"क्या ?"

"उन्होंने बताया कि बाबू नाईक ने सुपर बाजार की वैन से इतने ढेर सारे फल खरीदे थे, जो एक दर्जन व्यक्तियों के खाने के लिए भी बहुत होते ।"

"ऐनीथिंग ऐल्स ?" बख्तावर सिंह ने पाइप में से धुआं छोड़ा ।

"यस गॉडफादर । उन्होंने एक और खास बात बताई । उन्होंने बताया कि फलों से भरे चार बड़े-बड़े शॉपिंग बैगों को रखने के लिए वैन का सेल्समेन बंगले में गया था और तब तक बाबू नाईक ने बाहर खड़े होकर उसके सामान की रखवाली की थी ।"

"फल रखने के लिए सेल्समैन अंदर क्यों गया ?" बख्तावर सिंह पुनः जोर से चौंका ।

"यह रहस्य खुद मेरी भी समझ नहीं आया गॉडफादर । मेरा अनुमान है कि इसी में कहीं कोई पेंच होना चाहिए, जिसके कारण शंकरराव इतने आदमियों की आंखों में धूल झोंककर बंगले से फरार हो सका । लेकिन वो पेंच भी इसलिए समझ नहीं आ रहा क्योंकि वह सेल्समैन फल रखने के लिए जिस तरह बंगले के अंदर अकेला गया था, उसी तरह बंगले से बाहर भी अकेला निकला ।"

"क्या जब वो सेल्समैन बंगले से बाहर निकलकर आया, तब हमारे आदमियों ने उसके चेहरे पर गौर किया था ?"

"जरूर गौर किया होगा साहब । ऐसा कैसे हो सकता है कि किसी की नजर उसके चेहरे पर न पड़ी हो ।"

"यानी शंकरराव को कल किसी ने बंगले से बाहर निकलते नहीं देखा ।" बख्तावर सिंह ने पाइप का एक लंबा कश लगाया ।

"यस गॉडफादर ।"

"और यह बात भी बिल्कुल कन्फर्म है कि इस समय शंकरराव बंगले में नहीं है ?"

"यस गॉडफादर ।" जैकाल आदरपूर्वक ही बोला- "इस समय स्थिति ये है कि बंगले में सिर्फ बाबू नाईक है, एकदम अकेला बाबू नाईक । इसके अलावा सिंडिकेट के कुछ आदमी अभी भी बंगले पर निगाह रखे हुए हैं । शंकरराव कहां है, यह कोई नहीं जानता, सिर्फ एक आदमी को छोड़कर ।"

"वह आदमी कौन है ?" बख्तावर सिंह ने तेजी से जैकाल की तरफ देखा ।

"बाबू नाईक ।" जैकाल इस तरह बोला, जैसे कोई धमाका कर रहा हो- "आज की तारीख में बाबू नाईक ही एक ऐसा शख्स है, जो इस बात से वाकिफ होगा कि शंकरराव कहां है ? और यही हमारी खुशकिस्मती है कि बाबू नाईक अभी भी हमारे आदमियों की निगाह में है । आप मुझे इजाजत दीजिए गॉडफादर, मैं अभी डोनापाला बीच जाकर बाबू नाईक को पकड़ता हूं और फिर मुश्किल से दस मिनट में उससे कबूलवाता हूं कि शंकरराव अब कहां

है तथा वो बंगले से कैसे फरार हुआ ? वह सब कुछ बकेगा गॉडफादर, अपने मुंह से बकेगा ।”

“नहीं ।” बख्तावर सिंह के चेहरे पर एकाएक सख्ती उभर आई- “बाबू नाईक को छूना भी नहीं । सिंडिकेट के किसी भी आदमी को उसे हाथ नहीं लगाना है । हमने उसकी मौत का दिन 29 फरवरी फाइनल कर दिया है और 29 फरवरी से पहले उसके खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जाएगा ।”

“लेकिन अगर बाबू नाईक के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया गया गॉडफादर ।” जैकाल उलझनपूर्ण स्वर में बोला- “तो हमें कैसे पता चलेगा कि शंकरराव कहां छिपा है ? फिर हमारे पास शंकरराव को खोजने के लिए अब ज्यादा समय भी तो नहीं है गॉडफादर । 27 फरवरी की शुरुआत हो चुकी है और आज ही का दिन शंकरराव की मौत का दिन है । मैं समझता हूं कि इतनी जल्दी पूरे गोवा शहर में शंकरराव को खोजना असंभव होगा । अगर आप चाहते हैं कि शंकरराव आपके हाथों आज ही मारा जाए, तो इसके लिए जरूरी है कि बाबू नाईक से पूछताछ हो ।”

“नो ।” बख्तावर सिंह पुनः दृढ़ स्वर में ही बोला- “बाबू नाईक से कोई पूछताछ नहीं होगी ।”

“तो फिर आज शंकरराव का आपके हाथों कत्ल होना मुश्किल है गॉडफादर ।”

“नहीं, ऐसा भी नहीं होगा ।” बख्तावर सिंह के चेहरे पर अजीब सी दृढ़ता छाई हुई थी- “शंकरराव को आज ही कत्ल होना है । 27 फरवरी खत्म होने से पहले ही कत्ल होना है ।”

“ल....लेकिन यह करिश्मा किस तरह होगा ?”

"तू साली पागल हो गई है ।" शंकरराव ने दांत किटकिटाये- "इसके अलावा बाकी कोई बात नहीं है । भेजा फिर गया है तेरा । बड़ी आई पवित्र होने वाली । तेरा यह शरीर तो वही है, जो पहले छप्पन घाटों का पानी पीता था । एक ही साल में यह शुद्ध हो गया, अब पवित्र हो गया ?"

"यह शरीर अब एक सन्यासिनी का शरीर है ।"

"मत भूल ।" शंकरराव ने भी गुर्राकर कहा- "कि यही शरीर पहले एक वेश्या का शरीर था ।"

"लेकिन शरीर कभी गंदा नहीं होता राव साहब ।" सोनाबाई की आवाज एकाएक भभकने लगी- "गंदी होती है आत्मा । बाल्मीकि की कहानी आपने जरूर सुनी होगी । वह एक मामूली चोर थे, लेकिन जब उन्हें धर्म का ज्ञान हुआ तो उन्हीं वाल्मीकि ने 'रामायण' जैसे महान धर्मग्रंथ की रचना की और वह संपूर्ण विश्व में महान संत के रूप में लोकप्रिय हुए । इसी तरह वेश्यावृत्ति के दौरान मेरी आत्मा भी अपवित्र हो गई थी, लेकिन पिछले एक वर्ष में मैंने उसे पूरी तरह शुद्ध कर लिया था, परंतु रात एक ही झटके में आपने मेरी साधना भंग कर डाली । सन्यासिनी के साथ इस तरह का व्यवहार करने पर ईश्वर आपको जरूर दंड देगा राव साहब ।"

"पता नहीं क्या-क्या अंट-शंट बके जा रही है, मैं अंदर चलता हूं ।"

शंकरराव तेजी से दूसरे कमरे की तरफ बढ़ गया ।

लेकिन अब उसके हाथ-पैर कांपने लगे थे ।

सोनाबाई का मूड आज सुबह से ही ऑफ था।

उसके चेहरे पर आज वो चमक नजर नहीं आ रही थी, जो कल थी।

सुबह से वो हंसी भी नहीं थी।

"क्या बात है ?" शंकरराव ने उसे छेड़ा- "रात से ही कैसे बिजली के बल्ब की तरह फ्यूज हुई पड़ी है ? कुछ हंस बोल, इसी बहाने टाइम भी कट जाएगा।"

"रात आपने ठीक नहीं किया राव साहब।" सोनाबाई फुसफुसाए स्वर में बोली।

"फिर वही राग ले बैठी।" शंकरराव झुंझला उठा- "तो मैंने कौन सा पहाड़ तोड़ दिया तेरे ऊपर। एक तो यह बात है कि पहले कभी तेरी पुड़िया बंधी नहीं थी, तू बिल्कुल फ्रेश और अनछिदी मछली थी, तब तो वाकई तेरे लिए यूं अफसोस मनाने की बात होती। लेकिन तू तो पहले ही छप्पन घाटों का पानी पिए हुए है मेरी सोना। एक बात बता, मैंने पहले तेरी पुड़िया बांधी थी या नहीं बांधी थी।"

"ब.... बांधी थी।"

"तो फिर रात ही कौन सी आफत आ गई, जो यूं मुंह लटकाए बैठी है। चल अब हंस बोल।"

"पहले की सोना में और आज की सोना में फर्क है राव साहब।" सोनाबाई की आवाज में गुस्सा साफ-साफ झलक रहा था।

"क्या फर्क है ?"

"पहले की सोना धंधा करती थी, वेश्या थी वो। तब की बात और थी लेकिन आज की सोना सन्यासिनी बन चुकी है। वह आत्मिक रुप से पवित्र हो चुकी है।"

दंड के नाम से उसे गॉडफादर की याद आ गई थी। फिर उसे यह भी याद आया कि आज 27 फरवरी है। वरना रात से अब तक वो यह बात बिल्कुल भूल चुका था।

शंकरराव धम्म् से एक कुर्सी पर जा गिरा। उसके दिल की घबराहट अब बढ़ती जा रही थी।

फिर वो अपने आपको कोसने लगा कि उसमें सोनाबाई की पुड़िया क्यों बांधी। वो मौत की सलीब पर लटका हुआ था और फिर भी अपनी हरकत से बाज नहीं आया था।

मछली को देखकर ही अंधा बन जाता था।

शंकरराव के शरीर में सर्दी की फुरेरी-सी दौड़ने लगी।

क्या सचमुच ईश्वर उसे दंड देगा?

क्या गॉडफादर वहां तक पहुंच पाएगा?

□□□

रात के आठ बज गए लेकिन तमाम भागा-दौड़ी के बावजूद शंकरराव का कुछ पता नहीं चला।

"सिंडिकेट के आदमी उनके तमाम ठिकानों को तलाश चुके हैं गॉडफादर।" जैकाल, बख्तावर सिंह के सामने खड़ा बोल रहा था- "लेकिन शंकरराव का कुछ पता नहीं चला। वह अपने किसी ठिकाने पर मौजूद नहीं है।"

"बंगले तथा बाकी तमाम ठिकानों के टेलीफोन टेप करने की व्यवस्था की?"

"वह व्यवस्था भी सुबह ही कर दी थी गॉडफादर, परंतु उसका भी कोई रिजल्ट नहीं निकला। न तो बाबू नाईक ने ही शंकरराव को फोन किया और न शंकरराव ने ही बंगले में बाबू नाईक को फोन किया।"

बख्तावर सिंह के चेहरे पर चिंता की लकीरें कुछ और गहरी हो उठीं ।

वह पाइप पीते हुए बेचैनी से ड्राइंग हॉल की छत को देखने लगा ।

"रात के आठ बज चुके हैं गॉडफादर !" जैकाल इस समय बहुत परेशान नजर आ रहा था- "27 फरवरी को खत्म होने में अब 4 घंटे बाकी हैं, सिर्फ 4 घंटे । और अभी तक हम यह भी पता लगाने में असफल रहे हैं कि आखिर शंकरराव गोवा में कहां छिपा है । मुझे तो नहीं लगता कि आज उसका कत्ल हो पाएगा गॉडफादर ।"

"उसे आज ही कत्ल होना है ।" बख्तावर सिंह गुर्रा उठा- "आज ही ।"

"लेकिन ये चमत्कार अब होगा किस तरह गॉडफादर ? हम चारों तरफ से निराश हो चुके हैं । अब तो एक ही रास्ता बचा है, बाबू नाईक से जबरदस्ती शंकरराव का पता उगलवाने का रास्ता ।"

"अभी इसके अलावा एक और रास्ता है जैकाल ।" बख्तावर सिंह ने लंबी सांस छोड़ी- "बंगले की टेलीफोन लाइन अभी टेप की जा रही है न ?"

"यस गॉडफादर टेलीफोन लाइनें अभी टेप की जा रही हैं ।"

"तो अब तुम मेरा कमाल देखो । बाबू नाईक अभी शंकरराव को फोन करेगा और शंकरराव जहां कहीं भी होगा, लाइन टेप होने के कारण हमें तुरंत उसका पता चल जाएगा ।"

"ल....लेकिन बाबू नाईक, शंकरराव को फोन करेगा ही क्यों गॉडफादर ?"

“वो करेगा ।” बख्तावर सिंह पूरे यकीन के साथ बोला- “उसे करना होगा शंकरराव को फोन । मैं चाल ही ऐसी चलूंगा ।”

“क....क्या चाल चलेंगे आप ?” जैकाल के चेहरे पर भी एकाएक निराशा की जगह कौतुहलता झलकने लगी थी ।

“फोन लेकर आओ तथा बंगले का नंबर डायल करो ।” बख्तावर सिंह ने पाइप में से धुआं छोड़ा- “फिर तुम्हें खुद-ब-खुद पता चल जाएगा कि मैं क्या चाल चलने जा रहा हूं ।”

जैकाल तुरंत दौड़कर वहीं नजदीक की टेबल पर रखा कॉर्डलेस फोन उठा लाया । फिर वो जल्दी-जल्दी बंगले का नंबर मिलाने लगा ।

बंगले का नंबर मिलाने के बाद उसने कार्डलेस फोन आदरपूर्वक बख्तावर सिंह के हाथ में पकड़ा दिया ।

□□□

बाबू नाईक सुबह से ही सस्पेंस में डूबा हुआ था ।

हर पल उसे लग रहा था कि न जाने क्या होगा ? न जाने क्या होगा ?

फिर जब से वो सिंडिकेट का आदमी अखबार वाला बनकर बंगले में आया था, तब से उसकी चिंता कुछ और बढ़ गई थी ।

जैसे-जैसे घड़ी की सुई टिक-टिक करती हुई आगे बढ़ रही थी, ठीक उसी अनुपात में उसका सस्पेंस भी बढ़ता जा रहा था ।

तभी एकाएक टेलीफोन की घंटी जोर-जोर से बजने लगी ।

बाबू नाईक का दिल एकदम से धक्क् से रह गया। उसे यूं लगा, जैसे उसे शंकरराव की मौत की खबर मिलने वाली हो।

कुछ देर वो स्तब्ध भाव से टेलीफोन को घूरता रहा, फिर उसने आगे बढ़कर रिसीवर उठाया और बेहद धीमें स्वर में बोला- "हैलो !"

"हैलो !" दूसरी तरफ से एक बड़ी रौबदार आवाज़ आई, "बाबू नाईक ?"

बाबू नाईक को जैसे साँप सूंघ गया।

"मैं तुम्हारी हैलो से ही तुम्हें पहचान गया हूँ बाबू नाईक ! मैं बख्तावर सिंह बोल रहा हूं।"

धड़ाम्। जैसे उसके पैरों के नीचे रखा बम का गोला फट गया हो, कुछ इसी तरह उछल पड़ा बाबू नाईक।

उसके हाथ से रिसीवर भी छूटकर नीचे गिरते-गिरते बचा।

"क्या बात है नाईक ?" बख्तावर सिंह की हंसी उभरी- "चौंक क्यों पड़े ?"

"न.....नहीं।" बाबू नाईक ने जल्दी से खुद को संभाला- "म....मैं कहां चौंका ?"

"अच्छी बात है अगर नहीं चौंके क्योंकि अब मैं तुम्हें एक ऐसी खबर सुनाने जा रहा हूं, जिसे सुनकर तुम जरूर चौंकोगे। तुम्हारे पैरों के नीचे से जमीन फट जाएगी और तुम्हारे ऊपर आसमान टूटकर गिरेगा।"

"ए....ऐसी क्या खबर सुनाने जा रहे हो ?" बाबू नाईक का गला सूखने लगा।

उस खबर ने सचमुच बाबू नाईक के छक्के छुड़ाकर रख दिए थे ।

उसे उस खबर पर यकीन नहीं आ रहा था लेकिन वो जानता था कि बख्तावर सिंह जैसे बड़े दादा के लिए कुछ भी असंभव नहीं है ।

इसी डर से वह एक बार फिर टेलीफोन की तरफ झपटा तथा उसने जल्दी-जल्दी से सोनाबाई के घर का नंबर डायल किया ।

दूसरी तरफ से रिसीवर सोनाबाई ने ही उठाया ।

“कौन है ?” उसकी कोयल की तरह कूंकती आवाज रिसीवर पर उभरी ।

“त....तुम सोनाबाई ही बोल रही हो न ?” बाबू नाईक ने हड़बड़ाए स्वर में पूछा ।

“हां ।” सोनाबाई भी चौंकी- “लेकिन आप कौन हैं ?”

“मैं बाबू नाईक बोल रहा हूं । अपना शंकरराव कैसा है ? उसे क्या हो गया ?” नाईक ने पूरी बात एक ही सांस में कही ।

“उन्हें तो कुछ नहीं हुआ ।” सोनाबाई अचंभित स्वर में ही बोली- “वह तो बाहर वाले कमरे में आराम से बैठे टीवी देख रहे हैं । लो.. ।” तभी सोनाबाई की आवाज कुछ परिवर्तित हुई- “वह अंदर कमरे में आ गए । आप खुद उनसे बातें कर लो ।”

फिर रिसीवर पर कुछ खड़खड़ाहट की सी आवाज उभरी ।

“कौन, नाईक ?” तुरंत शंकराव थोड़े व्यग्र स्वर में बोला- “क्या बात है ? कैसे फोन किया ?”

"तू....तू ठीक है शंकरराव ?" शंकरराव की आवाज सुनकर बाबू नाईक को तेज झटका लगा था।

"हां मैं तो एकदम ठीक हूं, लेकिन बात क्या है ? तू इतना हड़बड़ाया हुआ क्यों है नाईक ?"

"ल...लगता है कोई गड़बड़ है। क...कोई आफत आने वाली है शंकरराव।"

"यह क्या बकवास कर रहा है तू ?" शंकरराव चिल्ला पड़ा।

"म....मैं सच कह रहा हूं शंकरराव।"

"लेकिन बात क्या है ? एकदम साफ-साफ क्यों नहीं बताता तू ? किसलिए फोन किया ?"

"बिल्कुल अभी-अभी मेरे पास बख्तावर सिंह का फोन आया था।" बाबू नाईक अपने शुष्क होठों पर जबान फेरता हुआ बोला।

"ब....बख्तावर सिंह ?" शंकरराव दहल उठा।

"हां, बख्तावर सिंह। जानता है कि उस हरामजादे ने मेरे से क्या कहा ? उसने कहा कि उसने तेरा क़त्ल कर दिया है। उस खबर को सुनते ही मेरे होश उड़ गए। इसीलिए मैंने तेरे को तुरंत फोन मिलाया।"

"ल....लेकिन मैं तो एकदम ठीक हूं।" बख्तावर सिंह का नाम सुनते ही शंकरराव के शरीर में झुरझुरी दौड़ने लगी थी- "म...मुझे तो कुछ नहीं हुआ।"

"इसीलिए तो कह रहा हूं शंकरराव ! जरूर कुछ गड़बड़ है, जरूर कोई आफत आने वाली है। वरना बख्तावर सिंह जैसा दादा ऐसा झूठ कभी नहीं बोलता। उसने झूठ बोला, इसी से साबित होता है कि उसने कोई चाल चली है।"

"क....कैसी चाल ?"

“यह मैं नहीं जानता । अब जल्दी से फोन रख शंकरराव ।”

“ल....लेकिन.... ।”

“फोन रख ।” बाबू नाईक दहाड़ उठा ।

शंकरराव ने हड़बड़ाते हुए एकदम फोन रख दिया ।

□□□

जैकाल ने भी फोन रखा और फिर विजयी मुस्कान बिखेरता हुआ बख्तावर सिंह की तरफ पलटा ।

“आपकी चाल कामयाब हो गई गॉडफादर ।” जैकाल के चेहरे पर इस समय खुशी के अनार-पटाखे फूट रहे थे- “टेलीफोन एक्सचेंज से अभी-अभी मालूम हुआ है कि बाबू नाईक ने शंकरराव से बात की है । उस फोन नंबर के विषय में भी सब कुछ मालूम हो गया है, जिस नंबर पर बाबू नाईक ने बात की ।”

“कहां का नंबर है वो ?” बख्तावर सिंह ने गहन उत्सुकता से पूछा ।

“वह कोल्वा बीच का नंबर है गॉडफादर !”

“कोल्वा बीच पर कहां का ?”

“वहां सोनाबाई नाम की कोई सन्यासिनी रहती है । उसी के घर का फोन नंबर है । अभी शंकरराव उसी के घर से बात कर रहा था । यहां तक की फोन उठाया भी खुद सोनाबाई ने ही था ।”

“ओह !” बख्तावर सिंह के चेहरे पर एकाएक कठोरता पैदा होने लगी- “इसका मतलब शंकरराव एक सन्यासिनी के घर में छिपा है ।”

“यस गॉडफादर”

"ठीक है ।" बख्तावर सिंह का चेहरा अब भभकने लगा था- "मैं कोल्वा बीच जा रहा हूं जैकाल ।"

"मैं भी आपके साथ चलूं गॉडफादर ?"

"नहीं कोई मेरे साथ नहीं जाएगा ।" बख्तावर सिंह ने सख्ती से इनकार किया- "ऐसे किसी भी दरिंदे के लिए मैं अकेला ही काफी हूं ।"

सफेद सूट में सजा-धजा बख्तावर सिंह ड्राइंग हॉल से बाहर निकला और ब्लैक हाउस में नीचे खड़ी अपनी बुलेटप्रूफ कार की तरफ तेजी से बढ़ गया ।

उस समय रात के पौने नौ बज रहे थे ।

27 फरवरी की समय सीमा खत्म होने में अभी-भी सवा तीन घंटे का वक्त बाकी था ।

□□□

"जरूर कोई गड़बड़ है, जरूर कोई आफत आने वाली है ।"

शंकरराव फोन तो रख चुका था, लेकिन बाबू नाईक के वो शब्द उसके दिलो-दिमाग में अभी भी तेज नगाड़े की तरह आवाजें कर रहे थे ।

वह भिनभिनाता हुआ इस तरह कमरे में इधर-उधर राउंड लगा रहा था, जैसे मधुमक्खियों के किसी छत्ते ने उस पर हमला कर दिया हो ।

शंकरराव बार-बार अपने चेहरे पर चुहचुहा आते पसीने को रुमाल से साफ करता । लेकिन वह तो मौत का पसीना था, शंकरराव उसे जितना साफ करता, वह उतना ही और निकल आता ।

उसका चेहरा रुई की तरह सफेद फक्क पड़ा हुआ था। होंठ कागज़ की तरह फड़फड़ा रहे थे। आंखों में हवाइयां उड़ रही थीं।

"लेकिन इतनी रात को आप कहां जाएंगे ?" सोनाबाई उसके पीछे-पीछे लपकी- "फिर आपके पास कोई वाहन भी नहीं है।"

"मैं कहीं भी चला जाऊंगा सोना। ल...लेकिन यहां नहीं रुकूंगा। अगर यहां रुका तो देख लेना, मेरी पुड़िया बंध जाएगी।" शंकरराव की आवाज अब रुआंसी हो उठी थी।

सोनाबाई ने पहले कभी उसे इतना डरा हुआ नहीं देखा था।

तभी दरवाजे की तरफ बढ़ते-बढ़ते एकाएक शंकरराव ठिठका। फिर उसने पलटकर एकदम से सोनाबाई के पैर पकड़ लिए।

"य...यह क्या कर रहे हो।" सोनाबाई हड़बड़ाती हुई तेजी से पीछे हटी।

"मेरे को माफ कर दे सोना।" शंकरराव की आंखों में आंसू छलछला आये- "मेरे को माफ कर दे।"

"ल...लेकिन।"

"मैंने वाकई रात तेरे साथ बुरा सलूक किया सोना। मैं सचमुच पापी हूं, घोर पापी हूं। मुझे जो तू दंड दे सकती है दे। जितना मार सकती है, मार। ले चप्पल ले।" शंकरराव वहीं पड़ी एक चप्पल उठाकर सोनाबाई की तरफ बढ़ाई- "चप्पल से मार मुझे।"

"य...यह आप क्या कर रहे हैं राव साहब।" सोनाबाई की आंखों में बेपनाह हैरानी उभर आई।

"मैं कोई साहब-वाहब नहीं हूं सोना। मैं गली के कुत्ते से भी बदतर हूं। मेरी हस्ती एक सुअर जैसी है। म..मैंने आज तक किसी मछली को नहीं छोड़ा। जिस पर एक बार गलत नजर पड़ गई, बस उसी की पुड़िया बांध दी। यही जिंदगी रही है मेरी, मछली पकड़ना और पुड़िया बांधना। देख, अब एक मछली की वजह से ही मेरी भी पुड़िया बंधेगी। बहुत छेद किये मैंने, अब मेरे में भी छेद होगा।"

सोनाबाई फटे-फटे नेत्रों से शंकरराव को देखे जा रही थी।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"मैं चलता हूं।" शंकरराव चप्पल फेंककर खड़ा हो गया तथा पुनः दरवाजे की तरफ बढ़ा।

□□□

शंकरराव जैसे ही दरवाजा खोलकर बाहर निकला, ठीक उसी पल बख्तावर सिंह की बुलेटप्रूफ कार एकदम तेज झटके से उसके सामने आकर रुकी तथा कार के पहिए बुरी तरह चीखे।

उस कार को देखते ही शंकरराव के रहे-सहे होश भी उड़ गए थे।

भला कौन गोवा शहर में उस कार को नहीं पहचानता था।

होना तो यह चाहिए था कि बख्तावर सिंह की बुलेटप्रूफ कार देखते ही शंकरराव एकदम से वापस सोनाबाई के घर में घुस जाता और तुरंत अंदर से दरवाजा बंद कर लेता। लेकिन नहीं, बख्तावर सिंह का खौफ उसके दिलो-दिमाग पर इस कदर हावी था कि उसकी बुद्धि पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी।

वो वापस सोनाबाई के घर में घुसने के बजाय कोल्वा बीच सर्कल से बीच की तरफ जाने वाली एक सीधी सड़क पर पागलों की तरह से भागा ।

उसी पल सफेद सूट में सजा-धजा बख्तावर सिंह हाथ में रिवाल्वर लेकर कार से बाहर निकला ।

सोनाबाई अपने दरवाजे के दोनों पल्ले पकड़े उस खौफनाक दृश्य को देख रही थी ।

बख्तावर सिंह ने एक नजर सोनाबाई पर डाली और फिर शंकरराव को देखा । शंकरराव भागता जा रहा था और बार-बार पलटकर देखता जा रहा था ।

रिवाल्वर उसके पास भी थी, परंतु उस क्षण वह उसे पूरी तरह भूल चुका था ।

तभी बख्तावर सिंह ने शंकरराव की तरफ रिवाल्वर तान दी और धांय से गोली चलाई ।

"न...नहीं ।" भैंसे की तरह डकरा उठा शंकरराव ।

गोली सीधी उसकी जांघ में जाकर लगी थी ।

परंतु वह फिर भी लंगड़ाकर भागता रहा ।

बख्तावर सिंह ने एक और गोली चलाई ।

वह उसकी दूसरी जांघ में जाकर लगी ।

अब शंकरराव के लिए भागना नामुमकिन था । वह कोल्वा बीच की सड़क पर ही भरभराकर गिर पड़ा तथा जोर-जोर से चिल्लाने लगा ।

रात्रि का समय होने के बावजूद भी उस दृश्य को देखने के लिए कोल्वा बीच पर ढेरों लोग इकट्ठे हो गए थे ।

आस-पास के मकानों के सभी खिड़की-दरवाजे खुल चुके थे और स्त्री-पुरुष तथा बच्चे उनमें से झांक रहे थे ।

कुछ आदमियों ने तो अपने बच्चों को पीछे कर दिया था ताकि वे उस हिंसात्मक दृश्य को न देख सकें ।

बख्तावर सिंह चहलकदमी करता हुआ शंकरराव के पास पहुंचा ।

"न...नहीं गॉडफादर ।" सड़क पर पड़ा शंकरराव हाथ जोड़कर बुरी तरह गिड़गिड़ाने लगा- "न...नहीं । म..मुझे मत मारो ।"

बख्तावर सिंह ने रिवाल्वर पुन: उसकी तरफ तान दी तथा उसका सेफ्टी कैच पीछे खींचा ।

"न..नहीं ।" शंकरराव दहशत से हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा- "न...नहीं ।"

"जानता है आज क्या तारीख है शंकरराव ?" बख्तावर सिंह की भारी आवाज आसपास के इलाके में गूंजी ।

"ह...हां जानता हूं ।" शंकरराव जल्दी-जल्दी अपनी गर्दन हिलाने लगा- "ज...जानता हूं गॉडफादर । अ..आज 26 फरवरी, नहीं-नहीं 27 फरवरी है ।"

"27 फरवरी ।" बख्तावर सिंह ने दांत पीसे- "और 27 फरवरी तेरी मौत का दिन है शंकरराव । मौत का दिन, जिसे मैंने तेरी सजा के तौर पर फाइनल किया था । आज तुझे अंजली के साथ बलात्कार करने तथा उसे मौत के घाट उतारने के अपराध में मौत की सजा मिलनी है ।"

"न..नहीं गॉडफादर ।" शंकरराव गिड़गिड़ाने लगा- "न...नहीं ।"

"देश की अदालत जब किसी को फांसी की सजा सुनाती है शंकरराव और जब उस अपराधी को फांसी के फंदे पर लटकाने के लिए ले जाया जाता है तो क्या उस अपराधी के गिड़गिड़ाने पर जल्लाद उसे बख्श देता है ?"

सोनाबाई की इतनी भी हिम्मत नहीं हुई थी कि वह उसके पीछे-पीछे जाए। फोन के पास पहुंचकर बख्तावर सिंह ने कोई नंबर डायल किया।

तुरंत घंटी जाने लगी।

"हैलो।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से फोन उठाया गया।

"कौन ? बाबू नाईक ?"

"यस।"

"मैं बख्तावर सिंह बोल रहा हूं।"

एकदम से ऐसा लगा, जैसे कोई लड़खड़ाकर गिरते-गिरते बचा हो।

जैसे बख्तावर सिंह के नाम से 'भूकंप' आ गया हो।

"क्या हुआ नाईक ?"

"क...कुछ नहीं।" बाबू नाईक ने जल्दी से खुद को संभाला- "क...कुछ नहीं।"

"मैंने समझा कि शायद 'कुछ' हो गया हो।"

"मुझे आपसे यह उम्मीद नहीं थी गॉडफादर !" बाबू नाईक शीघ्रतापूर्वक बोला- "आपने मुझसे झूठ बोला। आपने झूठ बोला कि शंकरराव मारा गया।"

बेहद खतरनाक ढंग से हंसा बख्तावर सिंह- "मैंने झूठ नहीं एकदम सच बोला था नाईक।"

"क....क्या मतलब ?"

"वो तेरे यार के मरने की भविष्यवाणी थी और इतनी मामूली बात तो तू भी जानता होगा कि भविष्यवाणी हमेशा पहले की जाती है और देख नाईक।" बख्तावर सिंह सांप की तरह फुंफकार उठा- "देख मेरी भविष्यवाणी सच साबित हो चुकी है।"

□□□

शंकरराव की हत्या करने के बाद बख्तावर सिंह ने वहीं खड़े एक आदमी से चादर मंगाई और फिर उसे शंकरराव की लाश के ऊपर डाल दिया।

"इस लाश को कोई हाथ नहीं लगाएगा।" उसके बाद बख्तावर सिंह उपस्थित जनसमूह को संबोधित करके बोला- "अब इसकी लाश का अंतिम संस्कार करने की जिम्मेदारी बाबू नाईक या उसके आदमियों की है।"

जनसमूह शांत खड़ा रहा।

रात के वक़्त कोल्वा बीच पर दूर कोई ट्रम्पेट बजा रहा था। ट्रम्पेट की उस धुन ने वातावरण को और गंभीर बना दिया था।

बख्तावर सिंह के किसी आदेश की अवहेलना करने की हिम्मत वहां किसी में नहीं थी।

फिर बख्तावर सिंह, सोनाबाई की तरफ बढ़ा।

बख्तावर सिंह को अपनी तरफ आते देख सोनाबाई की आंखों में मौत नाचने लगी।

"तेरा ही नाम सोनाबाई है ?" बख्तावर सिंह उसके नजदीक पहुंचकर बोला।

"ह...हां।" सोनाबाई ने जल्दी से अपना जूड़ा ठीक किया और स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "हां। म...मैं ही सोना बाई हूं।"

"फोन किधर रखा है तेरे घर में ?"

सोना बाई ने वहीं खड़े-खड़े दूसरे कमरे की तरफ इशारा कर दिया।

बख्तावर सिंह उसी कमरे की तरफ़ बढ़ गया।

"क...कहना क्या चाहते हो ?" बाबू नाईक की आवाज पत्ते की तरह कांप उठी ।

"तेरा यार शंकरराव मारा जा चुका है । अपने वायदे के अनुसार मैंने उसकी गोली मारकर हत्या कर दी है ।"

"न...नहीं ।" बाबू नाईक चिल्ला पड़ा- "तुम एक बार फिर झूठ बोल रहे हो गॉडफादर । जरूर कोई चाल खेल रहे हो तुम ।"

"जो चाल मुझे खेलनी थी बेवकूफ, वह तो मैं खेल चुका हूं ।"

बख्तावर सिंह ने एक-एक शब्द चबाकर कहा ।

"लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि शंकरराव मारा गया हो ।" बाबू नाईक की आवाज जबरदस्त आतंक से भरी हुई थी- "मुझे यकीन नहीं आता । वह जरूर जिंदा है ।"

"मैं तुझे शंकरराव की मौत का सुबूत दे सकता हूं नाईक ।"

"स...सुबूत ।" बाबू नाईक की आवाज पुनः आहिस्ता से कांपी- "क..कैसा सुबूत ?"

"पूछेगा नहीं कि मैं इस वक्त कहां से बोल रहा हूं ।"

"क...कहां से बोल रहे हो ?"

"मैं सोनाबाई के घर से बोल रहा हूं ।"

"स...सोनाबाई ।"

तुरंत बाबू नाईक का दिल धक्क से रह गया ।

और उसे सुबूत मिल गया । वो पलक झपकते ही समझ गया कि सचमुच अब शंकरराव जिंदा नहीं हो सकता । किसी हालत में जिंदा नहीं हो सकता ।

"इस समय तेरे दूसरे यार की लाश कोल्वा बीच की सड़क पर पड़ी है नाईक ।" बख्तावर सिंह ने गुर्राकर कहा-

जैकाल उस समय किसी बड़ी उलझन में फंसा हुआ लग रहा था। उसके माथे पर चिंता की गहरी लकीरें थीं। वह चुपचाप बख्तावर सिंह के नजदीक आकर खड़ा हो गया।

"मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं गॉडफादर।"

"कहो" बख्तावर सिंह मटके का मंथली हिसाब चेक करता हुआ बोला।

"एक बहुत बड़ी उलझन पैदा हो गई है।" जैकाल ने चिंतित अवस्था में अपना माथा रगड़ा- "रोशनलाल कहता है कि उसके इंतकाम की आग ठंडी हो चुकी है तथा अब वो और ज्यादा खून-खराबा नहीं चाहता।"

बख्तावर सिंह के दिमाग में धमाका हो गया।

मटके का हिसाब चेक करना वो एकदम से भूल गया। उसने बुरी तरह से चौंककर अपनी गर्दन ऊपर उठाई।

"क.....क्या कहा तुमने ?" बख्तावर सिंह के मुंह से हैरानीयुक्त स्वर निकला।

"गॉडफादर !" जैकाल पुनः सनसनीखेज स्वर में ही बोला- "रोशनलाल कहता है कि उसके इंतकाम की आग ठंडी हो चुकी है। वह नहीं चाहता कि अब उसके या उसकी बेटी के कारण और ज्यादा खून खराबा हो।"

"यह सब रोशनलाल ने कहा ?" बख्तावर सिंह झटके से सोफा चेयर छोड़कर खड़ा हो गया।

"यस गॉडफादर, यह सब रोशनलाल ने ही कहा। रात जब आप शंकरराव की हत्या करके ब्लैक हाउस आए थे, तभी उसने मेरे से यह बात कही। उसने कहा कि अब मेरे दिल की आग ठंडी हो चुकी है। मुझे सुकून मिल चुका है। दो-दो दादा मारे गए।"

"तुमने रात ही मेरे से यह बात क्यों नहीं कही ?" बख्तावर सिंह कर्कश स्वर में बोला ।

"रात आप थके हुए थे गॉडफादर । इसलिए मैंने आपके दिमाग को और ज्यादा परेशान करना मुनासिब न समझा ।"

"रोशनलाल को फौरन बुलाओ ।" बख्तावर सिंह गुर्राया- "मैं उससे तुरंत बात करना चाहता हूं ।"

"ओके गॉडफादर !" जैकाल ने सम्मान से सिर झुकाया- "मैं रोशनलाल को अभी आपके सामने पेश करता हूं ।"

□□□

शीघ्र ही जैकाल, रोशनलाल को लेकर बख्तावर सिंह के सामने उपस्थित हो गया ।

उन चंद लम्हों में ही बख्तावर सिंह का दिमाग एकाएक बहुत बुरी तरह उलझ गया था और वह विचित्र-सी दुविधा में नजर आने लगा था ।

उसने दिमाग को थोड़ा सुकून पहुंचाने के लिए पाइप भी सुलगा लिया था ।

"यह सब मैं क्या सुन रहा हूं रोशनलाल ?" रोशनलाल को देखते ही बख्तावर सिंह उसकी तरफ बढ़ा- "क्या अब तुम कोई खून-खराबा नहीं चाहते ?"

"यह सच है गॉडफादर ।" रोशनलाल ने बेहिचक स्वीकार किया- "मेरा इंतकाम पूरा हो गया है ।"

"लगता है कि तुम पागल हो गए हो ।" बख्तावर सिंह फुंफकारा ।

"ऐसा कुछ नहीं है गॉडफादर ।" रोशनलाल सम्मानजनक मुद्रा में ही बोला- "मैंने यह फैसला खूब सोच-विचारकर किया है । मैं आपका बहुत-बहुत आभारी

हूं कि आपने मुझे इंसाफ दिलाने के लिए अपनी रातों की नींद हराम की । आपने मुझे उस वक्त में सहारा दिया, जब उन तीनों दादाओं की तलवार मेरे सिर पर लटक रही थी । न सिर्फ आपने मुझे सहारा दिया, बल्कि वह इंसाफ भी दिया, जो मुझे अदालत से न मिल सका । आप मेरी जिंदगी में मसीहा की तरह आए और मेरे जख्मों पर पट्टी रखी ।"

"मैं यह सब सुनना नहीं चाहता ।" बख्तावर सिंह बोला- "मैं तुम्हें सिर्फ यह बात बताना चाहता हूं कि अभी तुम्हारा इंतकाम पूरा नहीं हुआ । अभी उसकी आखिरी जीती-जागती दास्तान जिंदा है, जो जुल्म तुम्हारी बेटी के साथ हुआ था ।"

"मैं जानता हूं गॉडफादर ।" रोशनलाल बोला- "मैं सब कुछ जानता हूं ।"

"सब कुछ जानते हुए भी ये कह रहे हो कि तुम्हारा इंतकाम पूरा हो गया, तुम्हारे दिल की आग ठंडी हो गई ?"

"यस गॉडफादर । मैं यही कह रहा हूं ।" रोशनलाल ने शुष्क स्वर में कहा- "क्योंकि मैं और ज्यादा खून-खराबा नहीं चाहता और ज्यादा कत्लो-गारत नहीं चाहता ।"

"लेकिन यह खून शैतानों का बह रहा है रोशनलाल ।" बख्तावर सिंह हिंसक लहजे में बोला- "यह खून बह रहा है अत्याचारियों का, पापियों का । ये वही लोग हैं, जिन्होंने तुम्हारी मासूम अंजली की आबरू के चीथड़े-चीथड़े कर डाले । वही लोग हैं, जिन्होंने तुम्हारी अंजली को तुम्हारे सामने मार डाला, उसे भरी अदालत में बुरी तरह बेइज्जत किया और आज... ।" बख्तावर सिंह ने आक्रोश में दांत

किटकिटाये- “आज उन्हीं दुराचारियों का खून बहते देखकर तुम्हारे इंतकाम की आग पर हमदर्दी का पानी पड़ रहा है ?”

“ऐसी कोई बात नहीं गॉडफादर ।” रोशनलाल की आवाज भी भभक उठी- “मुझे उन अत्याचारियों से कभी हमदर्दी नहीं हो सकती । आज भी उन लोगों के प्रति मेरे दिल में वही जहर, वही आक्रोश भरा है, जो पहले था ।”

“तो फिर तुमने क्यों कहा कि तुम्हारा इंतकाम पूरा हो गया ?”

“क्योंकि यह सच है गॉडफादर ।”

बख्तावर सिंह के नेत्र हैरानी से सिकुड़ गए- “तुम शायद बार-बार ये भूल रहे हो कि अभी बाबू नाईक जिंदा है ।”

“मैं जानता हूं कि बाबू नाईक जिंदा है । लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि बाबू नाईक के दोनों दोस्त मर चुके हैं । वे दोस्त, जो उसकी बांह थे, उसकी ताकत थे, हिम्मत थे । अपने दोनों दोस्तों के बिना बाबू नाईक की हस्ती बिलकुल वैसी हो गई है, जैसे किसी कबूतर के पंख काट दिए गए हों । बाबू नाईक का वजूद खत्म हो चुका है गॉडफादर और यही उसकी सजा है कि वह जिंदा रहे तथा अपने दोस्तों की याद में तड़पता रहे । बाबू नाईक को मिलने वाली यह सजा, उस सजा से भी भयंकर होगी, जो आप उसे देने की सोच रहे हैं । इसीलिए मैंने रात शंकरराव की मौत की खबर सुनने के बाद जैकाल साहब से कहा था कि मेरा इंतकाम पूरा हो गया । मेरे दिल की आग ठंडी हो गई । क्योंकि मैं जानता हूं कि बाबू नाईक किसी लड़की के साथ वैसा सलूक नहीं कर सकेगा, जैसा उसने मेरी अंजली के साथ किया ।”

"क्या कहना चाहते हो तुम ?" बख्तावर सिंह ने पाइप में से धुआं छोड़ा- "जो कहना है, साफ-साफ कहो ।"

"रोशनलाल ने बाबू नाईक की हत्या न करने के पीछे जो तर्क दिए हैं, वे तर्क मुझे मजबूत नहीं लग रहे हैं गॉडफादर । ऐसा लगता है, जैसे वो तर्क मनगढ़ंत हैं, जबरदस्ती उनको गढ़ा गया है ।"

बख्तावर सिंह की बेचैनी कुछ और ज्यादा गहरी हो गई ।

वह पाइप में से धुआं छोड़ता हुआ इधर-उधर टहलने लगा ।

"आपका इस विषय में क्या विचार है गॉडफादर ?" जैकाल ने उत्सुकता से पूछा ।

"यू आर राइट ।" बख्तावर सिंह बेचैनीपूर्वक ही बोला- "मुझे खुद अब रोशनलाल बदला-बदला नजर आने लगा है । अब वो वह रोशनलाल नहीं रहा, जिसके दिल में प्रतिशोध की ज्वाला थी । जो किसी भी हालत में अपनी बेटी के बलात्कारियों तथा हत्यारों को फना होते देखना चाहता था । जो उन तीनों हत्यारों के खिलाफ बोलता था तो उसके मुंह से शब्दों की जगह अंगारे झड़ते थे । अब एकाएक उसकी इंतकाम की आग कैसे ठंडी हो चुकी है जैकाल ? इसके पीछे जरूर कोई वजह है ।"

"लेकिन वो वजह क्या हो सकती है गॉडफादर ?"

"वजह जो भी है, बहुत पेचीदा है और बुरी तरह हैरान कर देने वाली है । मुझे लग रहा है जैकाल कोई घटना घटने वाली है । कोई ऐसी घटना, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी । अगर हम किसी बड़ी अनहोनी से बचना चाहते हैं तो हमें फौरन उस वजह का पता लगाना

होगा, जिसके कारण रोशनलाल ने एकाएक ऐसा नाटकीय फैसला लिया है।"

"लेकिन हमें वह वजह कैसे मालूम होगी गॉडफादर।"

"मुझे सोचने दो। तुम भी जाओ और मुझे बिल्कुल अकेला छोड़ दो।"

"लेकिन कुछ लोग आपसे मिलने के लिए आए हुए हैं गॉडफादर। आपकी उनसे अपॉइंटमेंट है।"

"सारी अपॉइंटमेंट कुछ घंटे के लिए कैंसिल कर दो। मैं पहले इस घटना का कोई हल निकालना चाहता हूं।"

"ओके गॉडफादर।"

"और हां, ठीक एक घंटे बाद रोशनलाल को लेकर मेरे पास आना।"

जैकाल पुनः स्वीकृति में गर्दन हिलाकर वहां से चला गया।

जबकि बख्तावर सिंह पाइप में कश लगाता हुआ कुर्सी पर बैठ गया था और उसने आंखें बंद कर ली थीं।

एक नई उलझन पैदा हो गई थी, जिसके विषय में उसने सोचा भी न था।

□□□

ठीक एक घंटे बाद जैकाल, रोशनलाल को लेकर पुनः वहां उपस्थित हो गया।

इस एक घंटे के अंदर बख्तावर सिंह में भारी परिवर्तन आया था। अब वो पहले की तरह बेचैन नजर नहीं आ रहा था और न ही पाइप पी रहा था।

उसके चेहरे पर उलझन के भी कोई भाव नहीं थे।

"आपने कोई फैसला किया गॉडफादर ?" रोशनलाल ने आते ही पूछा ।

"हां ।" बख्तावर सिंह ने यकीन भरे स्वर में कहा- "मैंने फैसला कर लिया है रोशनलाल ।"

"क्या फैसला किया है ?" रोशनलाल के चेहरे पर जबरदस्त सस्पेंस के भाव थे ।

"अगर तुम चाहते हो कि प्रतिशोध की इस ज्वाला को यहीं रोक दिया जाए तो ठीक है ।" बख्तावर सिंह बोला- "मैं इसे यहीं रोक देता हूं । बंद कर देता हूं प्रतिशोध के इस महाअग्निकुंड को । अब इस अग्निकुंड में कोई भस्म नहीं होगा । वैसे भी यह जंग पूरी तरह तुम्हारी थी रोशनलाल, इसीलिए इस जंग को बंद करने का पूरा अधिकार भी तुम्हारे पास है । मैं तो महज एक जज की तरह, एक जल्लाद की तरह नाइंसाफी के खिलाफ लड़ रहा था ।"

"मैं आपका बहुत आभारी हूं गॉडफादर ।" रोशनलाल के चेहरे पर चमक उभरी- "आप सचमुच महान हैं ।"

"लेकिन मैं एक हिदायत तुम्हें देना चाहता हूं रोशनलाल ।"

"कैसी हिदायत गॉडफादर ?"

"ब्लैक हाउस से बाहर की धरती अब तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं रही है । अब तुम्हारी जान को कदम-कदम पर खतरा होगा । बाबू नाईक के दो जिगरी दोस्तों की जानें तुम्हारी वजह से जा चुकी हैं । बाबू नाईक की हालत इस समय जख्मी नाग की तरह होगी । वह मौका मिलते ही तुम पर हमला करेगा और तुम्हारी जान लेना चाहेगा ।"

"अ...आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"तुम्हें बॉडीगार्डों की जरूरत है रोशनलाल । इसलिए सिंडिकेट के कुछ हथियारबंद आदमी अब हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे, ताकि वह तुम्हारी जान की हिफाजत कर सकें ।"

"नहीं ।" रोशनलाल बोला- "मुझे बॉडीगार्डों की कोई जरूरत नहीं ।"

"लेकिन अगर तुम्हारी जान की हिफाजत का कोई इंतजाम न हुआ तो बाबू नाईक तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेगा रोशनलाल ।"

"वो अब मेरे खिलाफ कोई कदम नहीं उठाएगा गॉडफादर । उसे आपसे बेहतर मैं जानता हूं । आखिर उसके यहां कई साल नौकरी की है मैंने । वह अगर भेड़िए की तरह खतरनाक है गॉडफादर तो गीदड़ की तरह डरपोक भी है । वह यह बात भलीभांति जानता होगा कि अगर उसने मेरा कोई अहित किया तो सोया हुआ शेर यानी आप फिर से जाग उठेंगे और उसके बाद उसकी खैर नहीं ।"

बख्तावर सिंह ने बेचैनी का प्रदर्शन करते हुए मुट्ठियां भींची- "बाबू नाईक कुछ भी कर सकता है । वो एक पागल इंसान है ।"

"मैंने कहा न गॉडफादर ।" रोशनलाल मुस्कुराया- "उसे आपसे बेहतर मैं जानता हूं ।"

"यानी तुम्हें सिंडिकेट की सिक्योरिटी कबूल नहीं ?"

"हां, क्योंकि अब मैं आप पर और ज्यादा बोझ नहीं डालना चाहता गॉडफादर । वैसे भी इस जिंदगी से सांसों का मोह तो उस दिन छूट गया था, जिस दिन मैंने अंजली की चिता को अग्नि दी । अब तो सिर्फ मिट्टी का एक शरीर बचा है गॉडफादर, जिसकी कोई इच्छा नहीं, कोई सपना

"शक तो मुझे रोशनलाल पर अब तुमसे भी ज्यादा हो रहा है जैकाल ।" बख्तावर सिंह फुंफकार उठा- "वह हरामजादा सचमुच कोई भारी गड़बड़ कर रहा है ।"

"सब कुछ जानते-बुझते आपने यह कदम उठाया गॉडफादर ?" जैकाल हैरत से बोला ।

"हां । मैंने तब भी यह कदम उठाया ।" बख्तावर सिंह के चेहरे पर सख्ती उभरी- "क्योंकि रोशनलाल की हकीकत पता लगाने का अब यही एक रास्ता था कि उसे खुला छोड़ दिया जाए ।"

"लेकिन हमें यह कैसे पता चलेगा कि वह कहां जाकर क्या बातें करता है गॉडफादर ?"

"हमें पता चलेगा, जरूर पता चलेगा । जानते हो, मैंने रोशनलाल को जो ऑटोमेटिक रिवाल्वर दी है, उसमें नकली गोलियां हैं और उसके दस्ते में एक शक्तिशाली माइक्रोफोन फिट हैं । रोशनलाल अब उस रिवाल्वर को लेकर जहां कहीं भी जाएगा, जिससे भी बातें करेगा, उस शक्तिशाली माइक्रोफोन की बदौलत वो एक-एक रिपोर्ट हमें मिलती रहेगी ।"

"वेरी गुड ।" बख्तावर सिंह की बात सुनकर जैकाल भी चहक उठा- "सचमुच आपने रोशनलाल के चारों तरफ जबरदस्त जाल फैला दिया है गॉडफादर । अब इस रहस्य के ऊपर से जरूर पर्दा उठेगा कि एकाएक एक खूनी जंग में यह नाटकीय मोड़ क्यों आया ?"

"फिलहाल तुम एक काम और करो जैकाल ।"

"कहिए गॉडफादर ।" जैकाल अब उत्साहित हो उठा था ।

"डोनापाला बीच वाले बंगले के बाहर से तथा उन तीनों दादाओं के प्रत्येक ठिकाने के बाहर से सिंडिकेट के आदमियों का जाल उठा लो । हमें अब अंडरवर्ल्ड में बिल्कुल इस तरह शो करना होगा जैसे यह खूनी जंग सचमुच खत्म हो चुकी है और हमने बाबू नाईक की जान बख्श दी है ।"

"ठीक है गॉडफादर ! मैं सिंडिकेट के आदमियों का पूरा जाल उठाता हूं । अभी इस संबंध में आदेश जारी करता हूं ।"

"अगर आप कहें तो जो लोग आपसे मिलने के लिए बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं, उन्हें अब अंदर भेज दूं ?"

"हां, भेज दो ।"

□□□

रोशनलाल के उस नाटकीय फैसले के बाद बेहद खतरनाक चालें चली जानी शुरू हो गई थीं ।

ऐसी चालें, जिनका अंत कुछ भी हो सकता था ।

बाबू नाईक अभी भी डोनापाला बीच वाले बंगले में ही था ।

वह रात में शंकरराव का दाह संस्कार करने के लिए भी कोल्वा बीच नहीं गया था ।

अलबत्ता उसने फोन पर अपने कुछ खास आदमियों को रिपोर्ट दे दी थी और उन्हीं से कह दिया था कि वह कोल्वा बीच से शंकरराव की लाश उठाकर दाह-संस्कार कर दे ।

सुबह छः बजे उनमें से एक आदमी का बाबू नाईक के पास फोन आया और बताया कि शंकरराव का दाह संस्कार कर दिया गया है ।

इस तरह बाबू नाईक अपने जिगरी दोस्त की चिता को भी अग्नि देने से वंचित रहा ।

फिर लगभग ग्यारह बजे बाबू नाईक ने सिंडीकेट के सभी आदमियों को एक-एक करके बंगले के सामने से जाते देखा ।

सबसे पहले बुलेट मोटरसाइकिल पर सवार दोनों आदमी वहां से गायब हुए थे । फिर भिखारी गायब हुआ । फिर वो इलैक्ट्रिशियन गायब हुआ, जो बिजली के खंभे पर चढ़-चढ़कर तंग आ चुका था ।

□□□

बाबू नाईक उस समय बंगले की खिड़की में खड़ा था और सिंडिकेट की जाल को उठते हुए बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा था ।

तभी जोर-जोर से टेलीफोन की घंटी बजने लगी ।

बाबू नाईक तुरंत फोन की तरफ यूं झपटा, जैसे उसे पहले ही मालूम था कि फोन आने वाला है ।

"हैलो !" बाबू नाईक उत्तेजित स्वर में बोला ।

"मैं आपका सेवक बोल रहा हूं नाईक साहब !"

"हां, हां बोलो ।" बाबू नाईक की आवाज और ज्यादा जोश से भर गई- "क्या रिपोर्ट है ?"

"रिपोर्ट बहुत बढ़िया है नाईक साहब । हमारी योजना कामयाब हो चुकी है । अब आपके लिए कोई खतरा नहीं है । सारे संकट खत्म हो चुके हैं ।"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो तुम ।" बाबू नाईक की आवाज खुशी से कांप उठी- "सचमुच अब सारे संकट खत्म हो चुके हैं । बंगले के सामने जो सिंडिकेट का जाल फैला हुआ था, वह जाल भी उठ गया है । मैंने अभी सिंडिकेट के

सारे आदमियों को यहां से जाते हुए देखा है। तुम आज की रात मेरे पंजिम वाले फ्लैट में आकर मिलो।"

"ठीक है, मैं पहुंचता हूं वहां नाईक साहब।"

बाबू नाईक ने फोन काट दिया।

फिर उसने आनन-फानन अपने कुछ ठिकानों पर फोन मिलाया।

हर जगह से एक ही रिपोर्ट मिली, सिंडिकेट के आदमी या तो वहां से जा चुके थे या फिर जा रहे थे।

बाबू नाईक का चेहरा अब फ्लड लाइट की तरह जगमगाने लगा।

□□□

रात के ग्यारह बजने वाले थे।

बाबू नाईक इस समय पंजिम वाले अपने फ्लैट पर था और बड़ी बेसब्री से किसी के आने का इंतजार कर रहा था।

डोनापाला बीच वाले बंगले से वहां आए हुए उसे लगभग पांच घंटे बीत चुके थे।

बंगले से आते समय उसने इस बात का भी विशेष ख्याल रखा था कि कहीं सिंडिकेट के आदमियों द्वारा उसका पीछा तो नहीं किया जा रहा। लेकिन यह देखकर उसे संतुष्टि हुई कि कोई उसके पीछे नहीं था।

यानी खतरा पूरी तरह से टल चुका था।

रात के लगभग साढ़े बारह बजे फ्लैट का दरवाजा खटखटाया गया।

बाबू नाईक ने फौरन दरवाजा खोला।

सामने रोशनलाल खड़ा था।

"बड़ी देर कर दी आने में ?" बाबू नाईक उसे देखते ही गरम हुआ- "मैं कई घंटे से इंतजार कर रहा हूं।"

"पूरी सावधानी बरतकर आया हूं।" रोशनलाल बोला- "दिल में डर था कि कहीं सिंडिकेट के आदमी पीछे न लगे हों। ऐसे में जरा-सी भी असावधानी हो जाए, तो पूरी प्लानिंग फेल होने में एक सेकेंड भी नहीं लगेगा।"

"कोई पीछे तो नहीं था ?" बाबू नाईक की आवाज कांपी।

"नहीं। फूल चौकसी से आया हूं।"

"चल आ, अब जल्दी से अंदर आ।"

रोशनलाल ने फ्लैट में कदम रखा।

बाबू नाईक ने फौरन दरवाजा बंद कर लिया था।

□□□

दोनों खुश थे।

अपनी योजना की कामयाबी पर बेपनाह खुश थे।

खुशी के इस मौके पर बाबू नाईक ने शराब की बोतल खोल ली और फिर दोनों ने जमकर शराब पीनी शुरू की।

जमकर पी तो, जमकर नशा भी चढ़ा।

फिर नशे में दोनों ने अपनी राम कहानी अपने आप ही बकनी शुरू कर दी।

"वाह क्या योजना थी।" सबसे ज्यादा नशा रोशनलाल को चढ़ा- "क्या धांसू योजना थी। बैंजो बेवकूफ बना, शंकरराव बेवकूफ बना और वो सबसे बड़ी तोप, सारे दादाओं का बाप बख्तावर सिंह भी बेवकूफ बना।"

कहते हुए रोशनलाल जोर से खिलखिलाकर हंसा।

बाबू नाईक ने पीते हुए खीं-खीं करके दांत फाड़े।

"बैंजो और शंकरराव को तो मालूम ही नहीं था ।" रोशनलाल ने हंसते हुए ही कहा- "कि शुरू से ही हम दोनों मिलकर उन्हें अपने जाल में कस रहे थे । बेचारा बैंजो, वह क्या जानता होगा कि मैंने उस दिन फाइनेंस कंपनी वाले ऑफिस में अंजली को जानबूझकर बुलाया था । बैंजो को भी आप उस दिन जानबूझकर अकेला छोड़ गए थे, ताकि वो मेरी सौतेली बेटी अंजली को देखे और उसकी पुड़िया बांधने की योजना बनाने लगे । हमारा पूरा प्लान पहले से ही बना हुआ था । योजना के एक-एक पहलू के विषय में हमने पहले ही खूब विचार-विमर्श कर लिया था । हम दोनों ही जानते थे कि अंजली को देखते ही बैंजो की लार घुटनों-घुटनों तक टपकने लगेगी और वही हुआ । जैसा हमारा प्लान था, बिल्कुल वैसा ही हुआ ।"

"तू ठीक बोला ।" बाबू नाईक पुनः खीं-खीं करके हंसा- "साली दोनों की पुड़िया बंध गई । बैंजो की भी और शंकरराव की भी ।"

"और साथ में अंजली की भी तो पुड़िया बंधी नाईक साहब । उसकी तो पूरी ही पुड़िया बंध गई ।"

"हां ।" बाबू नाईक हंसा- "उसकी भी बंध गई पुड़िया । वैसे कुछ भी कह रोशनलाल, तेरी बेटी थी बड़ी बम-पटाखा ।"

"वह मेरी बेटी क्यों होती नाईक साहब ?" रोशनलाल ने कड़वा सा मुंह बनाया- "पता नहीं कमला उसे कहां से उठाकर ले आई थी । पता नहीं किसकी बेटी थी साली । खुद तो कमला शादी के छःमहीने बाद चल बसी और उस जिंदा सांप को मेरे गले में डाल गई । उसकी वजह से मैंने बहुत दुःख उठाए नाईक साहब । उसी की वजह

से मेरी कहीं दूसरी जगह शादी नहीं हो सकी । भला ऐसे आदमी को कौन अपनी लड़की देता, जिसके पास पहले ही पालने के लिए एक लड़की थी । लेकिन हमारी योजना की बदौलत हम दोनों का ही कल्याण हो गया नाईक साहब । बैंजो और शंकरराव के मरने का आपको यह फायदा हुआ कि आप सारे कारोबार के अकेले मालिक बन गए, जबकि अंजली के मरने का मुझे ये फायदा हुआ कि मैं उसकी शादी में लाखों रुपए का खर्चा करने से बच गया और अब आप इस वफादारी के ऐवज में मुझे शराब के दो बड़े ठीये का मालिक बनाएंगे, वो अलग ।"

"शराब के ठीये तो यह समझ रोशनलाल ।" बाबू नाईक नशे में झूमता हुआ बोला- "कि मैंने तेरे नाम कर दिए, अभी से कर दिए । अब तू सही मायने में लखपति बन गया ।"

"साले बैंजो और शंकरराव को तो यह बात मरने के बाद भी नहीं सूझी होगी ।" बाबू नाईक पुनः हंसता हुआ बोला- "कि उस दिन मैंने तेरे घर में 'मछली' की पुड़िया बांधने के बाद उसे जानबूझकर भगाया था । जानबूझकर पीछे से उसके हाथ की रस्सी थोड़ी ढीली कर दी थी, ताकि मछली अपने हाथ खोल सके और वहां से भाग सके । ताकि पुलिस केस बने तथा खूब हंगामा हो । आखिर हमारी यही तो योजना थी रोशनलाल लेकिन उन दोनों चंगू-मंगुओं को क्या मालूम होगा कि मैं उन्हें किस तरह से उल्लू बना रहा था । उन्हें तो यह भी मालूम नहीं था कि जब तू कोर्ट से इंसाफ न मिलने पर अंजली के साथ जा रहा था, तब मैंने जानबूझकर मारुति वैन में सवार गुंडे के हाथ से गन ली थी और अंजली को शूट किया था तथा तुझे जानते-

"यह बात तो है नाईक साहब ।" रोशनलाल ने अपने लिए भी शराब का पैग बनाया और नाईक के लिए भी बनाया- "लेकिन इस पूरी योजना में एक बात मेरी समझ में नहीं आई ।"

"पूछ, वो भी पूछ ।"

"अगर आपको शंकरराव तथा बैंजो की हत्या करके उनके सारे कारोबार पर कब्जा करना था, तो यह काम तो आप भी सहूलियत से कर सकते थे । फिर आपने इतना बड़ा हंगामा क्यों किया ?"

"तू भी रहा मुंशी का मुंशी ही रोशनलाल ।" बाबू नाईक बोला- "इसमें कोई शक नहीं कि मैं न सिर्फ यह काम अकेला कर सकता था बल्कि सहूलियत से भी कर सकता था क्योंकि दोनों को ही मेरे ऊपर यकीन था, बल्कि अंधा यकीन था । मैं उन्हें जहर दे सकता था, कहीं भी ले जाकर गोली मार सकता था, कुछ भी कर सकता था । लेकिन मेरे हत्या करने के बाद पुलिस की छानबीन होती । छानबीन में पुलिस को मेरे खिलाफ सुबूत मिल सकते थे । मैं पकड़ा जा सकता था इसलिए मैं इन तमाम खतरनाक झंझटों से बचा और इसीलिए मैंने उन दोनों की हत्या के लिए गोवा की सबसे बड़ी तोप को 'मोहरा' बनाया । बख्तावर सिंह को 'मोहरा' बनाया । कोई झंझट ही नहीं । न पुलिस केस, न कोई छानबीन, न कोर्ट-कचहरी । मैं योजना के मुताबिक दोनों का पत्ता साफ करके सारे कारोबार का मालिक बन बैठा और किसी को मेरे ऊपर शक भी नहीं कि इस पूरे ड्रामे के पीछे मेरी शैतानी चाल थी । यहां तक कि मैंने उन दोनों को सिंडिकेट के खिलाफ हथियार उठाने से भी इसलिए रोका, ताकि कारोबार का नुकसान होने के साथ-

साथ अंडरवर्ल्ड में कोई बड़ा हंगामा न होने पाए और वे दोनों चुपचाप मर जाएं।"

रोशनलाल ने फिर शराब के दो-तीन घूंट भरे तथा हंसा।

"नाईक साहब।" रोशनलाल नशे में झूमता हुआ ही बोला- "बख्तावर सिंह ने जीवन में कभी कल्पना नहीं की होगी कि कोई उसको इस तरह भी मोहरा बना सकता है।"

"मैंने तो बख्तावर सिंह को ऐसा मोहरा बनाया है कि तू सोच भी नहीं सकता रोशनलाल।"

"कोई और बात भी है ?" रोशनलाल फुसफुसाया।

"हां, एक बात और है। और उस बात को सुनकर तू यूं उछलेगा, जैसे तेरी पैंट के नीचे बम फट गया हो।"

"ऐसी क्या बात है नाईक साहब ?" रोशनलाल तुरंत बाबू नाईक के नजदीक खिसका।

"यह देख।" बाबू नाईक ने एक लिफाफे में से कुछ तस्वीरें निकालकर उसे दिखाई- "यह है वो बम।"

उन तस्वीरों को देखते ही रोशनलाल सचमुच उछल पड़ा।

तस्वीरों में बख्तावर सिंह को बैंजो तथा शंकरराव की हत्या करते साफ-साफ दर्शाया गया था।

"मैंने अपने एक विश्वसनीय आदमी को खासतौर से इस काम पर तैनात किया था रोशनलाल।" बाबू नाईक बच्चों की तरह खुश होता हुआ बोला- "कि जब बख्तावर सिंह बैंजो तथा शंकरराव की पुड़िया बांधे, तो वह फौरन उस सीन को कैमरे में कैद कर ले। और देख उसने क्या बढ़िया तस्वीरें खींची हैं।"

"लेकिन इन तस्वीरों से फायदा क्या है ?" रोशनलाल की आंखों में सवालिया चिह्न उभरे।

"बहुत बड़ा फायदा है रोशनलाल । इन तस्वीरों की बदौलत ही मैं अंडरवर्ल्ड में अब और ज्यादा टॉप का दादा बन सकता हूं । जब तक यह तस्वीरें मेरी जेब में हैं, तब तक यूं समझ कि बख्तावर सिंह भी मेरी जेब में है । मैं इन तस्वीरों को गोवा सरकार को भेजने की धमकी देकर बख्तावर सिंह से अब जो काम चाहूंगा, करा लूंगा ।"

रोशनलाल की आंखें पुन: जगमगाने लगीं ।

उसने खुशी में दो घूँट और लगाए ।

"अलबत्ता इस पूरी योजना में एक काम जरूर इत्तेफाक से हुआ तथा हमारे हक में हुआ ।" बाबू नाईक शराब चुसकता हुआ बोला ।

"कौन सा काम ?"

"बख्तावर सिंह ने पम्फलेट मेरी हत्या की घोषणा तीसरे नंबर पर जो की । वरना मुझे डर था कि कहीं बख्तावर सिंह ने मुझे पहले या दूसरे नंबर पर ही लगा दिया, तब क्या होगा ।"

"तब क्या होता नाईक साहब ।" रोशनलाल बोला- "उस इमरजेंसी टाइम के लिए मैं था न ब्लैक हाउस में । अगर बख्तावर सिंह खुद ऐसा न करता तो फिर मैं कोई चाल चलता । लेकिन आपका तीसरे नंबर पर होना तय था ।"

बाबू नाईक शराब चुसकता रहा ।

रोशनलाल कुछ ज्यादा ही पी चुका था ।

"अब मैं अपनी शादी करूंगा नाईक साहब ।" रोशनलाल नशे में मनोहारी सपना देखता हुआ बोला- "साली अंजली रास्ते का पत्थर बनी हुई थी । तब लोग कहते कि बेटी की जगह अपनी शादी कर ली, परंतु अब

बख्तावर सिंह कुर्सी पर बैठा था और जैकाल उसके नजदीक ही हाथ बांधे खड़ा था। दोनों के चेहरों पर हैरानी तांडव नृत्य कर रही थी।

"स...सचमुच आपके साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है गॉडफादर।" जैकाल के मुंह से कितनी ही देर बाद अचरज से भरे शब्द निकले- "ए..ऐसा धोखा, जो पहले कभी नहीं हुआ। पहले कभी किसी की ऐसी हिम्मत नहीं हुई कि वह इस तरह की चाल चले।"

"सच कहा तुमने जैकाल।" बख्तावर सिंह जहरीले नाग की तरह फुंफकारता हुआ कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया। उसका चेहरा इस समय लाल सुर्ख हो रहा था- "रोशनलाल आस्तीन का सांप निकला। हमने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि वह इतना बड़ा चालबाज होगा।"

"अब आप क्या करेंगे गॉडफादर?"

"अब हम वो करेंगे।" बख्तावर सिंह अत्यंत हिंसक लहजे में बोला- "जिसकी उन दोनों ने कल्पना नहीं की होगी।"

"क..क्या मतलब?"

"अभी तक यह जंग सिर्फ रोशनलाल की जंग थी जैकाल।" बख्तावर सिंह गुर्राता हुआ बोला- "परंतु अब एकाएक आखिरी क्षणों में सारे पत्ते बदल चुके हैं। अब यह जंग सिर्फ और सिर्फ हमारी जंग है। अंजली का जो प्रतिशोध अधूरा रह गया था, वह अब पूरा होगा। अभी तक हम समझ रहे थे कि सिर्फ तीन व्यक्ति अंजली के अपराधी हैं, बल्कि रोशनलाल तो उन तीनों से भी ज्यादा बड़ा गुनाहगार है। हम जा रहे हैं जैकाल।"

"ठीक है नाईक साहब ।" रोशनलाल लड़खड़ाता हुआ उठा- "अब मैं चलता हूं ।"

"अरे !" बाबू नाईक चौंका- "इतनी रात को कहां जाएगा तू ?"

"मैंने घर जाना है । इस वक्त मेरा ज्यादा देर घर से गायब रहना ठीक नहीं है नाईक साहब । सिंडिकेट के आदमी कभी भी मेरी चेकिंग के वास्ते आ सकते हैं ।"

"लेकिन तूने बहुत पी हुई है रोशनलाल"

रोशनलाल हंसा- "अब इतनी भी नहीं पी हुई नाईक साहब, जो घर तक न जा सकूं ।"

"मुझे तो डर है कि तू घर तक भी पहुंच पाएगा या नहीं ।"

"घर तक तो मैं पहुंच जाऊंगा नाईक साहब, गारंटी है ।" रोशनलाल झूमता हुआ ही बोला- "घर पहुंचने के बाद क्या होगा, यह मुझे भी नहीं मालूम ।"

"पता नहीं क्या अनाप-शनाप बक रहा है तू ?"

"नमस्ते नाईक साहब ।" रोशनलाल ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं ।

"नमस्ते ।"

रोशनलाल झूमता हुआ ही सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया ।

□□□

बख्तावर सिंह और जैकाल ने उस वार्तालाप का एक-एक अंश सुना था ।

जैसा कि स्वाभाविक था, उस वार्तालाप को सुनकर दोनों सन्न रह गए ।

एकदम स्तब्ध और बेहद भौचक्के ।

"ल...लेकिन कहां गॉडफादर ।" जैकाल की आवाज कांपी ।

"हमें आज रात एक और खून की होली खेलनी है । किसी का खून हमें आवाज दे रहा है ।"

"प...परंतु रात बहुत हो चुकी है गॉडफादर ।"

"इंतकाम कभी दिन-रात की परवाह नहीं किया करता जैकाल । हमें जाना ही होगा । वरना यह रात हम पर बहुत भारी गुजरेगी ।"

फिर जैकाल कुछ नहीं बोला । खामोश रहना ही उसने मुनासिब समझा ।

बख्तावर सिंह के चेहरे पर वो आग का बवंडर देख रहा था । वह जानता था कि अब यह आग किसी के खून से ही बुझेगी ।

गुस्से की प्रचंड आंधी बना बख्तावर सिंह रात को ही बाहर निकल पड़ा ।

□□□

रोशनलाल थोड़ी देर पहले ही अपने घर आया था और अब सोने की कोशिश कर रहा था ।

तभी एकाएक इतनी जोर-जोर से उसके घर का दरवाजा भड़भड़ाया जाने लगा, जैसे कोई उसे तोड़ ही डालेगा ।

रोशनलाल ने नशे में झूमते हुए जल्दी से उठकर दरवाज़ा खोला, लेकिन दरवाजा खोलते ही धड़ाक से उसकी छाती पर एक ऐसी जोरदार लात पड़ी कि वह चीखता हुआ कई फुट ऊपर हवा में उछला तथा फिर फर्श पर जा गिरा ।

अगले ही पल उसका सारा नशा उड़न-छू हो गया ।

सामने बख्तावर सिंह खड़ा था ।

"ग....गॉडफादर आप ?" रोशनलाल जल्दी से संभलकर उठा- "अ...आपका इतनी रात को कैसे आना हुआ ?"

धड़ाक से बख्तावर सिंह का प्रचंड घूंसा रोशनलाल के मुंह पर पड़ा ।

रोशनलाल खड़े-खड़े पेंडुलम की तरह झूल गया और एक बार फिर गिरते-गिरते बचा ।

"य...यह आप क्या कर रहे हैं गॉडफादर ?"

"वही कर रहा हूं हरामजादे !" बख्तावर सिंह दहाड़ा- "जिसके कि तू काबिल है ।"

"लेकिन मेरा कसूर क्या है गॉडफादर ?"

बख्तावर सिंह ने धड़ाधड़ उसके मुंह पर तीन-चार घूंसें और जड़ दिए ।

उसका होंठ फट गया और नाक से खून बहने लगा ।

"तेरी अब सारी हकीकत मुझे पता चल चुकी है रोशनलाल ।" बख्तावर सिंह उसका गिरेबान पकड़कर झंझोड़ता हुआ चिल्लाया- "मैं जान चुका हूं कि तेरी हैसियत एक नाली के कीड़े जैसी है । तू एक बाप के नाम पर कलंक है, क्योंकि शायद ही कोई बाप अपनी बेटी के साथ वैसा सलूक करता हो, जैसा तूने अंजली के साथ किया । हरामजादे ! तू उसका सौतेला बाप था तो क्या हुआ ? लेकिन तूने माली बनकर उसे किसी पौधे की तरह सींचा तो था । तब भी तेरे दिल में उसके प्रति दया नहीं जागी । तब भी तूने उस फूल सी बच्ची को तीन-तीन वहशी दरिंदों के हवाले कर दिया ।"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं गॉडफादर ?"

रोशनलाल का नशा अब पूरी तरह हिरन हो चुका था ।

"अच्छा हुआ, जो तेरा राज खुल गया ज़लील इंसान ।" बख्तावर सिंह चिंघाड़ा- "वरना उस मासूम अंजली का प्रतिशोध अधूरा रह जाता । वह बेचारी समझ रही थी कि उसकी जिंदगी बर्बाद करने वाले सिर्फ तीन दरिंदे थे, लेकिन नहीं, दरिन्दे तो चार थे बल्कि चौथा दरिंदा सबसे भयानक था ।"

"म...मुझे माफ कर दो गॉडफादर ।" रोशनलाल रोने लगा ।

तभी धांय से एक गोली और चली तथा वह रोशनलाल की दूसरी पिंडली में जा धंसी ।

रोशनलाल पुनः हिस्टीरियाई ढंग से गला फाड़कर चिल्लाया ।

"मैंने एक बात गलत कही थी रोशनलाल ।" बख्तावर सिंह का चेहरा ज्वालामुखी का दहाना बना हुआ था- "और बिल्कुल गलत कही थी । यह जंग तेरी नहीं बल्कि अंजली की जंग थी । एक ऐसी अनाथ लड़की की जंग थी, जिसका इस दुनिया में कोई अपना नहीं था । सिर्फ आसमान उसके साथ था । सृष्टि का रचयिता उसके साथ था ।"

"अ...आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं गॉडफादर ।" रोशनलाल हिड़कियों से रोता हुआ ही बोला- "बिल्कुल ठीक कह रहे हैं ।" उसकी दोनों पिंडलियों से खून थुल-थुल करके बह रहा था ।

"और तू क्या समझता है ?" बख्तावर सिंह गुर्राता हुआ ही बोला- "कि तू खुद चलकर मेरे पास आया था ताकि तू मुझे मोहरा बना सके ? नहीं रोशनलाल, नहीं । इतनी हिम्मत नहीं थी बाबू नाईक में या तुझमें । तुझे तो सृष्टि के

रचयिता ने खुद 'मोहरा' बनाकर मेरे पास भेजा था ताकि मैं तेरे जैसे शैतान को दंड दे सकूं। ताकि मैं अंजली का प्रतिशोध ले सकूं।"

"स...सचमुच।" रोशनलाल की आवाज सूखे पत्ते की तरह कांपी- "मैं खुद सृष्टि के रचयिता के हाथों 'मोहरा' बना, जो आपके पास पहुंचा।"

"अब मेरे पहले और आखिरी सवाल का जवाब दे।" बख्तावर सिंह उसके सामने रिवाल्वर हिलाता हुआ गुर्राया- "बाबू नाईक के पंजिम वाले फ्लैट का फोन नंबर बता।"

"म...मैं फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा गॉडफादर।" रोशनलाल हिड़कियों से रोता हुआ ही बोला।

"मैं तुझसे जो सवाल पूछ रहा हूं, उसका जवाब दे हरामजादे। जल्दी बता।"

रोशनलाल ने थर-थर कांपते हुए फोन नंबर बताया।

तुरंत ही बख्तावर सिंह ने रिवाल्वर का ट्रिगर दबा दिया था। धांय से गोली चली और रोशनलाल की खोपड़ी में जा घुसी।

फ़ौरन रोशनलाल की खोपड़ी किसी तरबूज की तरह फट गई थी।

उसे ढंग से चिल्लाने का मौका भी न मिला।

मरने के बाद सबसे ज्यादा वीभत्स हालत रोशनलाल के चेहरे की हुई।

□□□

रोशनलाल की हत्या करने के बाद बख्तावर सिंह ने वहीं से पंजिम वाले फ्लैट का फोन नंबर डायल किया।

शीघ्र ही दूसरी तरफ घंटी बजने लगी।

फिर किसी ने रिसीवर उठाया और आहिस्ता से बोला- “हैलो !”

“कौन ? बाबू नाईक ?”

“त...तुम कौन ?”

“मैं बख्तावर बोल रहा हूं ।”

तुरंत दूसरी तरफ झटका-सा लगा । ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे हड़बड़ाहट में क्रेडिट लुढ़क गया था ।

“क्या बात है नाईक, मेरा नाम सुनकर तुम्हें करंट बहुत लगता है ?”

“ए...ऐसी कोई बात नहीं गॉडफादर । मैं नींद में था, इसलिए पैर फिसल गया था ।”

“तुम्हारे पैर अक्सर फिसलते रहे हैं ।”

“म...मैं कुछ समझा नहीं गॉडफादर ।”

“तुम्हारी बकवास सुनने के लिए मैंने इस वक्त तुम्हें फोन नहीं किया है नाईक । बल्कि तुम्हें कुछ बताने के लिए फोन किया है ।” बख्तावर सिंह गुर्राता हुआ ही बोला- “मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि अब से थोड़ी देर पहले रोशनलाल और तुम्हारे बीच शराब पीते हुए जो बातें हुई थीं, वह सब मैं सुन चुका हूं ।”

“न...नहीं ।” बाबू नाईक के मुंह से तेज सिसकारी फूट गई- “ऐसा नहीं हो सकता ।”

“ऐसा हो चुका है नाईक । हो चुका है ऐसा । मैं तुम्हारी और रोशनलाल की एक-एक चाल से वाकिफ हो चुका हूं । मैं जान चुका हूं कि तुमने किस तरह अपने दोनों दोस्तों को बेवकूफ बनाया, किस तरह मुझे बेवकूफ बनाया ।”

दूसरी तरफ एकदम से श्मशान जैसा सन्नाटा व्याप्त हो गया ।

"यह नहीं पूछोगे कि मुझे तुम्हारा फोन नंबर किसने दिया ?"

"क...किसने दिया ?" बाबू नाईक ने फंसे-फंसे स्वर में पूछा ।

"तुम्हारे जोड़ीदार ने दिया, रोशनलाल ने ।"

"य...यानि ।"

"ठीक समझे तुम नाईक, बिल्कुल ठीक समझे ।" बख्तावर सिंह क्रूरतापूर्वक हंसा- "रोशनलाल अब इस दुनिया में नहीं है । मैंने रोशनलाल की हत्या कर दी है और उसकी लाश इस समय मेरे कदमों के पास पड़ी है ।"

"न...नहीं बाबू नाईक की आवाज बुरी तरह थर्रा उठी ।

"तुम्हारी योजना तो सचमुच शानदार थी नाईक ।" बख्तावर सिंह बोला- "एक-एक चाल इतने बेहतरीन ढंग से चली तुमने कि कोई भी बेवकूफ बन जाता । बस तुमसे पूरी योजना में एक ही गलती हुई और बड़ी भारी गलती हुई ।"

"क...क्या ?"

"तुमने जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास का शिकार होकर बख्तावर सिंह को जो 'मोहरा' बनाया । नाईक ! तुम भूल गए कि बख्तावर सिंह जैसे बादशाह कभी 'मोहरा' नहीं बना करते । तुमने गीदड़ होकर शेर को अपने जाल में फंसाने की कोशिश की और यह उसी का नतीजा है कि आज तुम्हारी शतरंज की पूरी बिसात एकाएक पलट चुकी है । तुम खुद जिंदगी के हाथों अब एक 'मोहरा' बन गए हो ।"

"अ...आप कहना क्या चाहते हैं गॉडफादर ?"

“मैं तुझे यह बताना चाहता हूं कि कल 29 फरवरी है नाईक । 29 फरवरी, यानी तेरी मौत का दिन । अपनी हिफाजत के जो इंतजाम तू कर सकता है, कर ले । लेकिन कल मौत तेरे तक पहुंचेगी जरूर ।”

बाबू नाईक को वह चेतावनी देने के बाद बख्तावर सिंह ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

फिर वो रोशनलाल के घर से बाहर निकला ।

आस्तीन के सांप को मारने से उसके दिल को थोड़ा सुकून पहुंचा था ।

□□□

फोन ने बाबू नाईक के छक्के छुड़ा दिए ।

वरना वो अभी तक यही सोचकर खुश हो रहा था कि उसकी योजना कामयाब हो गई, वो बच गया । लेकिन अब उसे एकाएक अपने सारे पत्ते पलटे हुए नजर आने लगे थे ।

उसे लग रहा था कि सचमुच बख्तावर सिंह को ‘मोहरा’ बनाकर उससे बड़ी भारी भूल हो गई ।

बाबू नाईक कुछ देर सोचता रहा कि उसे क्या करना चाहिए ।

घबराहट के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था । उसने बेहद खास दादाओं को फोन घुमाने शुरु किए ।

एक घंटे के अंतराल में ही नौ-दस बड़े खतरनाक दादा बाबू नाईक के उस पंजिम वाले फ्लैट पर इकट्ठे हो गए ।

“अभी-अभी मेरे पास बख्तावर सिंह का फोन आया था ।” बाबू नाईक दादाओं की उस टीम को संबोधित करता

हुआ बोला- “उसने मुझे चेतावनी दी है कि वो मुझे भी कत्ल मार डालेगा । किसी भी हालत में नहीं छोड़ेगा मुझे ।”

सारे दादा सांस रोके बाबू नाईक की बातें सुन रहे थे ।

“लेकिन मैंने बख्तावर सिंह को बता देना है कि मैं बैंजो नहीं हूं ।” बाबू नाईक कहर भरे अंदाज में बोला- “मैं शंकरराव भी नहीं हूं । मेरा नाम बाबू नाईक है, बाबू नाईक । वो अगर अंडरवर्ल्ड का बेताज बादशाह है तो मैं भी अंडरवर्ल्ड की एक बड़ी हस्ती हूं । मुझे मारना, कोई चींटी को मार देने जैसा नहीं ।”

“आप कहना क्या चाहते हैं नाईक साहब ?” एक दादा ने हिम्मत करके पूछा ।

“मैं चाहता हूं कि आज रात ही तुम लोग अपने-अपने ग्रुप बनाकर सिंडिकेट के ठिकानों पर हमले करना शुरू कर दो । अब अंडरवर्ल्ड में गैंगवार छिड़ेगी । अब सिंडिकेट का और हमारा आमने-सामने का मुकाबला होगा ।”

बाबू नाईक का फैसला सुनकर तमाम दादाओं के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं ।

“ल...लेकिन सिंडिकेट से मुकाबला करना कोई आसान बात नहीं नाईक साहब । सिंडिकेट पांच हजार आदमियों की एक बड़ी.. ।”

“मैं जानता हूं ।” बाबू नाईक गुर्राया- “लेकिन अब अंडरवर्ल्ड में गैंगवार होकर रहेगी । अब खून बहेगा, खून ।”

“परंतु इस गैंगवार से हमें ही नुकसान होगा नाईक साहब ।”

“मुझे किसी भी नुकसान की परवाह नहीं है ।” बाबू नाईक चिंघाड़ा- “अब मैं तुम लोगों से जो कह रहा हूं, वह करो । मैं अब सिंडिकेट को तबाह देखना चाहता हूं । मैं

बख्तावर सिंह को बता देना चाहता हूं कि हथियार उठाना सिर्फ वही नहीं जानता, बल्कि अंडरवर्ल्ड में और लोग भी हथियार उठाना जानते हैं ।”

फिर बाबू नाईक के सामने कोई दादा नहीं बोला ।

वह सब चुपचाप उस पंजिम वाले फ्लैट से बाहर निकल गए ।

बाबू नाईक का हुक्म बजाना ही उनकी ड्यूटी थी ।

दादाओं के जाते ही बाबू नाईक ने भी वो फ्लैट छोड़ दिया था ।

वो वहां से सीधा ‘फाइनेंस कंपनी’ वाले ऑफिस पहुंचा था और ऑफिस के नीचे बने एक बहुत बड़े तहखाने में जाकर बंद हो गया था ।

फिर अंडरवर्ल्ड में वो तूफान आया, जो सचमुच कयामत का ही दूसरा रूप था ।

29 फरवरी को सुबह पांच बजे से ही बाबू नाईक के गुंडों ने सिंडिकेट के विभिन्न ठिकानों पर हमले करने शुरु कर दिए थे ।

सबसे पहले मटके के तो ठियों पर हमले हुए ।

दोनों ही तरफ से अनेक लोग मारे गए ।

उन हमलों का एक और भयानक दुष्परिणाम निकला ।

सिंडिकेट के आदमियों ने भी बाबू नाईक के ठिकानों पर हमले शुरु कर दिए ।

गैंगवार छिड़ गई । एक अत्यंत खौफनाक गैंगवार ।

□□□

जैकाल ने तुरंत उस गैंगवार की खबर बख्तावर सिंह को दी ।

बख्तावर सिंह के सिर पर उस समय हेडफोन लगा हुआ था ।

"मौत के खौफ से बाबू नाईक पागल हो गया है गॉडफादर ।" जैकाल आते ही आंदोलित लहजे में बोला- "अंडरवर्ल्ड में खून बह रहा है । बेशुमार निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं । ठीये तबाह हो रहे हैं । हमें किसी भी तरह बाबू नाईक को फौरन खून की यह होली खेलने से रोकना होगा ।"

"बाबू नाईक कहां छिपा है ? मैं पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं जैकाल ।" बख्तावर सिंह भी बेचैन मुद्रा में बोला- "अंडरवर्ल्ड में क्या कुछ हो रहा है, सब मालूम है मुझे ।"

"क्या माइक्रोफोन की मदद से भी कुछ मालूम नहीं हो रहा ।" जैकाल थोड़े आश्चर्य से बोला- "आखिर रोशनलाल ने आपकी रिवाल्वर पंजिम वाले फ्लैट पर ही बाबू नाईक को दे दी थी और हमें यह बात उन माइक्रोफोन की बदौलत ही तुरंत पता चल गई थी ।"

"इसमें कोई शक नहीं कि वह रिवाल्वर इस समय बाबू नाईक के ही पास है और उसी की मदद से मैं इस हेडफोन पर बाबू नाईक के प्रत्येक आदेश को सुन रहा हूं ।" बख्तावर सिंह ने अपने सिर पर लगे हेडफोन की तरफ इशारा किया- "लेकिन अभी तक बाबू नाईक ने आपसी बातचीत में उस जगह का जिक्र नहीं किया है, जहां वह छिपा है । इसीलिए मुझे उस जगह के विषय में कुछ पता नहीं चल सका । परंतु मुझे उम्मीद है कि बहुत जल्द किसी-न-किसी सिलसिले में उसके मुंह से यह बात

निकलेगी जरूर और मैं उसी एक क्षण की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

"लेकिन अगर ज्यादा देर हो गई गॉडफादर ?" जैकाल ने आशंका व्यक्त की।

"मुझे उम्मीद है कि ज्यादा देर नहीं होगी।" बाबू मामले के मुंह से आज ही यह बात निकलेगी जरूर कि वो कहां छिपा है। यह काम तुम मुझ पर छोड़ दो और जाकर सिंडिकेट के आदमियों को संभालो।"

"ओके गॉडफादर।" जैकाल सम्मानपूर्वक सिर झुकाकर वहां से चला गया।

□□□

गोवा अंडरवर्ल्ड पूरी तरह कुरुक्षेत्र का मैदान बना हुआ था।

शाम हो गई थी गैंगवार होते हुए।

उस गैंगवार में सिंडिकेट को इतना नुकसान नहीं हुआ, जितना बाबू नाईक को नुकसान उठाना पड़ा।

बाबू नाईक के अस्सी प्रतिशत अड्डे या तो तबाह हो चुके थे या फिर उन पर पूरी तरह सिंडिकेट का कब्जा हो चुका था।

शंकरराव के जो डेढ़ सौ ब्राथेल थे, वह भी अब पूरी तरह सिंडिकेट के कब्जे में थे।

बाबू नाईक के दर्जनों गुंडे उस गैंगवार में मारे गए।

जो जिंदा बचे थे, वह भी अब घबराकर सिंडिकेट के सामने हथियार डालने लगे थे।

□□□

शाम के सात बजे का समय था, जब एक दादा दौड़ा-दौड़ा 'फाइनेंस कंपनी' के नीचे बने तहखाने में बाबू नाईक के पास पहुंचा ।

उस दादा का दहशत से बुरा हाल था ।

उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और रंग एकदम सफेद फक्क पड़ा हुआ था ।

"क्या बात है ?" बाबू नाईक भी उसे देखकर चौंका- "यूं पत्ते की तरह क्यों काँप रहा है ?"

"सब गड़बड़ हो गई नाईक साहब ।" वह दादा बेपनाह आतंकित स्वर में बोला- "हमारे ज्यादातर ठिकानों पर सिंडिकेट का कब्जा हो चुका है । हमारे आदमी भी अब अपनी जान बचाने के लिए सिंडिकेट के सामने हथियार डाल रहे हैं ।"

"सब साले हिजड़े हैं ।" बाबू नाईक गुस्से में भुनभुनाया- "सब साले नामर्द हैं ।"

"नाईक साहब ।" वह दादा शुष्क स्वर में ही बोला- "अब यह ठिकाना भी आपके लिए सुरक्षित नहीं रहा । सिंडिकेट के आदमी कभी भी यहां आक्रमण कर सकते हैं । फिर सिक्योरिटी का भी कोई पुख्ता बंदोबस्त यहां नहीं है ।"

"फिर मैं कहां जाऊं ?" बाबू नाईक के शरीर में झुरझुरी दौड़ी- "फिर मैं क्या करूं ?"

"मेरी राय है कि अगर आप अपनी जान बचाना चाहते हैं नाईक साहब तो गोवा छोड़कर ही फरार हो जाओ । अब आपके लिए गोवा में ऐसा कुछ नहीं बचा है, जो जिंदगी का रिस्क उठाकर यहां रहा जाए ।"

बख्तावर सिंह तहखाने का दरवाजा तोड़कर सीढ़ियां उतरता हुआ अकेला ही नीचे तहखाने में पहुंचा ।

बाबू नाईक उस समय दहशत से तहखाने के एक कोने में घुसा हुआ था और उसने अपने दोनों हाथों में रिवाल्वर पकड़ रखी थी ।

रिवाल्वर वही थी, जो बख्तावर सिंह ने रोशनलाल को दी थी ।

"आगे मत बढ़ना ।" बाबू नाईक, बख्तावर सिंह की तरफ रिवाल्वर तानता हुआ चीखा- "आगे बढ़ा तो गोली मार दूंगा । एक सेकंड की भी देर नहीं करूंगा ।"

बख्तावर सिंह मौत के दूत की तरह बेखौफ उसकी तरफ बढ़ता रहा ।

"रुक जाओ ।" बाबू नाईक पुनः चिल्लाया- "मैं सचमुच शूट कर दूंगा ।"

बख्तावर सिंह फिर भी न रुका ।

उसी पल बाबू नाईक ने धांय से एक गोली चलाई ।

बख्तावर सिंह तुरंत नीचे झुक गया । गोली उसके कंधे के पास से सरसराती हुई सामने दीवार में जाकर लगी थी और फिर बिना फटे गिर पड़ी ।

बाबू नाईक हतप्रभ सा गोली को देखने लगा ।

"तू पूरी तरह फंस चुका है नाईक ।" बख्तावर सिंह गुर्राया- "दरअसल अपने हाथ में तूने जो रिवाल्वर पकड़ी हुई है, वो रिवाल्वर ही तेरी मौत का कारण बनी है ।"

"क...क्या मतलब ?"

"यह वही रिवाल्वर है, जो मैंने रोशनलाल को दी थी ।"

"ह...हां ।" बाबू नाईक की गर्दन जल्दी से स्वीकृति में हिली- "हां, वही रिवाल्वर है ।"

“इस रिवाल्वर में नकली गोलियाँ हैं और इसके दस्ते में माइक्रोफोन फिट है नाईक। उसी माइक्रोफोन की बदौलत मुझे रोशनलाल और तेरी असलियत पता चली। उसी शक्तिशाली माइक्रोफोन की बदौलत मुझे यह पता चला कि तू यहां छिपा है।”

“न...नहीं।” बाबू नाईक के नेत्र दहशत से फटे- “ए...ऐसा नहीं हो सकता।”

“ऐसा ही हुआ है नाईक।” बख्तावर सिंह जहरीले स्वर में बोला- “रोशनलाल ने यह रिवाल्वर तुझे नहीं दी थी, बल्कि इस रिवाल्वर के रूप में तेरी मौत तुझे पकड़ाई थी। जिस रोशनलाल की बदौलत तूने इतना बड़ा खेल खेला, रोशनलाल आज मरने के बाद भी तेरी मौत का कारण बन गया।”

“त....तुम झूठ बोल रहे हो।” बाबू नाईक चिल्लाया- “इस रिवाल्वर में गोलियां हैं, असली गोलियां।”

“अगर असली गोलियां हैं तो अभी तेरे द्वारा चलाई गई गोली फटी क्यों नहीं ? उसमें से बारूद क्यों बाहर नहीं निकला ?”

बाबू नाईक की हालत अब और बुरी होने लगी थी।

उसके हाथ-पैर पत्ते की तरह कांप रहे थे। उत्तेजनावश वो दनादन रिवाल्वर का ट्रेगर दबाता चला गया।

तमाम गोलियां सामने दीवार में जाकर लगीं और फिर बिना फटे नीचे गिर पड़ीं।

बाबू नाईक को अब साक्षात मौत नजर आने लगी।

उसने एकाएक खाली रिवाल्वर बख्तावर सिंह के ऊपर खींचकर मारी तथा खुद बड़ी फुर्ती से सीढ़ियों की तरफ सरपट भागा।

लेकिन बख्तावर सिंह पहले ही सावधान था । उसने रिवाल्वर हवा में ही लपक ली और जितनी फुर्ती से बाबू नाईक ने वो रिवाल्वर उसके ऊपर खींच मारी थी, उससे कहीं ज्यादा अद्वितीय फुर्ती से उसने वो रिवाल्वर वापस बाबू नाईक के ऊपर खींचकर मारी ।

चीख पड़ा बाबू नाईक ।

रिवाल्वर का सेफ्टी लॉक सीधा उसके गंजे सिर में जा घुसा था ।

बाबू नाईक सेफ्टी लॉक निकाल पाता, उससे पहले ही बख्तावर सिंह ने उसे जाकर दबोच लिया और फिर धड़ाधड़ उसके शरीर पर इतनी बेदर्दी से लात-घूंसे बरसाए कि उसका बुरा हाल हो गया ।

बाबू नाईक की दर्दनाक चीखें तहखाने में गूंजने लगीं ।

कपड़े फट गए ।

जगह-जगह से खून निकलने लगा ।

“बहुत चालाक समझता था तू अपने आपको ?” बख्तावर सिंह उसके कपड़े पकड़कर झंझोड़ता हुआ चिल्लाया- “मुझे ब्लैकमेल करना चाहता था । बहुत बड़ा ख्वाब देख रहा था तू नाईक, सचमुच बहुत बड़ा ख्वाब देख रहा था । बता मेरी तस्वीरें कहां हैं ?”

बाबू नाईक उसे टुकुर-टुकुर देखने लगा ।

नाईक को खामोश देखकर बख्तावर सिंह ने धड़ाधड़ उसके मुंह पर तो प्रचंड झापड़ जड़े ।

हाथ की पांचों उंगलियां नाईक के गालों पर छप गयीं और वह पुनः भैंसे की तरह डकराया ।

बख्तावर सिंह ने अब रिवाल्वर निकाल ली थी ।

"जल्दी बोल नाईक ।" बख्तावर सिंह हिंसक स्वर में बोला- "जल्दी । मौत तेरे सिर पर खड़ी है । बता कहां हैं वो तस्वीरें ?"

"प...पंजिम वाले फ्लैट में हैं ।" बाबू नाईक के मुंह से भींची-भींची सी आवाज निकली ।

बख्तावर सिंह ने उसी पल बाबू नाईक के दोनों हाथ पीछे पीठ से बांध दिए और पैर भी बांध दिए ।

फिर बख्तावर सिंह, बाबू नाईक को किसी गठरी की तरह अपने कन्धों पर डालकर तहखाने से बाहर निकला ।

□□□

बुलेटप्रूफ कार पंजिम वाले फ्लैट के सामने जाकर रुकी थी ।

बाबू नाईक बंधा हुआ बख्तावर सिंह के पैरों के पास कार के पायदान पर पड़ा था ।

अब सिंडिकेट का कोई वाहन बख्तावर सिंह के साथ नहीं था ।

बख्तावर सिंह ने दोबारा बाबू नाईक को उठाकर अपने कंधे पर डाला और सीढ़ियां चढ़ता हुआ फ्लैट के सामने पहुंचा ।

फ़्लैट पर ताला झूल रहा था ।

बख्तावर सिंह ने रिवाल्वर निकालकर पीतल के ताले में गोली मारी तो उसकी किर्चियां चारों तरफ बिखर गयीं ।

फिर बख्तावर सिंह दरवाजा खोलकर फ्लैट के अंदर घुसा ।

"बता ।" बख्तावर सिंह कर्कश स्वर में बोला- "कहां है यहां पर तस्वीरें ?"

बाबू नाईक के जिस्म का इस समय रोआं-रोआं खड़ा था ।

उसका अंग-अंग कांप रहा था ।

"जल्दी बोल । देर करेगा तो जो मौत कुछ देर बाद आने वाली है, वह अभी आ जाएगी ।"

"उ...उस वार्डरोब में हैं तस्वीरें ।" बाबू नाईक ने एक वार्डरोब की तरफ इशारा किया ।

बख्तावर सिंह ने तुरंत वार्डरोब खोला ।

फ़ौरन तस्वीरें बरामद हो गयीं ।

"इनके नेगेटिव कहां हैं ?"

"म...मेरे काले कोट की दायीं जेब में हैं ।"

बख्तावर सिंह ने देखा कि वार्डरोब में बाबू नाईक का एक काला कोट हैंगर में लटका हुआ था । उसने काले कोट की दायीं जेब तलाशी तो उसमें से नेगेटिव भी बरामद हो गए ।

बख्तावर सिंह, नाईक को कंधे पर डाले-डाले फ़्लैट की सीढ़ियां उतरता चला गया ।

"त...तुम मुझे कहां ले जा रहे हो ?" बाबू नाईक के शरीर में झुरझुरी दौड़ी ।

"देखता जा नाईक ।" बख्तावर सिंह फुंफकारा- "तेरी मौत के लिए भी मैंने खास जगह चुनी है । ऐसी जगह, जिसे देखकर तेरी तबीयत खुश हो जाएगी ।"

बख्तावर सिंह ने उसे पुनः बुलेटप्रूफ कार के पायदान पर बेदर्दी से पटका था । खुद वापस ड्राइविंग सीट पर बैठा और फिर बुलेटप्रूफ कार दोबारा तेजी से अपने गंतव्य की तरफ दौड़ने लगी ।

□□□

बख्तावर सिंह उसे डोनापाला बीच के बंगले पर ले गया था।

इस समय बाबू नाईक बंधा हुआ ड्राइंग हाल के फर्श पर पड़ा था और वो आंखें फाड़-फाड़कर कभी बंगले को, तो कभी बख्तावर सिंह को देख रहा था।

"त...तुम मुझे यहां क्यों लाए हो ?"

"क्यों ?' बख्तावर सिंह क्रूरतापूर्ण ढंग से हंसा- "जगह पसंद नहीं आई तुझे । यह कोई मामूली बंगला नहीं है नाईक। डोनापाला बीच पर बना यह बंगला तुम दोस्तों की यादगार था । यह वही डोनापाला बीच है, जहां आज से दस साल पहले तुम तीनों दोस्त पहली बार मिले थे। उस वक्त तुम तीनों कंगले थे । लेकिन अपनी मजबूत दोस्ती की बदौलत तुम रातों रात करोड़पति बन बैठे और आज दस साल बाद लालच की आग में तूने दोस्ती की चिता जला डाली। आज तेरी चिता भी इसी बंगले में जलेगी नाईक। इसी बंगले में, जो कभी तुम्हारी दोस्ती का पवित्र ताजमहल था।"

"न....नहीं।" बाबू नाईक थर्रा उठा- "नहीं। म...मुझे मत मारो।"

तभी बख्तावर सिंह ड्राइंग हाल में ही रखा शराब का एक कैरेट उठाकर वहां ले आया।

फिर उसने शराब की एक बोतल खोली तथा सारी शराब बाबू नाईक के ऊपर बिखेर दी।

"य...यह क्या कर रहे हो ?" बाबू नाईक के शरीर में तेज झुरझुरी दौड़ी- "शराब क्यों छिड़क रहे हो मेरे ऊपर ?"

"मैंने तुझसे कहा था न कि मैं तेरी चिता को मैं अग्नि दूंगा। तेरी उस चिता को जलाने का इंतजाम कर रहा हूं।"

"न...नहीं ।" बाबू नाईक शुष्क स्वर में बोला- "मुझे ऐसी खौफनाक सजा मत दो । म...मुझे चाहे गोली मार दो । तुमने सिंडिकेट की तरफ से जारी पम्फलेट में लिखा था कि मेरी गोली मारकर हत्या की जाएगी ।"

"घबरा मत ।" बख्तावर सिंह ने शराब की एक और बोतल खोल ली- "बख्तावर सिंह अपनी जबान का पक्का इंसान है । तू मरेगा गोली से ही लेकिन उससे पहले तू ऐसा तड़पेगा कि मौत का दर्द भी भूल जाएगा ।"

फिर बख्तावर सिंह ने दूसरी बोतल की सारी शराब भी बाबू नाईक के शरीर पर बिखेर दी ।

"अपनी जिंदगी में तूने इस शराब का बहुत मजा लिया है ।" बख्तावर सिंह बोला- "लेकिन आज तू वास्तव में इस शराब का असली मजा चखेगा ।"

"न...नहीं...न..नहीं गॉडफादर ।"

एक के बाद एक बख्तावर सिंह बोतल खोलता चला गया तथा उनकी शराब बाबू नाईक के शरीर पर उड़ेलता रहा ।

बाबू नाईक पूरी तरह शराब में भीग गया ।

"आज अंजली का प्रतिशोध पूरा होगा नाईक !" बख्तावर सिंह पुन: गुर्रा उठा- "आज एक ऐसी बेबस लड़की का प्रतिशोध पूरा होगा, जो बेबस थी, अकेली थी, सताई हुई थी । वो खुद कुछ नहीं कर सकती थी लेकिन बदला चाहती थी । उसके अंदर प्रतिशोध की प्रचंड ज्वाला धधक रही थी नाईक और बदले की आग को जन्म दिया तुमने ।"

बाबू नाईक थर-थर कांपता रहा ।

अंततः बख्तावर सिंह ने रिवाल्वर निकाली थी और फिर धांय-धांय कई फायर बाबू नाईक के ऊपर किये ।

लेकिन उसके शरीर से आग की लपटें निरंतर उठती रही थीं ।

बख्तावर सिंह पाइप पीता हुआ बंगले से बाहर निकला । उसके चेहरे पर उस समय इत्मीनान के भाव थे और यूं लग रहा था, जैसे वो किसी मामूली चींटी को मसलकर आ रहा हो ।

डोनापाला बीच पर अब चारों तरफ शांति था ।

खूबसूरत डोनापाला बीच रात की उस नीरवता में और भी सुखद और शांत लग रहा था ।

बीच पर कहीं दूर ट्रम्पेट अभी भी कोई बजा रहा था । लेकिन अब ट्रम्पेट की उस धुन में बोझिलता नहीं थी ।

उत्साह था ।

जोश था ।

आनंद था ।

समाप्त